# तिब्बे नबी अकरम (स०)

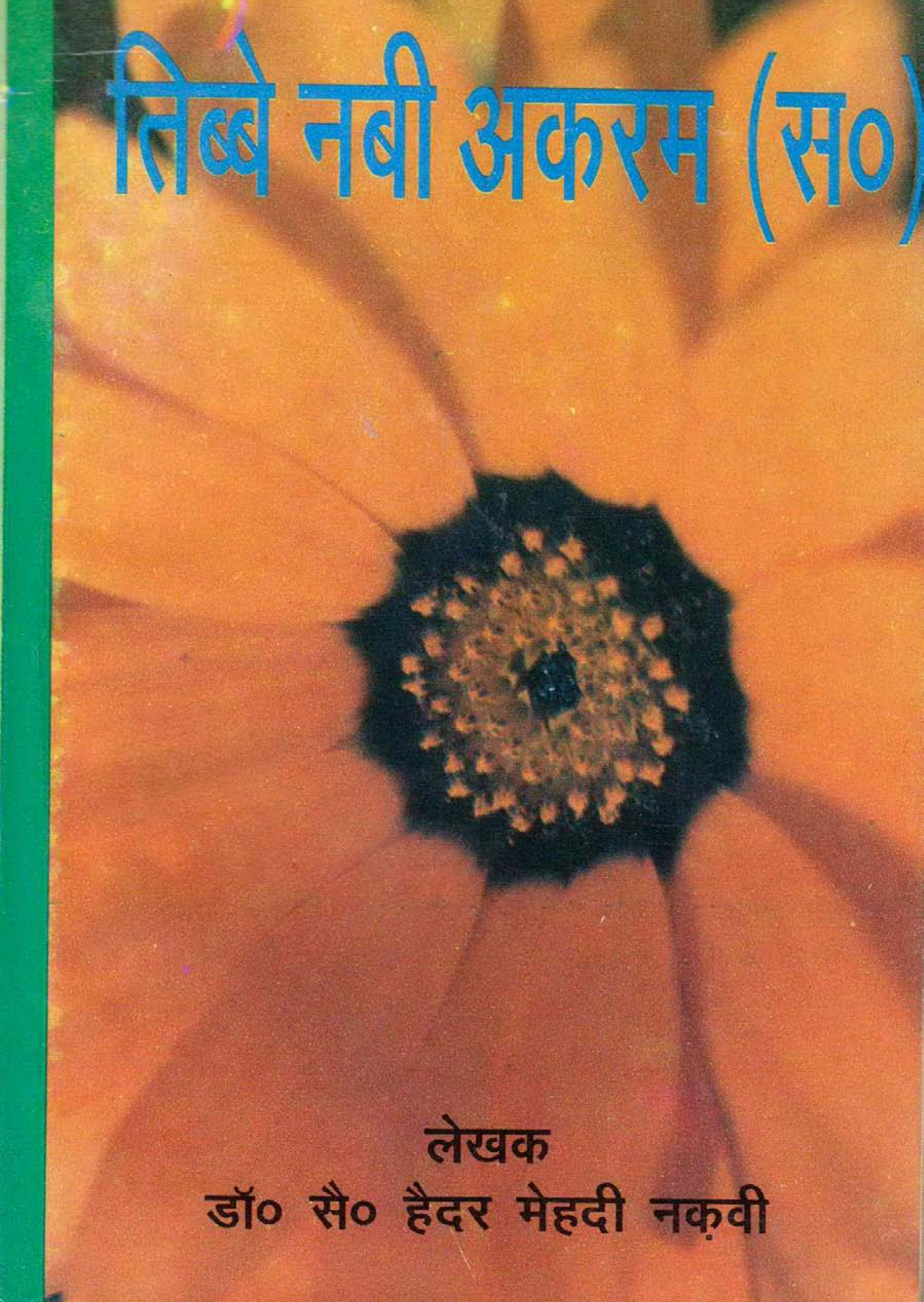

लेखक
डॉ० सै० हैदर मेहदी नक़वी

Presented by: https://jafrilibrary.com

www.bookshia.com
knowledge enlivens the soul

# तिब्बे नबी अकरम
## सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही वसल्लम

:मुरत्तब:
डाक्टर सय्यद हैदर महदी नक़वी

:मुक़द्दमा व नज़रे सानी:
मौलाना सय्यद तलमीज़ हसनैन रिज़वी

:नाशिर:
अब्बास बुक एजेन्सी
दरगाह हज़रत अब्बास (अ०) रूस्तम नगर
लखनऊ -226003
☎-260756

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

www.bookshia.com
knowledge enlivens the soul

तिब्बे नबी अकरम सल्लललाहो अलैहे व आलेही वसल्लम

मुरत्तब : डाक्टर सय्यद हैदर महदी नक़वी

मुक़द्दमा व नज़रे सानी : मौलाना सय्यद तलमीज़ हसनैन रिज़वी (एम० ए० गोल्ड मेडलिस्ट)

तर्जुमा {हिन्दी}: हसन ज़हीर

तबाअत : ए० बी० सी० आफ़सेट प्रेस दिल्ली

क़ीमत : 25/- {पच्चीस रूपये}

कवर डिज़ाइन: अब्बास हसनैन

कम्पयूटर कम्पोज़िंग
एण्ड
लेज़र टाइप सेटिंग

:हसन क्रिएशन्स:
शीशमहल, हुसैनाबाद, लखनऊ, ☎ नं०:-253565

:मिलने का पता:

अब्बास बुक एजेन्सी
दरगाह हज़रत अब्बास (अ०) रूस्तम नगर,
लखनऊ-3 ☎:-260756, 269598

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

www.bookshia.com
knowledge enlivens the soul

# फ़ेहरिस्ते मज़ामीन


| | | |
|---|---|---|
| 1- | इन्तेसाब | 4 |
| 2- | इज़हारे तास्सुर | 5 |
| 3- | पेश लफ़्ज़ | 6 |
| 4- | मुक़द्दमा | 11 |
| 5- | ख़ाना खाने के आदाब | 16 |
| 6- | ज़्यादा खाना खाने से इजतेनाब करो | 22 |
| 7- | बातों की हिफ़ाज़त | 26 |
| 8- | पानी | 29 |
| 9- | पानी पीने के आदाब | 30 |
| 10- | अमराज़ | 34 |
| 11- | अमराज़ का इलाज सुन्नत है | 41 |
| 12- | अमराज़े चशम का इलाज | 42 |
| 13- | अमराज़े क़ल्ब का इलाज | 47 |
| 14- | बवासीर व नख़रस का इलाज | 53 |
| 15- | बुख़ार का इलाज | 55 |
| 16- | दर्दे क़ौलन्ज का इलाज | 58 |
| 17- | नेमोनिया और पलोरीसी का इलाज | 59 |
| 18- | अरक़ुन्निसा | 62 |
| 19- | क़ब्ज़ का इलाज | 62 |
| 20- | अबवीया व अग़ज़ीया | 64 |
| 21- | अंगूर | 69 |
| 22- | अंजीर | 72 |
| 23- | बेही | 73 |
| 24- | ख़रबूज़ा | 74 |
| 25- | खजूर | 79 |
| 26- | फ़लों को खाना चाहिये | 80 |
| 27- | शहद | 81 |
| 28- | ज़ैतून | 89 |
| 29- | कद्दू | 91 |
| 30- | प्याज़ | 93 |
| 31- | बाज़ अमराज़ की ऐफ़ादियत | 94 |
| 32- | मुज़राते सेहत | 97 |
| 33- | अयादते मरीज़ | 98 |
| 34- | अन्नूशतरी | 100 |
| 35- | जिस्मे इन्सानी पर पत्थरों के असरात | 102 |
| 36- | अक़ीक़ | 105 |
| 37- | किताबियात | 112 |


Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

# इन्तेसाब

मैं अपनी इस सई नातमाम काविशे हक़ीर को फ़ख़्रे दोजहां, हादी कौनो मकां, रहबरे हर ज़मां, महबूबे यज़दानी, इफ़्तेख़ारे नवे इन्सानी, अदीमउलनज़ीर, महरे मुनीर, पैकरे लुत्फ़ अमीम, साहेबे ख़ुल्क़े अज़ीम, रूहे दोआलम, शाहे उमम, लतीफ़े पैहम, रसुले अकरम, दानाए सबल, मौलाए कुल, हुस्न अज़्ल, ख़त्मुल रुस्ल, सुरूरे अम्बीया, शफ़ीए रोज़े जज़ा, ख़ैरूल वरा, फ़ख़रे मौजूदात, सरवरे कायनात, सय्यदुल मुरसलीन, रहमतुल्लिआलामीन, ख़ातिमउननबीईन, हज़रत अहमद मुजत्तबा मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वा आलेही वस्सल्लम के हुज़ूर पेश करते हुए अर्ज़ गुज़ार हुँ कि आक़ाए दो जहां मुझे अपनी कम्माएगी और बेबज़ाअती का एतराफ़ है मैं ने अपनी टूटी फूटी तहरीर में आप ही के दर से चन्द मोतीयों को हासिल करके और उनको यकजा करके एक लड़ी में पिरो कर किताब की सूरत में बतौर हदिया पेश करने की कोशिश की है। आक़ाओ मौला इस नज़र को क़ुबूल व मक़बूल फ़रमाएं ताकि इस हक़ीर पुरतक़सीर की नजात उख़रवी का ज़रीया बन जाए।

**आसी पुर मासी**
**(सय्यद हैदर महदी)**



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

बिस्मिल्ला हिररहमानिररहीम

# इज़हारे तास्सुर

लाखों हमदो सताईश इस ज़ाते वाजिब उलवजूद के लिये जो दोनों जहानों का पालने वाला है और बेशुमार दूरूदो सलाम उसकी बरगुज़ीदा मख़लूक़ हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वा आलेही वस्सल्लम और उनकी ताहीर आल पर, नफ़रत उन लोगों के लिये है जिन्होंने एहसान करने वालों का बदला ज़ुल्म से दिया।

जनाब बरादर डाक्टर सैय्यद हैदर महदी साहब नक़वी मदज़िल्लहू ने मज़हबे हक़्क़ा की जो ख़िदमत क़लम से की है वह कोई ढकी-छुपी नहीं है बज़ाहिर छोटी किताबें हक़ीक़तन जामिअत से भरपुर अवाम व ख़वास के सामने पेश करके अल्लाह ताआला व मोहम्मद व आले मोहम्मद से माजूर हुए इसी सिलसिले की एक कड़ी बनाम तिब्बे नबी अकरम आपके सामने पेशे ख़िदमत है जिसमें डाक्टर साहब मौसूफ़ ने अशयाए ख़ुरदो नोश के फ़वाएद बज़रिए अहादीसे नबी अकरम तफ़सीलन सफ़्हा क़िरतास पर रक़म करके बनीनो इन्सान पर एहसान फ़रमाया है, ख़ुदाये लम यज़िल मोअल्लिफ़ मौसूफ़ को अपने मक़सद में कामयाब फ़रमाए और मज़हबे हक़्क़ा की ज़्यादा से ज़्यादा ख़िदमत करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन या रब्बुल आलामीन

**वस्सलाम हक़ीर**

**(ख़तीबे अहलेबैत)**

**मौलाना गुलाम रज़ा रिज़वी, झंग सदर (पंजाब)**



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

# पेश लफ़्ज़

ख़ुदा वन्दे बुज़ुर्ग व बरतर का लाख-लाख शुक्र है कि मेरी मुरत्तब करदा किताब "तिब्बे इमामे रज़ा अलैहिस्सलाम" को इतनी मक़बूलियत हासिल हुयी कि इतने क़लील अरसे में इसके तीन एडीशन तबा हुए और फ़रोख़्त हो गये। 'और चौथा एडीशन अब ज़ेरे तबाअत है' मेरी किताब से पहले भी तिब्बे इमामे रज़ा के कई तर्जुमे तबा हो चुके हैं। मगर उनको वह शोहरत व मक़बूलियत हासिल न हो सकी जो अपने वतने अज़ीज़ और ग़ैर मोमालिक में इस हक़ीर की मुरत्तब करदा किताब को मिली अतिब्बा हज़रात व ओलामाए कराम ने इस को बड़ी क़द्र और मेरी काविशों को सराहते हुए मेरी हौसला अफ़ज़ाई फ़रमाई।

ख़ुदा वन्दे करीम के फ़ज़्ल व करम से "तिब्बे नबी अकरम" की जिल्द अव्वल पेशे ख़िदमत है और जिल्दे दोम ज़ेरे तरतीब है। जिल्दे अव्वल को मैंने हस्बे ज़ैल अबवाब में तक़सीम कर दिया है।

1- खाने पीने के आदाब।

2- अमराज़ का इलाज।

3- अदविया व अग़ज़िया।

4- बाज़ अमराज़ और उनकी अफ़ादियत।

5- मुज़मिरात सेहत।

मेरा इस किताब को मुरत्तब करने का मक़सद यह है कि आज के तरक़्क़ी याफ़्ता साइंसी दौर में जो तहक़ीक़ात व मुशाहेदात मन्ज़रे आम पर आ रहे हैं उन सब का सेहरा हम ग़ैर मुस्लिमों के सर बांध रहे हैं। हालांकि अगर हम बनज़रे ग़ारे कुतुबे इस्लामी का मुतालेआ करें तो मालूम होता है कि जदीद तहक़ीक़ात जो हमारे सामने आज आ रही हैं उन का इनकेशाफ़ तो चौदह सौ साल पहले हज़रत मो० व आले मो० (अ०) ने कर दिया था। इस दौर के लोगों ने इस पर ज़्यादा ग़ौरो फ़िक्र नहीं किया। जैसे-जैसे दुनियां



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

तरक़्क़ी करती गयी साइंस भी तरक़्क़ी की मंज़िलें तय करती चली आ रही है और कुछ बातें अब हमारी समझ में आने लगीं हैं। और कुछ ऐसी हैं की अब तक उन की तहक़ीक़ तक नहीं पहोंचे और न हमने इस तरक़्क़ी याफ़्ता दौर में उन इनकेशाफ़ात पर तहक़ीक़ करने की सई व कोशिश की, और जो ग़ैर मुस्लिमों ने तहक़ीक़ात की हैं उन को तसलीम करते चले आ रहे हैं, हादी बरहक़ और उन के औसिया ने उन तमाम उमूर का इज़हार कर दिया है जो आज सामने आ रहे हैं ख़्वाह वह इलाज व अमराज़ से मुताल्लिक़ हों ख़्वाह वह चांद सितारों से मुताल्लिक़ हों। ज़रूरत थी तहक़ीक़ो ग़ौरो फ़िक्र कि। क़ौल हज़रत पैग़मबर अकरम हो रहा है कि।

"अल्लाह वह है कि जिसने बीमारी को भी उतारा और शफ़ा को भी नाज़िल किया"

दूसरे मक़ाम पर इरशाद हो रहा है "कि ख़ुदा वन्दे आलम ने हर बीमारी कि दवा पैदा किया है सवाए मौत के"

आँ हज़रत ने उन दोनों अहादिस को ब्यान फ़रमा कर साहेबाने इल्मो फ़हम व बसीरत को तहक़ीक़ात की राहे मुस्तक़ीम दिखला दी देखो कोई मरज़ ला इलाज नहीं है। ख़ुदा वन्दे करीम ने हर मरज़ की दवा को नाज़िल किया है। ज़रा ग़ौरो फ़िक्र करो तहक़ीक़ करो। चुनान्चे ये बात रोज़ मर्रा के मुशाहेदात में है कि आज से एक सौ साल पहले जिन अमराज़ को लाइलाज और भयानक व मूज़ी तस्व्वुर किया जाता था वह अब क़ाबिले इलाज हैं। और उनके मरज़ के लिये अदवीया इजाद हो गयी हैं और मज़ीद तहक़ीक़ात हो रही हैं (और कैंसर जैसे मूज़ी मरज़ पर क़ाबू पाने कि कोशिश जारी है) और हुज़ूरे अकरम के दहने मुबारक से निकले हुवे कलमात की आज की जदीद साइंस मुहरे तसदीक़ सब्त कर रही है कि ख़ुदा ने हर मरज़ की दवा को पैदा किया है।

"हज़रत पैग़मबर ने आज से चौदह सौ साल पहले यह इरशाद फ़रमा कर"



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

"रात को कूड़ा कर-कट अपने घर में न रहने दो क्योंकि वहां शैतान का मक़ाम होता है"

कूड़े कर-कट से पैदा होने वाले जरासीम की निशान देही फ़रमा दी। जदीद ख़ूरदबीनों और जदीद आलात के ज़रीए जो तहक़ीक़ात की गयी तो नतीजा सामने आया की सब से ज़्यादा बीमारीयां कूड़े कर-कट और गन्दगी से पैदा होती हैं। क्योंकि जरासीम की सबसे बड़ी आमाजगाह कूड़ा कर-कट और गन्दगी के ढ़ेर होते हैं।

आज के साइंस दान चांद की मंज़िल तय कर रहे हैं और चांद से मुताल्लिक़ नित नई तहक़ीक़ात सामने आ रही हैं। आँ हज़रत अलैहिस्सलाम के हक़ीक़ी जांनशीन हज़रत अली ने आज से चौदह सौ बरस पहले चांद और सूरज की मसाफ़त और फ़ासला, अहाता, तूल व अर्ज़ के बारे में ये इनकेशाफ़ फ़रमा दिया कि चांद का मुहीत कितना है और सूरज का अहाता कितना है और सूरज की ज़मीन से मसाफ़त कितनी है और फ़ासला कितना है मुलाहेज़ा हो।

हज़रत अली करमल्लाहो वजहु से एक शख़्स ने चान्द के मोहीत के मुताल्लिक़ सवाल किया तो आपने फ़रमाया "चालीस फ़रसख़ को चालीस फ़रसख़ से ज़रब दो हासिल ज़रब चान्द का मोहीत है" एक फ़रसख़ तक़रीबन साढ़े तीन मील के बराबर होता है।

40 x 40 = 1600 फरसख़

फरसख़ 1600 = 5600 मील

एक शामी ने हज़रत अली करमल्लाहो वजहु से सूरज के तुलो अरज़ के बारे में सवाल किया तो आपने फ़रमाया।

फ़रसख़ = 900 x 900 फ़रसख़

यानी नौ सौ फ़रसख़ को नौ सौ फ़रसख़ से ज़रब दो जो हासिल ज़रब होगा वही सुरज का तुलो अरज़ है।

यानी 900 x 900 = 810000 फ़रसख़



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

यानी एक फरसख़ = 3 मील = 7 मील

यानी 810000 फरसख़ = 7 x 405000

810000 = 2835000 मील

हज़रत अली करमल्लाहो वजहु से एक शख़्स ने सूरज की मसाफ़त दरयाफ़्त की तो आपने फ़रमाया-मुलाहेज़ा हो।

"कि घोड़े की पांच सौ बरस की मसाफ़त जितनी सूरज की मसाफ़त है" अरबी घोड़े की औसत रफ़्तार 22 मील फ़ी घन्टा है इस लेहाज़ से मुन्दर्जा ज़ैल मससाफ़त हासिल होती है।

एक दिन और रात की मसाफ़त 22 x 24 = 528

एक माह की मसाफ़त 528 x 30 = 15840

एक साल की मसाफ़त 15840 x 12 = 190080

पांच सौ साल की मसाफ़त 190080 x 500 = 95040000

यानी ज़मीन और सूरज का दरमियानी फ़ासला 95040000 मील है और मौजूदा दौर ने जो फ़ासला बताया है वह इस फ़ासले के क़रीब तर है।

अमीरूल मोमनीन हज़रत अली इब्ने अबी तालिब ने ये इनकेशाफ़ात आज से चौदह सौ साल पहले बग़ैर किसी मशीनी आलात व कम्पुयटर के किये थे, आज की साइंस ने तरह-तरह के मशीनी आलात और कम्पुयटर के ज़रीये मालुमात फ़राहम की हैं और चांद व सूरज पर तहक़ीक़ात कर रही है अगर आज के साहेबाने इल्म व दानिश व माहरीने इरशादात नबी अकरम और अक़वाले आइम्मा एहलेबैत अलैहिस्सलाम पर ग़ौरो फ़िक्र व तहक़ीक़ व रीसर्च करें तो बहुत से पोशीदा राज़ ज़ाहिर हो जायें। मैं पहले ही अपनी बेबज़ाअती और कम्माएगी का तज़किरा कर चुका हूँ मैं ने इस किताब को एक नेक जज़्बे के तहत मुरत्तब किया है मैं अपनी कोशिशों में कहां तक कामयाब हुआ हूँ ये फ़ैसला क़ारेईन ख़ुद कर सकते हैं।

मै जनाब मौलाना सय्यद नासिर अब्बास क़िबला मुमताज़ुल्लाफ़ाज़िल और जनाब मौलाना सय्यद तलमीज़ हसनैन रिज़वी साहब (फ़ाज़िल मशरिक़यात)



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

(एम-ए) का दिल की इन्तेहाई गहराइयों के साथ ममनून व मुताशक्किर हूँ। इन दोनों हज़रात ने अपनी गूनागूँ मसरूफ़ियात के बावजुद मेरी रांहनुमाई फ़रमाई और जनाब मौलाना तलमीज़ हसनैन साहब ने इस किताब का मुक़्ददमा भी तहरीर फ़रमा कर मेरी हिम्मत व हौसला अफ़ज़ाई फ़रमाई। मैं जनाब मौलाना सय्यद असदउल्लाह शाह काज़मी (एम-ए) का भी तहे दिल से ममनून हूँ कि उन्होंने इस किताब की तज़इन व तरतीब व तर्जुमा में मेरी दिल व जान से मदद व मुआवनत फ़रमाई। और बरादरम सय्यद ज़ाहिद हुसैन ज़ैदी का भी सिपास गुज़ार हूँ जिन्होंने मेरा हौसला पस्त न होने दिया।

आख़िर में साहेबाने इल्म हज़रात व ओलामाएकराम से मुलतमिस हूँ कि अगर कहीं कोई लग़ज़िश हुई हो तो मुझे हदफ़े तनक़ीद बनाने के बजाए बतौरे इस्लाह उन अग़लात पर मुत्तेला फ़रमाएं। बारगाहे रब्बुल इज़्ज़त में बदस्त दुआ हूँ कि वह मेरी सई हक़ीर को अपने प्यारे हबीब और उनकी आल के सदक़े में क़ुबूल व मक़बूल फ़रमाए। आमीन या रब्बुल आलमीन

**बन्दा आसी**

**सय्यद हैदर महदी**

**263 जी शाह फ़ैसल कालोनी हैदराबाद**



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

बिस्मिल्ला हिररहमानिररहीम

# मुक़द्दमा

*अल्हमदो लिल्लाहे रब्बिल आलामीन वस्सलातो वस्सलामो अला ख़ातेमुन नबीइन व आलेहिततइयेबिनत ताहेरिन*

ज़ेरे नज़र किताब "तिब्बे नबी अकरम सल्लललाहो वलैही वसल्लम" डाक्टर सय्यद हैदर महदी की काविशों और कोशिशों का समरा है। उन की ज़ात अब किसी ताअ्रुरूफ़ की मोहताज नहीं रही, उन की तस्नीफ़ करदा मुतादद्दिद किताबें- तिब्बे इमामे रज़ा, हयात हज़रत मासूमयेकुम हयात क़लन्दर, मोजिज़ात नबी अकरम, रूहे ग़म, पाकिस्तान के अलावा बैरूनी मोमालिक में भी शोहरत हासिल कर चुकी हैं। इन्सान फ़ानी है लेकिन इस के आसार क़लमी इस की हयात और ज़िन्दिगानी के ज़ामीन हैं।

डाक्टर हैदर महदी सई पैहम और मुसल्सल जददो जेहद पर यक़ीन रखते हैं वह राह तहक़ीक़ में अपनी बे बज़ाअती के बावजुद तग़ व दौ कर रहे हैं। अगर्चे उनके वसायल महदूद व मसायल ला महदूद हैं लेकिन फ़िर भी जज़्बे सादिक़ और सच्ची लगन उन्हें इस राह पर गामज़न किये हुए है।

यह बात मुसल्लम है कि ख़ुदा वन्दे आलम जिससे काम लेना चाहता है उसे तौफ़िक़ मिन जानिब अल्लाह करामत होती है और काम पाए तकमील तक पहुँच जाता है।

तिब एक मुस्तक़िल फ़न है और इल्म एक मख़सूस शोबा, इल्मुलअदयान के मुक़ाबले में भी अेहमीयत और मुस्तक़िल हैसियत रखता है। जब इन्सान को बीमारी लाहक़ हुई तो इस ने इलाज भी दरयाफ़्त कर लिया। और यूनान में यह फ़न तरक़्क़ी के मनाज़िल तय करता हुआ अरब की सरज़मीन पर पहुँचा। युनानी उलूमो फ़ुनून अरबी में मुन्तक़िल हुए और आख़िर कार मुसलमानों ने इस फ़न को बामे उरूज पर पहुँचा दिया।



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

वैसे तो बहुत से अतिब्बा और हुकमा ने इस राह में तहक़ीक़ व तदक़ीक़ का हक़ अदा किया लेकिन शैख़ अलरईस बू अली सीना को इसलिये इमतियाज़ हासिल है कि इस की तसनीफ़ करदा किताब "अलक़ानून" इल्मो इलाज का एक इंनसाइकलोपिडया है। जिसमें अपने ज़माने तक की तमाम क़दीम और जदीद मालुमात को निहायत क़ाबलियत के साथ यकजा कर दिया गया है। इस किताब में दस लाख अलफ़ाज़ हैं इसकी पांच ज़ख़ीम जिल्दें हैं। युरोप के तमाम मेडिकल कालेजों में तक़ीबन आठ सदी तक इस के तर्जुमे ज़ेरे तदरीस रहे हैं।

हुज़ूरे अकरम की ज़ाते गिरामी क़द मम्बए इल्म और सर चश्माए हिदायत है आप सर चशमए किताब व हिकमत थे कि आप मालिक थे आप इल्म की सन्द और *रब्बे ज़िदनी इल्मा* आपके ताबे इल्म की रौशन दलील है। *अना मदीनतुल इल्म* आपका मशहूर क़ौल है।

आपके आमाल, अफ़आल, और अक़वाल अहादीस की कुतुब में मुनज़बत और मौजूद हैं शमाएल और ख़सायल की किताबें आँहज़रत की हयाते तय्यबा के हर लम्हे हर साअत और हर पल को अपने दामन में महफ़ुज़ किये हुए हैं' हयात के हर गोशे और ज़िन्दगी के हर पहलू में आपका उसवये-हस्ना इन्सानों बिल ख़ुसूस मुसल्मानों के लिये मशअले राह है।

*"लक़द काना लकुम फ़ी रसुल्लिाहे उसवतुल हसाना"*

तिब के मौज़ूं पर आँहज़रत और आइम्माए किराम से लातादाद रवायात अहादीस की किताबों में मौजूद है।

ओलामा और मोहक़्क़ेक़ीन ने इस मौज़ूं पर चन्द किताबें तहरीर की हैं। हुज़ूरे अकरम सल्ललाहो अलैही वसल्लम के फ़रमूदात और इरशादात जो तिब से मुताल्लिक़ थे इस ज़िम्न में मुतादद्दिद रसाएल और कुतुबे ज़ेवर तहरीर से आरास्ता हुईं।

अबुल अब्बास जाफ़र बिन मोहम्मद समर क़न्दी अलमारूफ़ बहमस्ताफ़री मतूफ़ी 402 हिजरी ने 140 अहादीस पर मुशतमिल एक रिसाला मौसूमब



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

"तिब्बुल नबी" तहरीर किया है। इस के अलावा दर्ज-ज़ैल किताबें भी शाया और ज़ाया हैं। (1) तिब्बे इमामुल सादिक़ (2) तिब्बुल रज़ा (3) तिब्बुल मासूमीन (4) तिब्बुल आइम्मा

तिब्बुल नबी दवाओं तशख़ीस अमराज़ या नब्ज़ शनासी की किताब नहीं बल्कि एक नुसख़ये किमया है' पन्दो मोआज़त का एक मुरक़्क़ा या मुख़तलिफ़ अशया से मुताल्लिक़ सवालों और इसतेफ़सारात के जवाबात हैं। नबी अकरम ख़ुल्के अज़ीम के मालिक थे *इन्नका लाअला ख़ुलक़िन अज़ीम* इस पर शाहिद और *इन्नमा बोइस्तो लेओतिम्मा मकारमल एख़लाक़* इस अमर का एतेराफ़ है, आँ हज़रत ने हयाते इन्सानी के आदाब को मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ में ब्यान फ़रमाया है और अख़्लाक़ी क़द्रों की वज़ाहत फ़रमाई है।

# ख़्साएस किताब

(1) ज़ेरे नज़र किताब में माकूलात, मशरूबात और मलबूसात के आदाब हैं। आदाब नज़ाफ़त व तहारत हैं। फूलों के ख़्वास से बहस की गयी है, आदाबे माशरत और आदाबे मूबाशरत भी ब्यान किये गये हैं। सब्ज़ीयों के इस्तेमाल और इसके फ़वायद का तज़किरा भी इस किताब में मौजूद है।

(2) किताब मज़कूर में जो अहादीस ब्यान की गयी हैं उनकी असनाद बसबब तवालत हज़्फ़ कर दी गयी हैं।

(3) ओलामा किराम ने इस नौवईत की अहादीस को दूसरे दरजे पर रकखा है इस किताब में दर्ज शुदा अहादीस में दोनों तरह की अहादीस मरकूम हैं, सही अलसनद और ज़ईफ़ अलअसनाद भी, ऐसी अहादीस में सिर्फ़ शोहरत को मलहूज़ रकखा गया है।

(4) अल्लामा मजलिसी और शैख़ सदूक़ अलैहिररहमा ने तिब से मुताल्लिक़ अहादीस व रवायात की यह तावील की है की उन अहादीस का ताल्लुक़ अक्सरीयत के मिज़ाज और मुल्कों के तबयी हालात से है। हर इन्सान का मिज़ाज दूसरे इन्सान से मुख़्तलिफ़ होता है, इस एतेबार से ग़ेज़ाओं और



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

फूलों के असारात भी मुख़्तलिफ़ हो जायेंगे।

(5) इस किताब में ब्यान करदा अक्सर अहादीस, हदीस की मशहुर और मुतदावुल किताबों में दर्ज हैं।

ईलाज के बारे में नबी अकरम ने फ़रमाया है,

*तदउ फ़ाइन्नल्लाहा अज़्व्वजल लम यनज़ल दा अन इल्ला व ना ज़ाल लह शिफ़ा*

(मकारमुल एख़लाक़ तबरसी 362)

तुम इलाज करो क्योंकि अल्लाहताला ने कोई ऐसी बीमारी नहीं उतारी जिस का ईलाज न हो, कुराने हकीम में मुख़्तलिफ़ फूलों और मेवों का ज़िक्र मौजूद है।

1- *या अय्योहल लज़ीना आमानु कूलू मिन तय्येबते मारज़ख़नाकूम वशकूरूल्लाह* (बक़र 1725)

2- *या यय्योहन नास कूलू मिम्मा फिल अरज़े हलालन तय्येबन* (बक़रहू 168)

3- *युम्बेतू लकूम बेही अज़्ज़रआ वज़ैतूना वन्नख़ीला वल आनाबा व मिन कूल्लिस समावात* (अलनहल 11)

4- *वत्तीने वज़्ज़ैतून* (अलतीन 1)

5- *फ़िहा फ़कीहतुन व नख़लुन व रूम्मानुन* (अलरहमान 68)

तिब्बुल नबी में पाक और हलाल चीज़ों को खाने का हुक्म दिया गया है। और मुख़्तलिफ़ फूलों के ख़्वास ब्यान किये गये हैं मसलन खजूर, अनार, सेब वग़ैरह कुरान मजीद के सुरह अलनहल में शहद का ब्यान है।

तिब्बुल नबी में (अस्ल) शहद के बारे में मुख़्तलिफ़ रवायात हैं।

1- *मन आरादल हफ़ीज़ फ़या कूलुल्ल अस्ल*

जो अपने हाफ़ज़े को बढ़ाना चाहता हो उसे चाहिये कि शहद खाये।

शहद बेहतरीन मशरूब है दिल को महफ़ूज़ रखता है और सीने की ठन्डक को दूर कर देता है।



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

सूरए बक़रह में सब्ज़ीयों और दाल का ब्यान है, (बक़रह 61)

नबी अकरम ने (सोम) लहसुन के बारे में फ़रमाया है। (बेहारूल अनवार)

तुम लहसुन खाओ क्योंकी वह सत्तर बीमारीयों के लिये शफ़ा है।

हज़रत ईसा की विलादत के बाद हज़रत मरीयम को हुक्मे इलाही हुआ (मरीयम 25)

और पैग़म्बर अकरम ने रूतब (ताज़ा खजूर) कि फ़ज़ीलत ब्यान करते हुए फ़रमाया,

जब किसी औरत के यहां विलादत हो तो उसे चाहिये कि वह मीठी खजूर या छुआरे खाए क्योंकी अगर इससे बेहतर कोई और शय होती तो अल्लाहताला हज़रत ईसा की विलादत के वक़्त उसे हज़रत मरीयम को खिलाता"

ख़ुदा वन्दे आलम हमें तौफ़ीक़ करामत करे कि हम इस किताब से मुस्तफ़ीज़ हों और डाक्टर हैदर महदी साहब जल्द अज़ जल्द इस की दूसरी जिल्द की इशाअत से अपने क़ारेइन को मुस्ताफ़िज़ फ़रमाएं।

**वस्सलाम अला मन अतबउलहुदा--**

**मौलाना सैय्यद तलमीज़ हसनैन रिज़वी--**

**एम० ए० फ़ाज़िल मशरिक़यात (अमरीका)**

★ ★ ★ ★ ★

★ ★ ★ ★

★ ★ ★

★ ★

★



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

# खाना खाने के आदाब

★ सुन्नत है कि खाना सुब्ह सवेरे खाएं-फ़िर दिन में कुछ न खाएं-एशां की नमाज़ के बाद दोबारा खाएं।

★ लुक़मा छोटा खाएं और अच्छी तरह से चबाएं- खाते वक़्त दूसरों का मुंह न देखें।

★ ज़्यादा गरम खाना न खायें और गरम खाने को ठन्डा करने के लिये फूंक न मारें बल्कि रहने दें उस वक़्त तक कि वह ठन्डा हो जाये उस के बाद खायें

★ सुन्नत है कि जो चीज़ खायें दाहिने हाथ से खायें और खाने से पहले और खाने के बाद हाथ धोना मसनून है।

★ सुन्नत है कि खाने से पहले जो हाथ धोए जाएं वह रूमाल से खुश्क न किये जाएं।

★ खाने के वक़्त दो ज़ानु बैठे कोई चीज़ लेट कर न खायें।

**(1) "खाने से क़ब्ल हाथ मुंह धोना फ़क्र को दूर करता है-और खाने के बाद हाथ मुंह धोना मोटापे को दूर करता है"**

सुन्नत नबी अकरम ये है कि खाने से पहले हाथ धोने के बाद किसी रूमाल, तौलिये, या कपड़े से हाथ खुश्क न किये जायें-अलबत्ता खाने के बाद हाथ धोकर किसी कपड़े, तौलिये या रूमाल से खुश्क कर लिये जायें-रूमाल, कपड़े, तौलिये में गर्दो गुबार का होना मुमकेनात में से है- खाने के लिये हाथ धोकर रूमाल या कपड़े या तौलिये से खुश्क कर लिये तो रूमाल या कपड़े या तौलिये के जरासीम आप के हाथ में लग जाएंगें और बाज़ ग़िज़ा में शामिल होकर मेदे में पहुँच कर यही जरासीम फ़साद बपा करेंगे। और अमराज़ मेदा, सूवे हज़म, हैज़ा, पेचिश को पैदा करेंगे। खाने से पहले मुंह हाथ धोने की हिदायत भी इसलिये है कि एक शख़्स बाहर से आया गरदो गुबार उसके चेहरे व मुंह पर है इससे भी जरासीम व गरदो गुबार मेदे में दाख़िल हो सकते हैं।



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

इसलिये बेहतर है कि खाने से क़ब्ल हाथ मुंह को धोया जाये। और कपड़े या तौलिये से खुश्क न किया जाये। यही अमल सेहते इन्सानी के लिये मुफ़ीद तर है और इसीलिये हज़रत नबी अकरम ने ये हिदायात फ़रमा कर उम्मत कि रहनुमाई फ़रमाई है कि खाने से क़ब्ल हाथ मुंह धोना चाहिये।

हदीसे मोत्तबर में हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ०) से मनकूल है कि खाना खाने से पहले जब हाथ धोया करो तो रूमाल से मत पोंछो क्योंकि जब तक हाथ में तरी रहती है। खाने में बरकत रहती है। ये भी फ़रमाया है कि खाने के बाद हाथ धोकर मुंह पर मल लेना चाहिये कि इससे चेहरे की झाइयां दूर हो जाती हैं और रोज़ी बढ़ती है।

हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ०) से मनकूल है कि खाने के बाद जब हाथ धोया करो तो गीले-गीले हाथ पपोटों पर फ़ेर लिया करो कि दर्दे चश्म से अमान मिले।

हदीसे हसन में मज़ाज़म से मनकूल है कि मैंने हज़रत इमाम मूसा काज़िम को देखा कि खाने के लिये जब हाथ धोते तो दस्तमाल (रूमाल) से खुश्क न फ़रमाते थे। हां खाने के बाद हाथ धोते थे तो खुश्क कर लेते थे। हज़रत इमामे रज़ा (अ०) से मनकूल है कि जब हज़रत रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहे व आले वसल्लम खाने के बाद हाथ धोते थे तो कुल्लियां भी कर लिया करते थे।

**(2) "जब भूक लगे तो खाना शुरू करो और अभी कुछ भूक बाक़ी हो तो खाने से हाथ रोक लो"**

ये एक ऐसा ज़र्री उसूल है कि अगर इस पर अमल पैरा हुआ जाए तो इन्सान जुमला बीमारीयों से महफ़ूज़ रह सकता है।

*हलयतह अलमतक़ीन* में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से मनकूल है कि आप ने फ़रमाया ऐ बनी इसराइल जब तुमको भूक न लगे कुछ मत खाओ। क्योंकि अगर पेट भर कर खाओगे तो तुम्हारी गरदनें मोटी हो जाएंगी। तुम्हारे पहलू फ़रबा हो जायंगे और तुम अपने खुदा को भूल जाओगे।



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

हज़रत इमाम ज़ाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि सिवाए बोख़ार के जो अचानक भी हो जाता है-हर क़िस्म का दर्द और बीमारी ज़्याद खाने से होती है।

**(3) "मेदा हर बीमारी का घर है। परहेज़ हर दवा का नुख़्ताए आग़ाज़ है-तुम वही ग़िज़ा खाओ जो तुम्हारे मिज़ाज के मुताबिक़ हो"**

हर शख़्स मुख़तलिफ़ मिज़ाज का मालिक होता है और हर ग़िज़ा क अपना मिज़ाज होता है। अगर ग़िज़ा इन्सान के मिज़ाज से हमआहंग न होतो बीमारीयां जन्म लेती हैं। आक़िलों ने कहा है कि परहेज़ इलाज से बेहतर है मेदा हर बीमारी का घर है। अगर एक इन्सान वह ग़िज़ा खाए' पिये जो अपनी किमीयाई ख़ासियत के लिहाज़ से इस की अपनी तबियत व मिज़ाज के मुताबिक़ न हो तो मेदा के निज़ाम को दरहम बरहम कर देती है। इसी तरह कोई शख़्स किसी दावत् में शिर्कत करने जाए और वहां उम्दा क़िस्म के खाने मौजूद हों और वह ख़ूब डट कर खाए तो लामोहाला वह बदहज़मी में मुबतिला होगा ज़्यादा खाने से भी अक्सर अमराज़ पैदा होते हैं ज़िसका तफ़सीली ज़िक्र आइन्दा सफ़हात में किया जाएगा। इस लिए परहेज़ करना ज़रूरी है और ग़िज़ा वही इस्तेमाल करना चाहिए जो तबियत व मिज़ाज के मुताबिक़ हो।

**(4) "दो क़िस्म के अफ़राद हमेशा मर्ज़ में मुबतिला रहेंगे (1) वह तन्दरूस्त जो ग़िज़ा से परहेज़ करे (2) और वह बीमार जो ग़िज़ा से परहेज़ न करे"**

एक तन्दरूस्त इन्सान अगर मुतवाज़िन ग़िज़ा नहीं खाएगा तो मुख़्तलिफ़ अमराज़ में मुब्तिला हो जाएगा। और मरीज़ अगर ग़िज़ायें खाता रहेगा और परहेज़ न करेगा तो वह भी बीमारी में गिरफ़्तार रहेगा। मिसाल के तौर पर तन्दरूस्त व तवाना इन्सान जिस की ख़ुराक एक वक़्त में चार रोटीयां और दीगर फ़ल फ्रुट भी हों और सिर्फ़ एक रोटी खाना शुरू करदे बग़ैर किसी मर्ज़ के तो वह यक़ीन्न कई अमराज़ में मुब्तिला हो जाएगा। ऐसे ही अगर एक शख़्स को मियादी बुख़ार हो और इसकी रोटी मंज़ की वजह से तबीब ने बन्द



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

कर दी हो और परहेज़ को ख़ातिर में न लाए और बदपरहेज़ी करे तो इसको कई अमराज़ पैदा हो सकते हैं अगर इसने रोटी खाई है तो इसको पेचिश भी हो सकती है और बर्फ़ या आईसक्रीम खाई है तो गले के अमराज़ भी पैदा हो सकते हैं।

**(5) "खाना ठन्डा करके खाओ इस लिए कि गरम खाने से बरकत और वुसते रिज़्क़ ख़त्म हो जाती है"**

गरम-गरम खाना खाने से इन्सान के मेदे को नुक़सान पहुँचता है क्योंकि गरम खाने का चबाना मुमकिन नहीं। इसलिए लुक़्मे रूतूबत से आरी होते हैं और सही तौर पर हज़्म भी नहीं हो पाते। गरम-गरम खाना खाने से मुंह में छाले पड़ जाते हैं गरम-गरम खाना खाने वाले अफ़राद के दांत जल्द ख़राब हो जाते हैं और जल्द ही गिर जाते हैं गरम-गरम खाने से खाना भी ज़्यादा खाया जाता है जो बीमारी का पेश ख़ेमा साबित होता है और वसअते रिज़्क़ में भी कमी वाक़े हो जाती है।

**(6) "गरम-गरम खाना बरकत को ख़त्म कर देता है लेहाज़ा इसे ठन्डा करके खाना चाहिए"**

गरम-गरम खाना खाने से होंट मुंह हल्क़ ज़बान को नुक़सान के अलावा दातों की चमक दमक भी ख़त्त हो जाती है। गरम-गरम खाना मेदे के लिए भी मुज़िर है और दातों के लिए भी नुक़सान देह है। लेहाज़ा गरम-गरम खाना नहीं खाना चाहिए बल्कि ज़रा इतमिनान से ठन्डा करके खाना चाहिए।

हज़रत अमीरूल मोमनीन अली इब्ने अबी तालिब से मनकूल है कि गरम खाने को ठन्डा होने दिया करो। क्योकि रसुले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे वआलेवसल्लम के पास जब गरम खाना लाया जाता था तो आँ हज़रत फ़रमाया करते थे कि ठन्डा होने दो। ख़ुदा ताअला ने हमारा खाना आग नहीं बनाया है और ठन्डे खाने में बरकत होती है।

हदीसे मुवस्सिक़ में सुलैमान इब्ने ख़ालिद से मनकूल है कि गरमी के



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

मौसम में एक रात को मैं हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम कि ख़िदमत में हाज़िर हुआ' हज़रत के सामने गुलाम एक ख़्वान खाने का लाया जिस में कुछ रोटीयां थीं एक प्याला शरीद(1) का दूसरा गोशत का। हज़रत ने हाथ डाला और फ़ौरन खींच लिया। फ़िर इरशाद फ़रमाया "आतिशे जहन्नम से ख़ुदा कि पनाह मांगता हुँ इन्सान को इस गरमी की ताब नहीं तो आतिशे जहन्नम कि ताब क्यों कर होगी"। यही बात मुकरर्र फ़रमाते रहे यहां तक कि खाना खाने के लायक़ ठन्डा हो गया उस वक़्त तनावुल फ़रमाया। मैंने भी हज़रत के साथ खाना खाया।

हज़रत इमामे रज़ा अलैहिस्सलाम से मनकूल है कि गरम खाने में बरकत नहीं होती इस में शैतान भी हिस्सा लगा लेता है।

**(7) "खाना खाते वक़्त अपने जूते उतार दो क्योंकि इससे तुम्हारे पैरों को आराम व सुकून मयस्सर आएगा"**

अगर जूता पहन कर खाना खाया जाएगा तो जल्दी-जल्दी खाना खाना पड़ेगा और अदम इत्मीनान होगा और सही चबाया नहीं जाएगा तो सही तरीक़े से खाना हज़म नहीं होगा और खाना अच्छी तरह से हज़म नहीं होगा तो मेदे कि बीमारीयां पैदा होंगीं। जूता उतार कर खाना खाने में राहत व सुकून मिलेगा।

*हलीता अलमतक़ीन* में आँ हज़रत से मनकूल है कि जिस वक़्त खाना खाओ मोज़े और जूते पांव से निकाल लिया करो कि ये बहेतरीन सुन्नत है और तुम्हारे पांव के लिए मोजिब राहत।

★ जब भूक लगे तो खाना खाना चाहिए।

★ खाने में हर रोज़ एक ही क़िस्म कि ख़ुराक नहीं खाना चाहिए। बल्कि बदलते रहना चाहिए।

★ बासी और सड़ी हुई चीज़ों से परहेज़ करना चाहिए।

★ खाना लज़ीज़ व ख़ुश ज़ाएक़ा हो तो तबियत में इश्तेहा पैदा हो

(1) शरीद-एक क़िस्म का खाना जो रोटी के टुकड़ों को शोरबे में भिगो कर तैयार किया जाता है



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

जाती है इस इश्तेहा से मेदे में ख़ुराक को हज़्म करने वाली रूतूबतों कि मेक़दार में इज़ाफ़ा होता है। और ख़ुराक बहुत जल्द हज़्म हो जाती है।

★ खाना ज़ूद हज़्म होना चाहिए। सक़ील अशिया से परहेज़ करना चाहिए।

★ शाम का खाना जल्द खाना चाहिए ताकि सोते वक़्त मेदा ख़ुराक से पुर न हो। शाम का खाना खाते ही सोना नहीं चाहिए इससे ज़ोफ़े मेदा की शिकायत पैदा हो जाती है।

★ खाना आहिस्ता-आहिस्ता चबा कर खाना चाहिए। ताकि ख़ूराक के साथ लोआबे दहन अच्छी तरह शामिल हो जाए।

★ खाना ख़ामोशी और इत्मिनान के साथ खाना चाहिए।

★ खाना खाते वक़्त हश्शास बश्शश रहना चाहिए। परेशानी तफ़क्कुरात और गुस्से से भूक बन्द हो जाती है और चूंकि दौराने ख़ून का रूझान मेदे के बजाए दिमाग़ की तरफ़ होता है इसलिए जो कुछ खाया जाए वह फ़िर मुश्किल से हज़्म होता है।

गुज़श्ता सफ़्हात में भी गरम खाना खाने के नुक़सानात का तज़केरा किया जा चुका है। गरम खाना खाने से जो नुक़सानात होते हैं इस के लिए हज़रत पैग़म्बर अकरम का इरशादे गिरामी मुलाहेज़ा फ़रमाईऐ।

**(8) "तेज़ गरम खाना सात आफ़तें लाता है, हाफ़्ज़ा कमज़ोर होना, आबे दहन का कम होना, ज़ोफ़े बदन पैदा होना, समाअत का कमज़ोर होना, चेहरे का ज़र्द होना और बरकत का ज़ाएल होना"।**

हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का इरशादे गिरामी है कि पांच चीज़ों के खाने से हाफ़्ज़ा तेज़ होता है।

1- मिठास खाना।

2- मसूर कि दाल खाना।

3- जानवर कि गर्दन से क़रीब का गोश्त खाना।

4- ठन्ढ़ी रोटी खाना।

5- आयतल कुर्सी पढ़ना।



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

# ज़्यादा खाना खाने से इजतेनाब करो

(9) "तुम ज़्यादा खाना खाने से इजतेनाब करो क्योंकि इससे जिस्म फ़ासिद हो जाता है (आदमी) बीमार पड़ जाता है और इबादत में सुस्ती (काहिली) पैदा हो जाती है" हर चीज़ की ज़्यादती नुक़सान देह है। ज़्यादा खाना हिरस व हवस की निशानी है और मोजिब हलाकत है। ज़्यादा खाना खाने से कई बीमारीयां जन्म लेती हैं"

1- ज़्यादा खाने से जिस्म पर फ़ोड़े फुन्सीयां निकल आती हैं। और चरबी बढ़ जाती है जिससे जिस्म बेडौल हो जाता है। पेट बढ़ जाता है।

2- ज़्यादा खाना खाने वाले हज़रात बदहज़मी, डकार, इसहाल, रयाह, गैस जैसी तकालीफ़ में मुबतेला रहते हैं।

3- ज़्यादा खाने के सबब लबलबे की कारकरदिगी पर ज़्यादा असर पड़ता है जिस की वजह से (insulin) इनसुलीन नामी अन्दुरूनी रूतूबत कम हो जाती है ख़ून में शकर की मेक़दार बढ़ जाती है और मर्ज़ डाइवेटीज़ (पेशाब में शकर आना) पैदा हो जाता है और साथ-साथ बल्ड प्रेशर का आरज़ा भी लाहक़ हो जाता है।

4- ज़्यादा खाना खाने कि वजह से अमराज़े क़ल्ब भी पैदा हो जाते हैं क्योकि ज़्यादा खाने की वजह से शिरयानों में तंगी होती है जिससे ख़ून की गर्दिश में ख़ल्ल वाक़े हो जाता है और शिरयानों की तंगी जब शदीद कैफ़ियत में दिल की सम्त हो जाए तो दिल का दौरा पड़ जाना कुदरती अम्र है। और अगर ये कैफ़ियत दिमाग़ की सम्त जाए और दिमाग़ के किसी हिस्से में तारी हो तो इन्सान पर फ़ालिज गिर जाता है।

5- ज़्यादा खाना खाने से तबियत में सुस्ती, काहिली, गुनूदगी, और ख़ुमार पैदा होता है जिस की वजह से इबादात में तबियत मायल नहीं होती।



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

और इन्सान ख़ुदा की तरफ़ से ग़ाफ़िल हो जाता है और ये सब से बड़ा नुक़सान है।

**(10) "भरे पेट ग़िज़ा खाना बरस कि बीमारी को जन्म देता है"**

इस हदीसे मुबारका से ये भी मालूम हुआ कि भरे पेट खाना खाना बरस को पैदा करता है। भरे पेट से मक़सद ये हुआ कि एक आदमी ने पेट भर कर खाना खा लिया मगर उस की नियत नहीं भरी और फ़िर खाना खाना शुरू कर दिया तो ऐसे आदमी को बरस या कोई दूसरी तकालीफ़ हो सकती हैं और हादीए बरहक़ का इरशादे गिरामी बरहक़ है। इससे पेशतर ज़्यादा खाने से पैदा होने वाले अमराज़ का तज़किरा किया जा चुका है मज़ीद यह कि कम खाने से इन्सान चाक़ व चौबन्द रहता है और चेहरे पर निखार रहता है। पेट पर चरबी नहीं चढ़ती और मोटापे से महफ़ूज़ रहता है। कम खाने वाले जोड़ों के दर्दों और जोड़ों की बीमारीयों से महफ़ूज़ रहते हैं। ज़्यादा खाने से आज़ाए जिस्म अपना सही अमल छोड़ देते हैं जिससे इन्सान वक़्त से पहले लाग़र व ज़ईफ़ हो जाता है।

**(11) "जो ज़्यादा खाने पीने का आदी हो जाता है वह सख़्त दिल हो जाता है"**

ज़्यादा खाने पीने वाला ख़ुद ग़र्ज़ बेहिस और संग दिल हो जाता है। इस लिए कि उसे गरीबों, यतीमों, मोहताजों, मुसाफ़िरों, बेवाओं के हुक़ूक़ का क़तअन एहसास नहीं होता। और बेहिस व ग़ाफ़िल हो जाता है और अपने खाने पीने की फ़िक्र में पड़ा रहता है।

हज़रत अमीरल मोमीनीन अली इब्ने अबी तालिब अलैहिस्सलाम से मनक़ूल है कि जिस शख़्स को ये मन्ज़ूर हो कि उसे कोई खाना नुक़सान न पहुँचाए तो उसे लाज़िम है कि जब तक मेदा साफ़ न हो और ख़ूब भूक न लगे कुछ न खाया करे और जब शुरू करे तो बिस्मिल्लाह पढ़े खाना ख़ूब चबा कर खाए और थोड़ी भूक बाक़ी रहने पर हाथ खींच ले।

हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से मनक़ूल है कि आदमी



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

को चार वना चार इतना खाना तो खाना ही पड़ता है जिससे कुवत बाक़ी रहे। तो जिस वक़्त खाना खाए पेट के एक हिस्से को महले ताम क़रार दे। और दुसरा पानी के लिए रक्खे। तीसरा सासं लेने के लिए। और अपने जिस्म को मोटा करने की ऐसी कोशिश न करे जैसा कि ज़बीहे को मोटा करने की कोशिश कि जाती है। यह भी फ़रमाया कि जो शख़्स शिकम सेर होकर खाना खाएगा। वह सरकशी और फ़साद पैदा करेगा।

हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से मनकूल है कि जो शख़्स कोई खाना ज़्यादा खाए और फ़िर यह कहे कि मुझे खाने ने नुक़सान किया। वह कुफ़राने नेअमत करने वालों में शुमार किया जाएगा।

हज़रत इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम से मनकुल है कि अगर लोग खाना खाने के तरीक़े में मयानारवी अख़्तियार करें तो वह हमेशा तन्दुरस्त रहें।

अहादिसे रहमातुल्ललिल आलामीन और अक़वाले आइम्माए ताहेरीन से ये बात वाज़ेह है कि खाना ज़्यादा नहीं खाना चाहिए और न ही इतना कम खाना चाहिए कि जिस्म बिल्कुल लाग़र व नातवाँ हो जाए और ख़ाली मेदा भी रहना ठीक नहीं है। क्योंकि ख़ाली मेदा रहने से अलसर वग़ैरह पैदा हो जाता है। बाज़ लोगों को ये देखा गया है कि वह खाना वक़्त पर नहीं खाते और अपने दफ़्तरी और कारोबारी कामों में मुनहमिक व मशगुल रहते हैं और चाय नोशी व तम्बाकू नोशी कसरत से करते रहते हैं। ऐसे लोग अक्सर मेदे के अलसर में मुबतेला हो सकते हैं। या वरम मेदे का आरज़ा लाहक़ हो सकता है। मेदे के दूसरे अमराज़ भी हो सकते हैं। इसलिए खाना वक़्त पर खाना चाहिए। ये ब्यान किया जा चुका है कि ज़्यादा तर बीमारीयां मेदे की ख़राबी से पैदा होती हैं। और अतिब्बा व उक़ला के नज़दीक भी हर बीमारी की जड़ पुरख़ोरी और नासाज़गार ग़िज़ा का इस्तेमाल है। लेहाज़ा खाते वक़्त इस बात का भी ख़्याल रकखा जाए कि कौन सी ग़िज़ा मोवाफ़िक़ और कौन सी ग़िज़ा ना मोवाफ़िक़ यानी ख़िलाफ़े मिज़ाज है। मसअलन एक शख़्स को पुलाव खाने का बहुत शौक़ है मगर पुलाव खाने से इस का पेट फूल जाता है या अफ़ारा



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

हो जाता है। बाज़ मरीज़ों को मैंने देखा कि उन्होंने अपनी पसन्द कि चीज़ें खायीं लेकिन वह चीज़ें उनके मिज़ाज के मुताबिक़ नहीं थीं इस लिए उनकी तकलीफ़ में इज़ाफ़ा हो गया। अगर घर में कोई मरीज़ है तो इस की ग़िज़ा का ख़ास तौर से ख़्याल रखना चाहिए। क्योंकि मौज़ूं ग़िज़ा बड़ी बड़ी हद तक शिफ़ा याबी की राह में मम्दो मुवाविन साबित होती है। अगर मोआलिज ने किसी चीज़ को मना किया है तो इस्तेमाल न कराई जाए और न मरीज़ को कोई ग़िज़ा खाने पर मजबूर किया जाए। जब तक मरीज़ अपनी भूक का इज़हार न करे ग़िज़ा न दी जाए।

**(12) "अपने बीमारों को उनकी ख़्वाहिश के ख़िलाफ़ खाने पर मजबूर न करो क्योंकि उनको ख़ुदा खिलाता पिलाता है"**

मरीज़ को ग़िज़ा से परहेज़ करना इसकी तबियत की ख़िदमात में से बड़ी ख़िदमत है। तीमारदार को चाहिए कि मरीज़ की ग़िज़ा का ख़्याल रकखे' व मवादे फ़ासेदा जो जिस्म में जम कर मरज़ का बायस बना है वह न खाने की वजह से जल कर फ़ना हो जाए। ज़ोफ़े मेदा में ग़िज़ा हरगिज़ न पहुँचनी चाहिए' क्योंकि ग़िज़ा हज़्म न होने की वजह से जिस्म में सड़ कर मुख़्तलिफ़ मोहलिक अमराज़ नक़रस, सरतान वग़ैरह का सबब बनती है और अक्सर व बेश्तर अमराज़ बेइन्तेहा ग़िज़ा खाने से पैदा होते हैं। अक्सर देखा गया है कि जिन लोगों की तवील उमर होती है वह अक्सर परहेज़गार और कम ख़ूराक थे।

**(13) "बदन को अपनी आदी चीज़ों से कामयाब बनाओ"**

इन्सान उन मुफ़ीद चीज़ों में से भी जिन का वह आदी हो गया है इस्तेमाल करे इसलिए इन्सान अपनी ज़िन्दगी के कामों में से जिस चीज़ का आदी हो जाता है वह उसके लिए आसान तर हो जाती है इसलिए आदी ग़िज़ा इस के लिए आसान और ज़ूद हज़्म साबित होगी अगर ना साज़गार ग़िज़ाओं का आदी हो तो तरक करने कि कोशिश करें।



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

# दातों कि हिफ़ाज़त

**(14) "जो शख़्स ख़ेलाल और मिसवाक करता है वह दर्दे दांत के अज़ाब से महफ़ूज़ रहता है"**

दातों का सेहतमंद होना और अपने वज़ीफ़ाए हयात को जो कमाहक़्क़हु सरअंजाम देना इन्सानी जिस्म की तवानाई और नशो नुमा की तरफ़ पहला क़दम है। दांत अगर सही तौर पर ग़िज़ा चबाने के क़ाबिल नहीं होंगें तो इस का ख़मियाज़ा मेदे को भुगतना पड़ेगा जिस का नतीजा यह होगा कि मेदा ख़ुराक के हज़्म करने से क़ासिर रह जाएगा। और ग़ैर मुनहज़्म ग़िज़ा ख़ूने सालेह पैदा नहीं कर सकेगी। इस तरह जिस्म मुख़्तलिफ़ बीमारीयों की लपेट में आ जाएगा। मेदे की अक्सर बीमारीयां दांतों के साफ़ न करने और ख़ेलाल न करने की वजह से पैदा होती हैं। इसीलिए रहमातुललिलआलामीन ने मिसवाक करने को मुसतहब क़रार दिया है। और बायसे अजरो सवाब गरदाना है और इरशाद फ़रमाया है कि,

**(15) "मैं तुम्हें कसरत से मिसवाक करने कि ताकीद करता हूँ"**

अगर किसी इन्सान के दांत साफ़ नहीं हैं तो उसके मुंह से बदबू आती है और बदबू न भी आए तो दांतों पर पीलाहट साफ़ नज़र आती है। मुंह को साफ़ रखने का बड़ा ज़रीआ दांत है। अगर दांतों कि सफ़ाई न की जाए तो मुंह से शदीद बदबू आती है। हुज़ूरे ख़तमी मरतबत ने कसरत से मिसवाक करने का इरशाद फ़रमा कर उम्मत की रहनुमाई फ़रमा दी है कि देखो मिसवाक किया करो। मिसवाक करने से दांत साफ़ व शफ़्फ़ाफ़ रहते हैं। मुंह को पाकिज़ा करती है। मिसवाक दांतों की सफ़ाई का बेहतरीन ज़रीया है अगर दांतों को साफ़ न रकखा जाए तो मुंह से बदबू आती है। दांत गन्दे और बदनुमा मालूम होते हैं। गन्दा दहनी पैदा होती है। दांत अगर गन्दे हों या साफ़ न किए गए हों तो इसका असर मेदे पर पड़ता है। हाज़मा ख़राब हो जाता है। और कई बीमारीयों के पैदा होने का ख़तरा लाहक़ हो जाता है। हदीस में



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

कि आँ हज़रत हमेशा मिसवाक किया करते थे और फ़रमाते थे कि ये अमल गों की दुशवारी का बायस न होता तो मैं इसको वाजिब क़रार देता। ाहेज़ा हो इरशादे नबी अकरम

**(16) "अगर मुझे ये ख़्याल न होता कि ये अम्र मेरी उम्मत पर वार होगा तो मैं उन्हें हुक्म देता कि हर नमाज़ के लिए मिसवाक किया रो"**

मिसवाक के इस्तेमाल से आदमी दांतों के दर्द से महफ़ूज़ रहता है। र ज़नबूर की ज़द से बचा रहता है। मुंह से गन्दगी व कसाफ़त दूर होती । अल्लाह और उसके प्यारे हबीब की ख़ुशनूदी हासिल होती है जिसके लिए शादे नबी अकरम है'

**(17) "मिसवाक मुंह को पाकिज़ा करने वाली शय है और रब्बे रीम की ख़ुशनूदी हासिल करने का ज़रीया है"**

मालूम हुआ कि मिसवाक मुंह को पाको पाकिज़ा रखती है और ख़ुदा न्दे करीम कि ख़ुशनूदी भी हासिल होती है। मुंह भी साफ़ रहता है' और मिसवाक करने से आंखों में रौशनी और चमक पैदा होती है।

हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया कि मिसवाक के बारह फ़ायदे हैं (1) पैग़म्बरों की सुन्नत है (2) मुंह साफ़ करता (3) आंखों में रौशनी बढ़ती है (4) ख़ुदा की ख़ूशनूदी का बायस है (5) दफ़ाए लग़म है (6) हाफ़ज़ा तेज़ करता है (7) दांत सफ़ेद हो जाते हैं (8) नेक अमल ा सवाब कई गुना ज़्यादा होता है (9) दांतों की बोसीदगी और गिरना मौक़ूफ़ । जाता है (10) दांतों की जड़ें मज़बूत हो जाती हैं (11) भूक अच्छी और ज़्यादा गती है (12) फ़रिशते दांत साफ़ करने वालों से ज़्यादा ख़ुश रहते हैं।

हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ ने इरशाद फ़रमाया कि मिसवाक करने । आंखों कि रौशनी बढ़ती है। जो शख़्स मिसवाक करे उसे बाद में कुल्ली रूर करना चाहिए।

**(18) "खाने के बाद ख़ेलाल किया करो और फ़िर कुल्ली कर लो**



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

क्योंकि इस तरह दांत कि डाढ़ें ठीक-ठाक रहती हैं"

जो लोग खाना खाने के बाद ख़ेलाल नहीं करते और सुबह को मिसवाक नहीं करते वह अक्सर मेदे की बीमारीयों में मुबतेला रहते हैं। दांतों में ख़राबी इसलिए पैदा होती है क्योंकि बहुत से लोग खाना खाने के बाद ख़ेलाल नहीं करते जिस की वजह से दांतों के दरमयान में अजज़ाए ग़िज़ा रह जाते हैं जो बाद में ताफ़्फ़ुन पैदा करते हैं जिससे बाज़ के मसूढ़े भी फूल जाते हैं। यही मुताफ़न अजज़ा मेदे में जाकर मुख़तलिफ़ अमराज़ सोज़िश ओमआए, वरमे मेदा, पैरिया, गठिया का सबब बनते हैं। दांतों को ज़्यादा भी नहीं कूरेदना चाहिए। ज़्यादा ठन्ढ़ा पानी और इन्तेहाई गरम चाय पीने से भी परहेज़ करना चाहिए। हर खाने के बाद दांतों को साफ़ करना चाहिए और कुल्ली करके सोना चाहिए और दांतों की हिफ़ाज़त करनी चाहिए।

**(19) "तुम ख़ेलाल करो कि वह सफ़ाई का एक जुज़ है। और सफ़ाई ईमान का एक जुज़ है और ईमानदार एक जन्नती है"**

दांतों की हिफ़ाज़त करना और साफ़ व शफ़्फ़ाफ़ रखना हर इन्सान पर लाज़िम है क्योंकि सफ़ाई निस्फ़े ईमान है। खाने के बाद ख़ेलाल करना चाहिए, क्योंकि ख़ेलाल करने से खाने के वह तमाम रेज़े दांतों से निकल जाएंगें जो गल सड़ कर मुंह को गन्दा और दांतों को ख़राब करते हैं।

हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से मनकूल है कि हज़रत जिबरील जनाब रसूले खुदा के लिए मिसवाक, ख़ेलाल और सेंगी लाए। और अर्ज़ किया कि ख़ेलाल से दांतों की जड़ें मुसतहकम हो जाती हैं और दांतों की इस्लाह हो जाती है। रोज़ी बढ़ती है।

हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से मनकूल है कि जो ख़ेलाल के ज़रीए निकाला जाए उसे न खाओ कि उससे अन्दूरूनी ज़ख़्म पैदा होते हैं। दूसरा इरशाद है कि जो कुछ ख़ेलाल के ज़रीए से निकले उसे फेंक दो।

हज़रत इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि चोबे गुल,



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

ब दरख़्त अनार से ख़ेलाल मत करो कि इन दोनों से बाल ख़ोरा के माददे
। हरकत होती है। मिसवाक के लिए सबसे अच्छी पेलू की लकड़ी होती है
ार ख़ेलाल के लिए नीम के तिनके।

## पानी

पानी ख़ुदा वन्दे बुर्ज़ूग व बरतर कि अज़ीम नेअमत में से है अगर
नी न होता तो हयात का वजूद ख़त्म हो जाता न कोई जानदार होता और
ही नबातात होते। हर ज़ी हयात के लिए पानी ज़रूरी चीज़ है गोया ज़िन्दगी
। बरक़रार व क़ायम रखने के लिए सबसे ज़रूरी चीज़ पानी है। आदमी
ज़ा खाए बग़ैर तो हफ़्तों रह सकता है मगर पानी के बग़ैर इसका चन्द रोज़
ज़्यादा ज़िन्दा रहना मुमकिन नहीं है। पानी के बग़ैर कोई जानदार ज़िन्दा
हीं रह सकता इन्सान तो इन्सान पानी की बदौलत पौधे, दरख़्त, घास वग़ैरह
क ज़िन्दा नहीं रह सकते। अगर पानी न मिले तो ये ख़ुश्क होकर मुरझा
ाते हैं। जिस्में इन्सानी में पानी का उन्सर साठ, सत्तर फ़ीसद पाया जाता है।
क तन्दूरस्त तवाना इन्सान के जिस्म से पेशाब, फूज़ला, पसीने के ज़रीए
क़ीबन दो ढ़ाई सेर पानी का एख़राज होता रहता है। पानी से ही जिस्में
सानी में ग़िज़ा के हज़्म होने में मदद मिलती है। पानी की मदद से ग़िज़ा
ास्म की बारीक रगों में पहुँचती है। और जिस्म को क़ुवत व ताक़त बख़्शाती
। पानी के ज़रीए ही से जिस्म से फ़ासद व ज़हरीले माददों का एख़राज होता
। साफ़ व शफ़्फ़ाफ़ और ताज़ा पानी सेहत व तवानाई बख़्शाता है। पानी को
क कर रखना चाहिए। ख़ुसूसन रात को सोने से पहले पानी के बर्तनों को
ख लिया जाए वह ढ़के हुए हैं कि नहीं।

"इरशादे हज़रत पैग़मबरे अकरम है"

"बर्तनों को और पानी के ज़रूफ़ को बन्द (ढ़ांक) करके रकखा करो क्योंकि
ाल में एक ऐसी शब आती है कि जिस में वबा फ़ैलती है तो जो बर्तन या पानी
ा ज़रूफ़ खुला होता है उसमें वबा (वबाई जरासीम) दाख़िल हो जाती हैं"



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

वबाई अमराज़ के जरासीम ख़ुसूसन इन्फलूएनज़ा और इसहाल, है वग़ैरह के जरासीम हवा के तवस्सुत से फ़िज़ा में फ़ैल जाते हैं और जरासीम के लिए नमूद का मौज़ूं मक़ाम पानी है, जहां वबाई जरासीम हामिल हवा पानी तक पहुँची पानी में जरासीम मुन्तक़िल हो जाते हैं तो पानी को खाने पीने में इस्तेमाल करने से इन्फलूएनज़ा और इसहाल, है वग़ैरह की वबा फ़ैल जाती है।

मौजूदा दौर की तहक़ीक़ात ने साबित कर दिया है कि एक मामूली क़तरे में भी बेशुमार जानदार जरासीम होते हैं। और बौल इन्सानी में काब जैसी ज़हर होती है जो उन जानदारों यानी जरासीम को हलाक कर देती है पैग़म्बरे अकरम ने आज से चौदह सौ बरस क़ब्ल इसे बग़ैर ख़ुर्दबीन के नज़ न आने वाली मख़लूक़ के वजूद को बग़ैर किसी आलात के वाज़ेह अलफ़ा में ब्यान फ़रमा दिया है। जिसे आज की सांइसी दुनिया ने इन्तहाई कोशिश बाद ख़ुर्दबीनों से देख कर मालूम किया है। मुलाहेज़ा हो इरशादे पैग़म्ब अकरम (अ० स०)

**(20) "यानी पानी में बोल न करो क्योंकि यक़ीनन पानी जानदार हैं"**

इमाम अलमुत्ताक़ीन हज़रत अली इब्ने अबी तालिब ने भी पानी में बोल व बराज़ करने से मोमानियत फ़रमाई है और मुनदरजा बाला इरशाद हज़रत ख़तमी मरतबत का ब्यान फ़रमाया है।

हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ०) से दरयाफ़्त किया गया कि पानी का ज़ायक़ा व मज़ा कैसा है आप ने फ़रमाया "पानी का मज़ा ज़िन्दगी का मज़ा है"

# पानी पीने के आदाब

**(21) "तुममें से जो तीन सांस में पानी पियेगा वह महफ़ूज़ रहेगा"**

बाज़ लोग पानी पीने में उजलत से काम लेते हैं और एक ही सांस में



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

पूरा गिलास ख़त्म कर देते हैं। इससे यह नुक़सान होता है कि दफ़अतन सर्द पानी गरम जिस्म में दाख़िल होकर निज़ामे तनफ़ुस और निज़ामे हज़्म को मुतास्सिर करता है। अक्सर औक़ात एक सांस में पानी पीने से तबियत भी सेर नहीं होती और प्यास भी नहीं बुझती। ऐसे पानी पीने वाले लोग अक्सर अमराज़े मेदा व तनफ़्फ़ुस में मुबतेला पाए जाते हैं। इसीलिए हज़रत पैग़म्बर अकरम ने फ़रमाया है कि पानी रूक-रूक कर पीयो और इसमें तीन वक़्फ़े कर लिया करो। ताकि बीमारीयों से महफ़ूज़ रहो। एक दूसरी हदीस में इरशादे हादी बरहक़ है कि"

**(22) "ऊँट की तरह ग़ट-ग़ट करके एक घूंट (सांस) से न पियो बल्कि दो या तीन घूंट करके पियो। जब पानी पिने लगो तो बिसमिल्लाह पढ़ो और पीने के बाद अल्हमदोलिल्लाह कहो"**

मालूम हुआ कि ग़ट-ग़ट करके एक ही सांस में पानी पीना ऊँट की ख़सलत है और इस तरह पानी पीने से प्यास और भड़कती है और इस तरह पानी भी ज़्यादा पिया जाता है इससे कई नुक़सानात का अंदेशा होता है। पानी जब पीने लगो तो बिसमिल्लाह कह के पियो कि इस में बरकत ही बरकत है। पानी पीकर ज़ाते बारीए ताअला का शुक्र अदा करना चाहिए कि इस ने पानी जैसी नेअमत से हमको सेराब फ़रमाया।

**(23) "जब पानी पीने की ख़्वाहिश हो तो पानी को एक दम निगलना दरदे जिगर का बायस होता है" जब आप को पानी या कोई दूसरा शरबत पीने की ख़्वाहिश होतो पानी या मशरूब एकदम न निगल जाएं बल्कि घूंट-घूंट करके पीएं क्योंकि एक सांस में पानी या मशरूब पीना नुज़िरे सेहत है। और इससे दर्दे जिगर पैदा होता है"**

हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से मनकूल है कि "तीन मरतबा करके पानी एक ही मरतबा के पी लेने से बेहतर है"

**(24) "हमेशा उबला हुआ पानी पिया जाए उबला हुआ पानी हर शै से ज़्यादा मुफ़ीद है"**



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

क्योंकि इन्सान सबसे ज़्यादा पानी पीता है और पानी के ज़रीए मुख़तलिफ़ जरासीम उस के जिस्म में दाख़िल हो जाते हैं। उन जरासीम रोक थाम बेहद ज़रूरी है। इस का सहल तरीक़ा इस हदीसे मोबारका बताया गया है कि पानी को उबाल कर रख दिया जाए ताकि इसके जरासी फ़ना हो जाएं फ़िर इसे ठन्ढ़ा करके इस्तेमाल में लाया जाए। यह एक ऐ अमल है अगर इस पर अमल पैरा हुआ जाए तो अक्सर मौसमी तग़ीरात पैदा होने वाले वबाई अमराज़ से इन्सान महफ़ूज़ व मामून रह सकता है।

हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम का इरशादे गिरामी है कि "कि जोश किया हुआ पानी हर दर्द के लिए नफ़ा है और किसी तरह नुक़सा नहीं पहुँचाता।

पानी में बेशुमार जरासीम होते हैं जो हम को नज़र नहीं आते। उ जरासीम की दरयाफ़्त हालैंड के "लीउन हाक" (1632ई० ता 1732ई०) की। "लीउन हाक" ने उन जरासीम की दरयाफ़्त के लिए एक आला दर्ज की खुर्दबीन से मदद ली। और उन जरासीम का पता लगाया। लीउन हाव की तहक़ीक़ से बरसों पहले हुज़ूरे ख़तमी मरतबत (अ० स०) बग़ैर किसी खुर्दबीन या आले के उन जरासीम की निशान देही यह कह कर फ़रमाई कि पानी हमेशा उबला हुआ पीयो। तजरूबात से साबित हुआ है कि पानी को उबालने से ये जरासीम फ़ना हो जाते हैं। हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम के इरशाद के मुताबिक़ उबला हुआ पानी सेहत के लिए नफ़ा बख़्श भी है और हर दर्द की दवा भी है। चीन के रहने वाले लोग बरसहा बरस से इस अमल को अपनाए हुए हैं। और उबला हुआ पानी पीते हैं।

**(25) "तुममें से कोई शख़्स कुछ पीने लगे तो बर्तन में फूंक न मारे"**

आज के जदीद सांइसी दौर के माहेरीन हिफ़्ज़ाने सेहत ने जदीद तहक़ीक़ात के ज़रीए यह इनकेशाफ़त किए हैं कि एक इन्सान के छींकने से दूसरे इन्सान को फ़लू, नज़ला ज़ुकाम हो जाता है और थूकने से भी जरासीम उड़ कर दूसरे शख़्स को मुतास्सिर करते हैं। एक दूसरे की सांस से भी



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

नुक़सान पहुँच सकता है। यही नहीं बल्कि पानी या खाने की चीज़ पर फूंक मारने से जरासीम तहलील हो जाते हैं और यही जरासीम सेहते इन्सानी के लिए मुज़िर हैं। इसलिए कि जब हम सांस लेते हैं तो सांस के ज़रीए तनफ़्फ़ुस को ताज़ा हवा फ़राहम करते हैं और साथ ही कसाफ़त आमेज़ हवा (गैस) को सांस के ज़रीए ख़ारिज करते हैं। ये ज़हरीली जरासीम और हवा (गैस) जिसको तिब्बी इसतेलाह में "कार्बन" कहते हैं। और जो इन्सान तन्फ़्फ़ुस में ताज़ा हवा पहुँचने के बाद ख़ारिज होती है। फूंक मारने से वह फ़ौरन पानी या खाने वाली चीज़ में शामिल हो जाती हैं जिससे बहुत से अमराज़ पैदा हो सकते हैं। अब ग़ौर फ़रमाईए कि हूज़ूरे अकरम का यह इरशादे गिरामी हिकमत के उसुलों पर कितना हावी है जिस को आपने सदियों पहले ब्यान फ़रमा दिया था। हमें चाहिए कि पानी या खाने वाली चीज़ों पर फूंक न मारें। पानी पीने से पहले पानी पीने वाले बर्तन को देख लिया जाए कि इस में तिनका या कीड़ा मकोड़ा वग़ैरह तो नहीं है।

हज़रत अमीरल मोमेनीन अली इब्ने अबीतालिब अ० स० से मनकूल है कि रात के वक़्त खड़े होकर पानी मत पीयो। वरना इससे कोई ऐसा दर्द पैदा हो जाएगा जिसका इलाज सिवाए इसके कुछ नहीं कि ख़ुदा आराम कर दे।

हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से मनकूल है कि दिन में खड़े होकर पानी पीना तआम को हज़्म करता है। और रात को खड़े हो कर पानी पीने से पित्त और सफ़रा की ज़्यादती होती है।

हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि पानी ज़्यादा न पीयो कि वह हर क़िस्म का दर्द पैदा करता है और जब तक दर्द की ताब हो दवा मत पियो।

हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि आबे ज़म-ज़म हर मर्ज़ के लिए शफ़ा है।

**(26) "दुनिया और आख़ेरत में मशरूबात का सरदार पानी है"**

हुज़ूरे अकरम ने इरशाद फ़रमाया है कि दोनों जहां में मशरूबात का



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com
सरदार पानी है अहादिस में है कि हुज़ूर अकरम ठन्ढ़े पानी पीने को पसन्द फ़रमाते थे।

ठन्ढ़ा पानी पीने से तस्कीने क़ल्ब और फ़रहत महसूस होती है। हज़रत अमीरल मोमेनीन अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि बारिश का पानी पीयो कि वह बदन को पाक व साफ़ करता है और बीमारीयों और दर्दों को बदन से निकाल देता है। रूए ज़मीन के तमाम पानीयों से आबे ज़म-ज़म बेहतर है। आबे ज़म-ज़म जिस दर्द के लिए पिया जाए दवा है।

हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से मनकूल है कि ठन्ढ़ा पानी हरारत को फ़रो करता है, सफ़रा को साकिन करता है। तआम को मेदे में गलाता है। पित्त को ज़ाएल करता है।

हज़रत इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि पानी पीना किसी तरह बुरा नहीं है, तआम को मेदे में हज़्म करता है, गुस्से को कम करता है अक़्ल को बढ़ाता है। सफ़रा को घटाता है।

हज़रत इमाम रज़ा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि खाने पर ज़्यादा पानी पीना कोई नुक़सान नहीं करता। लेकिन जब मेदा ख़ाली हो तो ज़्यादा पानी मत पीयो।

मुनदर्जाबाल अहादीस से ये बात मालूम होती है कि पानी बग़ैर प्यास के नहीं पीना चाहिए, जब पानी पिया जाए तो ज़्यादा न पिया जाए, जितनी प्यास हो उतना पिया जाए। पानी ताज़ा हो ठन्ढ़ा हो दिन में खड़े होकर और रात को बैठ कर पिया जाए। ख़ाली मेदा पानी न पीया जाए। खाने के दरमियान में पानी न पिया जाए बल्कि खाने के कुछ देर बाद पिया जाए। प्यास को न रोका जाए। प्यास लगे तो फ़ौरन पानी पिया जाए।

## अमराज़

**(27) "ख़ुदा वन्दे आलम ने हर बीमारी कि दवा को पैदा किया है सवाए मौत के"**



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

ख़ुदा वन्दे आलम ने हर बीमारी की दवा को पैदा किया है। जितनी बीमारीयां हैं उनका इलाज मुमकिन है। इस हदीस में हज़रत नबी अकरम ने मुआलिज से रूजू करने और मर्ज़ की दवा लेने और मर्ज़ का ईलाज कराने का हुक्म दिया है।

जब कोई इन्सान किसी मर्ज़ में मुब्तिला हो तो उसको इलाज करना चाहिए, इलाज के लिए मुआलिज से रूजू करना सुन्नते नबी अकरम है। अगर ख़ुदा वन्दे तआला जो शाफ़ाए मुतलक़ है चाहे तो दवा शफ़ा का बहाना बन जाती है और अगर इस की रज़ा न हो तो अच्छे-अच्छे क़ाबिल व लायक़ मुआलिज भी आजिज़ आ जाते हैं क्योंकि जब किसी का वक़्त पूरा हो जाता है तो मुआलिज की सोच और फ़िक्र भी जवाब देदेती है इसलिए मौत का इलाज मुमकिन नहीं है। मौत का आना बरहक़ है और जब वक़्ते मुक़र्रो आही गया है तो दवा भी कारगर व कारामद न होगी।

**(28) "अल्लाह वह है कि जिसने बीमारी को भी उतारा है। और शफ़ा को भी नाज़िल किया"**

ख़ुदा वन्दे कुद्दूस ने हर बीमारी को उतारा है और इसने अपनी कुदरते कामेला से हर बीमारी की दवा को पैदा करके हर मर्ज़ के शफ़ा का एहतेमाम किया है। अब यह अलग बात है कि हम ने इस बीमारी का सही इलाज ही न किया हो। या मुआलिज मर्ज़ की सही तशख़ीस ही न कर सका हो। अगर किसी बीमारी का इलाज न हो सका हो तो ये नहीं कहा जा सकता कि ये लाइलाज मर्ज़ या बीमारी है। बल्कि यह कहा जा सकता है कि अभी तक इस बीमारी की दवा दरयाफ़्त नहीं हो सकी। या हम तक न पहुँच पायी।

**इरशादे हज़रत ख़तमी मरतबत है।**

**(29) *"लेकुल्ले दाइन दवाउन फ़इज़ा उसीबो दवाउन बरीउन बेइज़्निल्लाह"***

**"हर बीमारी के लिए दवा है। जब दवा बीमारी के मिस्ल मिल जाती है तो मरीज़ ख़ुदा के हुक्म से सेहत पा लेता है"**



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

इस हदीसे मोबारका से एक तरफ़ तो अतिब्बा व मुआलेजीन की हौसला अफ़ज़ाई होती है कि वह अमराज़ की अलामत को पेशे नज़र रख कर सही दवा की तशख़ीस व तजवीज़ करें। और सही दवा की जुस्तूजू व कोशिश में रहें। दूसरी तरफ़ मरीज़ों की हिम्मत को भी मर्ज़ से मुक़ाबले की ताक़त बख़्शाती है।

होम्योपैथिक तरीक़ाए इलाज एक ऐसा तरीक़ाए इलाज है जिसमें मर्ज़ के नाम की कोई दवा नहीं बल्कि मरीज़ के आफ़ालो किरदार व गुफ़्तार को पेशे नज़र रख कर अलामत का जायज़ा लिया जाता है और जो अलामत मयस्सर आती हैं उनके मिस्ल दवा तजवीज़ कर दी जाती है जिससे मरीज़ फ़ौरन सेहतयाब हो जाता है।

आँ हज़रत अ० की इस हदीसे मोबारका पर तबसेरा करते हुए मशहूर मुआलिज डाक्टर रिचर्ड हाफ़ मैन रक़म तराज़ है कि "इस क़ौल ने मुसलमानों पर वह एहसान किया है कि वह तमाम दुनिया में दवा की तलाश व जुस्तुजू में घूम गए"। हत्ता कि उनकी तिब के अएवान रफ़ीह के कंगूरे यूनान की क़सर हिकमत से चशमक ज़नी करने लगे"।

एक रवायत में है कि लोगों ने हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से पूछा कि आदमी दवा पीते ही कभी तो वह मर जाता है और कभी सेहत याब हो जाता है (इस में क्या रम्ज़ है?) हज़रत ने फ़रमाया "हक़ तआला ने दवा पैदा की है और शफ़ा भी इसी के हाथ में है। और कोई बीमारी उसने ऐसी पैदा नहीं की जिस की दवा न पैदा की हो। मुनासिब है कि दवा पीते वक़्त ख़ुदा का नाम लिया जाए" यानी महज़ दवा पर भरोसा न करके बल्कि उससे भी अयानत तलब करे जिस के क़ब्ज़ाए क़ुदरत में मर्ज़ का भेजना है दवा में तासीर बख़्शना सेहत अता फ़रमाना सब कुछ है।

**(30) "गरम मिज़ाजों को तूले उमरी की ख़ुशख़बरी सुना दो"**

आम तौर पर गर्म मिज़ाज रखने वाले लोग तवील उम्र पाते हैं। और ज़्यादा अर्से तक ज़िन्दा रहते हैं।



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

**(31) "हर बीमारी की जड़ सर्दी है"**

यानी अक्सर बीमारीयां सर्दी के सबब वजूद में आती हैं। इस हदीसे मोबारका का ताअल्लुक़ उन इलाक़ों से मालूम होता है जो मुनतक़ए बारदह में हैं। वैसे हमारे यहां भी सर्दी के मौसम में अमराज़ सीना, खांसी, नेमोनिया, नज़ला व बोख़ार वग़ैरह-वग़ैरह ज़्यादा होते हैं।

**(32) "कुड़ा करकट दरवाज़े के पीछे मत फेंको। ये शैतान की निगाहगाह है"**

इस्लाम ने सेहत व सफ़ाई की जानिब काफ़ी तवज्जो दिलाई है और सफ़ाई को ईमान का जुज़ क़रार दिया है। कूड़ा-करकट अगर घर के दरवाज़े के नज़दीक फेंका जाएगा तो वह जरासीम की आम जगह बन जाएगा और जरासीम उड़-उड़ कर घर में वापस आयगें उस घर के मकीनों के लिए कई अमराज़ का पेश ख़ैमा बन जाएंगे। हदीसे मोबारका में जरासीम को शैतान से ताबीर किश गया है शैतान गुमराह करता है और जरासीम से मुख़्तलिफ़ अमराज़ पैदा होते हैं।

**(33) "इन्सान की दानाई यह है कि वह अपने बोल व बराज़ के लिए किसी ख़ास जगह का ताअय्युन करे"**

जिस ग़ैर मुहज़्ज़ब ज़माने में बैतुलख़ला का रवाज नहीं था। हादीए बरहक़ अ० ने इस हदीस के ज़रीए बोल व बराज़ के लिए मख़्सूस जगह के ताअय्युन का इरशाद फरमाया और इस अमल को दानाई क़रार दिया। बोल व बराज़ में चुकिं जरासीम होते हैं और जगह-जगह करने से जरासीम फैलते हैं और कई बीमारीयां पैदा करते हैं। इस लिए एक ही जगह को बोल व बराज़ के लिए मख़्सूस करने की ताकीद की गयी है ताकी बोल व बराज़ का ताफ़्फ़ुन और जरासीम एक ही मक़ाम पर रहें और फैलने न पाएं।

**(34) "आँ हज़रत ने कुएं के किनारे और नहर के किनारे जिससे पीने का पानी हासिल किया जाता हो बोल व बराज़ करने से मना फ़रमाया है"**



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

हुज़ूरे अकरम ने इस अम्र से मना फ़रमाया है कि मीठे पानी के कुंए और मीठे पानी की नहर के किनारे इन्सान बोल व बराज़ करे। क्योंकि कुंआं और नहर जो कि मख़ज़ने आब हैं और लोगों को पीने का पानी वहां से मय्यसर होता है उस के किनारे अगर बोल व बराज़ से आलुदा हो जाएंगे तो इस के जरासीम और नजासत पानी में शामिल होकर कई बीमारीयों का सबब बन सकते हैं और उससे चेचक व इसहाल, ख़सरा, पेचिश, हैज़ा जैसी बीमारीयां फैलने का अंदेशा है।

**(35) "आँ हज़रत ने फ़लदार दरख़्त के नीचे पेशाब करने से मना फ़रमाया है"**

होकमा और मोहक़्क़ेक़ीन ने ये तहक़ीक़ की कि अक्सर बीमारीयां जैसे तपेदिक़, सिल, आंतों की सोज़िश और बाज़ मुतअद्दी बीमारीयों के जरासीम उन फूलों में पेशाब करने से पैदा होते हैं और उनके असारात से फ़ल खाने वाले मुतास्सिर होते हैं। इसीलिए हज़रत सरकारे दोआलम ने फ़लदार दरख़्त के नीचे पेशाब करने से मना फ़रमाया है।

**(36) "मौसमे बहार की हवा को ग़नीमत समझो, तुम्हारे जिस्म पर उसका असर वही होता है जो इस हवा का असर दरख़्तों पर होता है। और मौसमे ख़ेज़ां की हवा से बचो क्योंकि वह तुम्हारे जिस्म पर वही असर करती है जो दरख़्तों पर करती है"**

मौसमे बहार में दरख़्त सरसब्ज़ व शादाब हो जाते हैं। कोपल खिलती है कलीयां मुस्कूराती हैं ख़ुशबूदार हवाएं फैल जाती हैं और हर शए पर बहार में हुस्न व रानाई आजाती है। बहार में जिस्में इन्सानी हशशाश व बशशाश हो जाता है। दिल फ़रेब व भीनी-भीनी हवा जिस्मे इन्सानी को सेहत मन्द बनाती है और मौसमे ख़ेज़ां में दरख़्तों के पत्ते पीले होकर रफ़्ता-रफ़्ता गिर जाते हैं। दरख़्तों का हुस्न ख़त्म हो जाता है, ऐसे ही इन्सानी जिस्म पर मौसमे ख़ेज़ां के असारात मुरत्तब होते हैं।

**(37) "अल्लाह इस बात को बुरा समझता है कि कोई शख़्स कोढ़ी**



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

बात करते वक़्त अपने और उस के दरमयान एक हाथ का फ़ासला लहूज़ न रखे"

आँ हज़रत ने तक़्रीबन चौदह सौ साल पहले इस अम्र की हिदायत की ी कि कोढ़ और जज़ाम वाले शख़्स से बात करते वक़्त एक हाथ दूर रहकर ात की जाए। मौजूदा साइंसी दौर में जो तहक़ीक़ात सामने आयी हैं (जिन का ज़्केरा आइन्दा किया जाएगा) कोढ़ और जुज़ाम मुतअद्दी बीमारीयां हैं इस ; जरासीम बहुत जल्द दूसरे तक मुन्तक़िल हो जाते हैं अगर गुफ़्तगू करने ाला ऐसे मरीज़ के क़रीब होगा कि जिस को कोढ़ हो तो सांस के ज़रीए इस ; जरासीम तन्दूरस्त इन्सान में मुन्तक़िल हो जाएंगे। इसीलिए कमअज़कम एक ाथ दूर रह कर गुफ़्तगू करने का हुक्म दिया गया है।

**(38) "जुज़ाम वाले से इस तरह भागो जैसे शेर से भागते हैं"**

जुज़ाम एक मूज़ी व मुताद्दी मरज़ है जिसके जरासीम तन्दूरस्त आदमी को लग जाते हैं तो उसके जिस्म में उभार और गांठें पैदा हो जाती हैं। जुज़ाम के जरासीम को शेर की शबीह क़रार दिया गया है और इसको अरबी में शेर की बीमारी से ताबीर किया गया है हज़रत सरकारे दोआलम ने चौदह सौ साल क़ब्ल जुज़ाम वाले से बचने के लिए इसके जरासीम की निशान दही बग़ैर किसी मालात के फ़रमा दी कि जुज़ाम वाले से इस तरह भागो जैसे शेर से भागते ं। 1874 ई० में डाक्टर हान्स ने जज़ाम के जरासीम को दरयाफ़्त किया ासको एक मुताद्दी मर्ज़ क़रार देते हुए आँ हज़रत के इरशादे मोबारक पर ुहरे तस्दीक़ सब्त की। हादीए बरहक़ को सेहते इन्सानी का कितना ख़्याल ा कि आपने मबरूस व कोढ़ी और जुज़ामी से दूर रहने की हिदायत फ़रमाई।

हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से मनक़ूल है जब इस क़िस्म (जुज़ाम व बरस व कोढ़) के लोगों को देखो तो ख़ुदा से आफ़ियत तलब करो और उनके मर्ज़ से ग़ाफ़िल न रहो कि मबादा तुम्हारे बदन में सरायत कर जाए।

दूसरी हदीस में आँ हज़रत ने फ़रमाया कि जो लोग बलाओं में मुबतेला



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

हैं उनकी तरफ़ कम देखो, उनके पास मत जाओ और उनके पास से गुज़रने का मौक़ा मिले तो जल्द गुज़र जाओ। ऐसा न हो कि जो बीमारी उन्हें है वह तुम्हें लग जाए।

**(39) "जिस्म से उतारे हुए लेबास को कोई हाथ न लगाए"**

जिस्म से जो लेबास उतारा जाता है उस में कसाफ़त होती है। बार-बार मैले कुचैले लेबास को हाथ लगाने से कसाफ़त के जरासीम हाथों के ज़रीए मुन्तक़िल हो जाते हैं और इस तरह बहुत सी बीमारीयां फ़ैलने का अंदेशा है।

**(40) "जब भी आप लेबास ज़ेबे तन करना चाहें तो पाक व साफ़ करलें"**

इस्लाम में पाकीज़गी और सफ़ाई को नेहायत अहमीयत हासिल है। इस्लाम ज़ाहिर सफ़ाई के साथ तहारत व पाकिज़गी को भी ज़रूरी क़रार देता है और सफ़ाई को निस्फ़े ईमान क़रार देकर रूह की पाकीज़गी के लिए जिस्म की तहारत को लाज़िम क़रार दिया है। इस लिए लेबास को पाक व साफ़ रखना चाहिए। लेबास को पाक व साफ़ रखने से बहुत सी बीमारीयों मसअलन सिफ़लिस तपेदिक़ व दीगर वबाई अमराज़ से इन्सान महफ़ूज़ व मामून रहता है आँ हज़रत ने लेबास की नज़ाफ़त का ख़ास तौर से हुक्म फ़रमाया है।

अहादीसे मोतबर में है कि उम्दा और अपने हस्बे हाल नफ़ीस लेबास ज़ेबे तन करना बायसे ख़ुशनूदिए ख़ुदा है। हज़रत रसुले अकरम ने इरशाद फ़रमाया है कि उम्दा कपड़े पहनो, ख़ुशबू लगाओ, ज़ीनत करो क्योंकि ये अमल ख़ुदा को पसन्द है और ख़ुदा साहेबे ज़ीनत को दोस्त रखता है। मगर ये ज़रूरी है कि माल हलाल हो और असराफ़ की हद तक न पहुँचे।

हज़रत इमाम ज़ाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि परवरदिगारे आलम तर्क ज़ीनत और बदहाली को मज़मूम समझता है और नफ़ीस लेबास पहनना, ख़ुशबू लगाना, और मकान को साफ़ व सुथरा रखना ख़ुदा को महबूब है। हज़रत अमीरल मोमेनीन से मनक़ूल है कि उजले कपड़े पहनने से रंजो



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

ग़म दूर होते हैं और नमाज़ क़ूबूल होती है।

# अमराज़ का इलाज करना सुन्नते नबी अकरम अ० है

ज़ादुलमआद में हज़रत बेलाल बिन सयाफ़ रज़ी० से ये रवायत नक़्ल है।

"हज़रत बेलाल बिन सयाफ़ रज़ी० ब्यान करते हैं कि हज़रत रसुले अकरम एक मरीज़ की अयादत के लिए तशरीफ़ ले गये। आप ने हुक्म फ़रमाया की किसी तबीब को बुला भेजो, ये सुन कर हाज़ेरीन में से किसी ने अर्ज़ किया कि या रसुलअल्लाह क्या आप ये फ़रमा रहे हैं। हूज़ूर ने फ़रमाया हां बेशक अल्लाह बूज़ुर्ग व बरतर ने कोई ऐसी बीमारी नहीं नाज़िल की जिस की दवा को न उतारा हो"।

नब्बाज़े फ़ितरते इन्सानी हज़रत ख़त्मुलमरतबत के इस इरशादे गिरामी से साफ़ वाज़ेह है कि अगर कोई मर्ज़ लाहक़ हो तो इलाज मुआलेजे के लिए मुआलेजीन से रूजू करना चाहिए और इलाज करना चाहिए। और ये कि किसी मर्ज़ का इलाज कराना सुन्नते नबी अकरम। और कोई मर्ज़ लाईलाज नहीं है। शाफ़िए मुतलक़ ने हर मर्ज़ के साथ उस का मदावा पैदा कर दिया है। इस लिए इलाज मुआलेजे को तर्क नहीं करना चाहिए और शफ़ायाबी से भी मायूस नहीं होना चाहिए।

हज़रत इमाम ज़ाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से मनक़ूल है कि पैग़मबरों में से कोई पैग़मबर बीमार हो गए उन्होंने कहा कि मैं दवा न करूँगा। जिस ने मुझे बीमार किया है वही तन्दुरसत भी कर देगा। हक़ तआला ने वही भेजी कि जब तक तुम इलाज न करोगे मैं शफ़ा नहीं दूंगा।

एक और रवायत में है कि लोगों ने हज़रत इमाम ज़ाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से पूछा कि आदमी दवा पीता है कभी तो मर जाता है और कभी



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

अच्छा हो जाता है। मगर अक्सर तो अच्छा ही हो जाता है (इस में क्या रमज़ है) फ़रमाया हक़ तआला ने दवा पैदा की है और शफ़ा भी इसी के हाथ है। और कोई बीमारी इसने ऐसी नहीं पैदा की जिस की दवा न हो। मुनासिब है की दवा पीते वक़्त ख़ुदा का नाम लिया करे (यानी महज़ दवा पर भरोसा न करे बल्कि इससे भी अयानत तलब करे जिस के क़ब्ज़ाए कुदरत में मर्ज़ का भेजना, दवा में तासीर बख़्शना, सेहत अता फ़रमाना सब कुछ है)

हज़रत इमाम ज़ाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से मनकूल है कि अक्सर दर्द और बीमारीयां सफ़रा व सौदा के ग़लबे से और जले हुए ख़ून और बलग़म की ज़्यादती से पैदा होती हैं। आदमी के लिए मुनासिब है कि अपने हिफ़्ज़े सेहत में कोशिश करे मुबादा अख़लात फ़ासदा ग़ालिब आ जाएं और इसे हलाक करदें।

### (41) "तुम अपनी बीमारीयों का इलाज सदक़े से करो"

हज़रत रसूलअल्लाह ने फ़रमाया कि तुम अपने बीमारों का ईलाज सदक़े से करो। फ़रमाया कि सदक़ा बड़ी-बड़ी बलाओं को टाल देता है। और बहुत ज़्यादा सदक़ा देने वाला ज़िल्लत व ख़्वारी और ख़राबी की मौत नहीं मरता।

मनकूल है कि एक शख़्स ने हज़रत इमाम मूसा काज़िम की ख़िदमत में अर्ज़ की कि मेरे बाल बच्चे वग़ैरह मिला कर हम सब दस आदमी हैं और सब के सब बीमार हैं। फ़रमाया सब से बेहतर इलाज सदक़ा है। क्योंकि सदक़े से बेहतर और जल्द तर कोई चीज़ फ़ायदा नहीं करती।

## अमराज़े चशम का इलाज

हर इन्सान के लिए आंखें ख़ुदा की नेअमतों में एक बहुत बड़ी नेअमत है। आंखों की हिफ़ाज़त करना हर इन्सान का अव्वलीं फ़र्ज़ है क्योंकि इसमें इसी की भलाई है। और आंखें न हों तो इन्सान की दुनिया अंधेरी हो जाती है आंखों के अमराज़ और उनकी तफ़सील ब्यान करने के लिए तो एक पूरी



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

ताब लिखी जाए तो वह भी ना काफ़ी है और इसी तरह इलाज के लिए कसीर सफ़हात की ज़रूरत है। इन सफ़हात में सिर्फ़ यह बतलाना मक़सूद कि रहमातुल्लिआलामीन और आइम्माए मासूमीन ने अमराज़े चशम के लिए या इलाज तजवीज़ फ़रमाया है।

**(42) "हज़रत रसूले अकरम के कुछ असहाब ने हुज़ूर से अर्ज़ किया कि कमाता (खुंमबी) ज़मीन की चेचक है। इस पर हुज़ूरे अकरम ने फ़रमाया की खुंमबी तो मन[1] से है और इस का पानी आंखों के लिए शफ़ा है"।**

कमाता (खुंमबी) जिसको खुंब भी कहा जाता है। बरसात के मौसम में ज़मीन में ख़ुद ब ख़ुद उगती है इस की काशत नहीं होती। ये दुदीहया, सफ़ेद, सुर्ख़ और सियाह रंग की होती है। सयाह रंग की खुंमबी इन्तेहाई ज़हरीली होती है इस को इस्तेमाल नहीं करना चाहिए इस को ख़ुशक करके पीस कर खाया जाता है। इसकी तरकारी भी बनाई जाती है। जो खाने में बहोत लज़ीज़ होती है। इस्हाल के लिए नफ़ा है। इसकी ख़ासियत ख़ुश्को तर है चन्द खुंमबीयों को ले कर इसका पानी निचोड़ कर शीशी में भर लिया जाता है और उस पानी को आंखों में डाला जाता है। माहिरीने चश्म अतिब्बा को हादीए बरहक़ के इरशाद की रौशनी में "खुंमबी" पर तहक़ीक़ करना चाहिए क्योंकि हुज़ूर के इरशाद की सदाक़त से कोई इन्कार नहीं कर सकता, काफ़ी में ये हदीसे मोतबर हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से मनकूल है कि फ़रमाया जनाब रिसालत मआब ने कि कमाता (खुंमबी)[2] दाख़िल "मन व सलवा" है जो बनी इसराईल पर नाज़िल हुआ था। और मेरे लिए बहेशित से आया। इस का पानी आंख के लिए शफ़ा है।

हज़रत जाबिर रज़ी० ब्यान फ़रमाते हैं कि।

---

1) मन-वो ग़िज़ा जो बनी इसराइल को सहरा में अता हुई थी।

2) खुंमबी-को अंग्रज़ी में मशरूम कहते हैं हिन्दोस्तान में बाज़ लोग इसे सांप की छतरी कहते हैं।



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

(43) "मैंने सुना है कि हज़रत नबी अकरम फ़रमाते थे कि तुम सोते वक़्त सयाह रंग का सुरमा ज़रूर लगाया करो। ये निगाह को रौशनी बख़्शता है और बाल उगाता है"।

(44) "असमद को अपने ऊपर लाज़िम कर लो। क्योंकि ये निगाह को तेज़ करता है और बालों को उगाता है"।

(45) "सबसे बेहतर सरमाया असमद है जो निगाह को तेज़ करता है और बालों को उगाता है"

ग़ौर फ़रमाईये कि हज़रत नबी अकरम ने आंखों की हिफ़ाज़त के लिए कितना आसान नुस्ख़ा तजवीज़ फ़रमाया है कि सुरमा लगाया करो। इस से निगाह में तेज़ी पैदा होती है और बसारत को तक़वीयत हासिल होती है। बाल उगते हैं। अब हज़रत आइम्माए ताहेरीन के इरशादात सुरमे से मुताल्लिक़ और आंखों की मुख़तलिफ़ बीमारीयों के इलाज जो उन्होंने तजवीज़ फ़रमाए हैं। मुलाहेज़ा किजिए

- हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र अलैहिस्सलाम से मनक़ूल है कि सुरमा लगाने से मुंह में ख़ुशबू पैदा होती है और पलकें मज़बूत हो जाती हैं।(1)
- हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से मनक़ूल है कि सुरमा लगाने से मुंह में ख़ुशबू पैदा होती है। नई पलकें पैदा होती हैं। बीनाई तेज़ होती है और सजदे को तूल देने में मदद मिलती है।
- हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से मनक़ूल है कि सोते वक़्त सुरमा लगाने से आंखों में पानी नहीं उतरता।

गुज़श्ता सफ़हे में असमद का तज़केरा किया गया है ये सुरमा असमद इसफ़ेहान के पहाड़ों और कानों से खोद कर निकाला जाता है। और ख़्वास के ऐतेबार से बहोत ही उम्दा और फ़ायदेमन्द होता है। इस सुरमे की तारीफ़ हाफ़िज़ इब्ने क़ीम ने इस तरह ब्यान फ़रमाई है।

"असमद से मुराद सुरमे का वह सियाह पत्थर है जो इसफ़ेहान से

(1) हलीतह अलमतक़ीन



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

आता है और यह मग़रिब से आने वाले तमाम सुरमों से अच्छा है। क्योंकि इस का असर फ़ौरी होता है। इससे कोई नुक़सान नहीं होता यह तासीर में ठन्डा होता है आंखों को तक़वीयत देता है आंखों के अज़लात को मज़बूत करता है। आंख से पानी बहने और दीगर रूतुबतों को रोकता है। आंख में बढ़े हुए गोशत को और ज़ख़्मों को मुनदमिल करता है। जब इसे शहद और पानी में घोल कर लगाया जाए तो इसके फ़वाएद में इज़ाफ़ा होता है(1)

सुरमे का इस्तेमाल करते वक़्त सुरमे को देख लिया जाए कि सुरमा ही है यह या सका, क्योंकि अक्सर जाल साज़ सके को सुरमा के नाम से फ़रोख़्त करते हैं, बेहतर यह है कि सुरमा किसी अच्छे मुसतन्द इदारे का हो तो बेहतर है। सुरमा पाकिस्तान में चितराल के पहाड़ों में भी पाया जाता है और अच्छा होता है।

## (46) "बेही का खाना तारीकिए चश्म को दूर करता है"

भीह के फ़वाएद आइन्दा सफ़हात में ब्यान किए जाएंगें।

♦ हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि तुम्हें मिसवाक करना लाज़िम है कि इससे आंखों में जेला होती है। और इसी तरह सुरमा लगाना ज़रूरी है कि इसीसे मुंह में ख़ुशबू पैदा होती है क्योंकि मिसवाक से बलग़म ख़ारिज होता है और दीमाग़ और आंखों की तरफ़ का ज़ाएद पानी निकल जाता है, इसी सबब से आंखों की रौशनी बढ़ती है और सुरमा लगाने से आंखों का फ़ज़ूल पानी रूकता है जो मुंह के रास्ते निकल जाता है इस वजह से मुंह में ख़ुशबू पैदा होती है(2)

♦ हज़रत इमामे रज़ा अलैहिस्सलाम से मनकूल है कि जिस शख़्स की बीनाई कमज़ोर हो गई हो उसे लाज़िम है कि सोते वक़्त चार सलाईयां दाहिनी आंख में और तीन सलाईयां बाईं आंख में लगाया करे(3)

---

(1) तिब्बुल नबवी हाफ़िज़ इब्ने क़ीम
(2) तहज़ीबुल इस्लाम तर्जुमा हलीत अलमतक़ीन
(3) तिब्बे इमामे रज़ा अ० 3,4,5 तहज़ीबुल इस्लाम क़ीमती पत्थर और करीशमाए क़ुदरत



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

आखा क इलाज से मुतालिक़ आइम्माए ताहेरीन अलैहिस्सल मुनदरजा ज़ैल नुस्ख़े तजवीज़ फ़रमाते हैं

मनकूल है कि हज़रत हुसैन अलैहिस्सलाम ने अपने असहाब में किसी से इरशाद फ़रमाया था कि हलीला ज़र्द एक अदद फ़िलफ़िल सात अद पीस कर पका लो और फ़िर आंखों में (1)लगालो।

♦ हदीसे सही में मनकूल है कि किसी शख़्स ने हज़रत इमाम जाफ़ सादिक़ अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में आंखों के मर्ज़ की शिकायत की हज़र ने इरशाद फ़रमाया कि जदवार और काफ़ूर लेकर दवा तैयार करे (औ आंखों में लगाए) दूसरी रवायत में है कि यह भी फ़रमाया कि इस दवा इस्तेमाल से आंखों को और दिल को तक़वीयत पहुँचती है और ज़ोफ़ जात रहता है।

♦ हज़रत इमाम ज़ाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम का इरशाद है कि आंख की पुतलीयों में जो सफ़ेदी आ जाती है इस के लिए दानए फ़िरांग नफ़ा है इस पत्थर को इन्तेहाई बारीक पीस कर मिस्ले सुरमा इस्तेमाल करने से मज़ जाता रहता है।

♦ रवायत में मनकूल है कि एक शख़्स ने हज़रत इमाम ज़ाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में सफ़ेदीए चशम की शिकायत की और ये भी अर्ज़ किया कि मेरे जोड़-जोड़ में दर्द रहता है। और दांतों में भी दर्द है। हज़रत ने इसको यह नुस्ख़ा तजवीज़ फ़रमाया। फ़िलफ़िल सफ़ेद, दार फ़िलफ़िल हर एक सात-सात माशा नौसादर साफ़ करदा साढ़े तीन माशे को ख़ूब बारीक पीस कर कपड़े से छान लें फ़िर दोंनों आंखों में तीन-तीन सलाइयां लगा कर इस की सोज़िश का तहम्मुल करो। और एक घन्टे तक सब्र करो इन्शाअल्लाह सफ़ेदी बरतरफ़ हो जाएगी और आंख में जो ज़ाएद गोशत बढ़ गया है वह भी दूर हो जाएगा और दर्द को भी सुकून होगा। इस के बाद आंख को आबे

(1) तहज़ीबुल इस्लाम-क़ीमती पत्थर और करीशमाए क़ुदरत



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

ताज़ा (आबे साफ़ी) से धोकर मामूली सुरमा लगाया जाए(1)

♦ हज़रत इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम से मोत्तबर रवायत में मनकूल है कि "सब्र सकुतरी" और काफूर हर दो हम व ज़न ले कर ख़ूब बारीक पीस लें और कपड़े में छान कर रख छोड़ें और हर महीने एक मरतबा सुरमे की तरह लगाएं, आंखों की किसी बीमारी और दर्दे सर की कभी शिकायत न होगी(2)

# अमराज़े क़ल्ब का इलाज

क़ल्ब जिस्मे इन्सानी के अन्दर बादशाह की हैसियत रखता है। जिस्म का हर पुर्ज़ा क़ल्ब की हिफ़ाज़त करता है और इसके लिए ख़ून पहुँचाता है। क़ल्ब भी अपनी डियुटी पूरी तरह अंजाम देता है और जिस्म के अंदर एक-एक रेशे तक ख़ून पहुँचाता है। अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता क़ल्ब में कोई नुक़्स पैदा हो जाए या वक़्ती तौर पर गड़बड़ हो जाए तो सारे आज़ाए जिस्मानी इस की वजह से मुतास्सिर होते हैं और जिस्म का निज़ाम दरहम बरहम हो जाता है।

छोटा सा ये लोथड़ा जिस की साख़्त हमारी मुट्ठी बराबर है। पूरे जिस्म को ख़ुन की फ़राहमी और शरयानों के ज़रीए जिस्म के हर हिस्से में ख़ुराक और आक्सीजन की फ़राहमी इसी लोथड़े का काम है।

हमारे जिस्म में क़ल्ब का सब से अहम काम ख़ून को साफ़ करना है। और वरीदों (गन्दे ख़ुन की नालीयों) से शिरयानों (साफ़ ख़ुन की नालीयों) में मुनतक़िल करना है, क़ल्ब पर इन्सान की सेहत और अदम सेहत का दारोमदार है। अगर इसमें बिगाड़ पैदा हो जाए तो इन्सान की सेहत में बिगाड़ पैदा हो जाता है और इसकी हरकत रूक जाए तो ज़िन्दगी का चराग़ ही गुल हो जाए। अमराज़े क़ल्ब के यूँ तो बहोत से असबाब हैं। बाज़ अतिब्बा माहेरीने क़ल्ब ने जो ब्यान किए हैं इसमें से चन्द यह हैं। मेदे में नुक़्स, बदहज़मी,

(1) तिब्बे सादिक़ अलैहिस्सलाम तहज़ीबुल इस्लाम
(2) हलीत अलमतक़ीन तहज़ीबुल इस्लाम



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com
पुरख़ुर।, मुरग़न ग़िज़ाओं का बकसरत इस्तेमाल, सकील ग़ेजाओं का खान बकसरत तम्बाकू नोशी, मै नोशी, शदीद दिमाग़ी व ज़हनी उलझनें, ज़्याद ख़ौफ़, चाय और ज़्यादा शकर का इस्तेमाल वग़ैरह वग़ैरह। चिकनी औ चरबी की अशिया भी अमराज़े क़ल्ब का बायस बनती हैं। क्योंकि उन मे कोलेसर्टोल नामी माद्दा जिस्म में ज़्यादा होकर ख़ून को गाढ़ा कर देता है और ख़ून गाढ़ा होतो शिरयानों में ख़ून की रवानी मुतास्सिर होती है।

अमराज़े क़ल्ब में जहां अब तक बेशुमार वजूहात व असबाब नज़र आए हैं और ब्यान किये जाते हैं, वहां ख़ून के सयाह और गाढ़े पन को भी एक अहम आरज़ा समझा जाता है, ख़ून के गाढ़ेपन के बारे में केलिफ़ोरनिय युनिवरसिटी की डाक्टर जान गाफ़ मेन का कहना है कि जानवरों की चरबी और अण्डों में एक माद्दा कोलेसर्टोल, लेस दार ख़ुसूसियात का हामिल होता है, जो ख़ून पर तीन तरह से असर अंदाज़ होता है।

(1) जब कोलेसर्टोल से भरपूर ख़ूराक जिस्मे इन्सानी में दाख़िल होती है तो कोलेसर्टोल ख़ून में जज़्ब होकर उसे लेसदार बना देता है।

(2) जब लेस की वजह से शरयानों की लचक काफ़ी हद तक मफ़्कूद हो जाती है और उन्हें सख़्ती के बायस ज़्यादा मेहनत करना पड़ती है जिससे अक्सर ख़ून मुनजमिद हो जाता है।

(3) अचानक हरकते क़ल्ब बन्द होने वाले मरीज़ों की हरकते क़ल्ब बन्द होने की वजूहात की तहक़ीक़ व जांच पड़ताल करने से मालूम हुआ की उनकी आम ख़ूराक में कोलेसर्टोल को तहलील करने वाले विटामिन्स पैदा होते हैं जिस के बायस कोलेसर्टोल के सख़्त रददे अमल से ख़ून जम जाता है और क़ल्ब अपना काम बन्द कर देता है। मशहूर बरतानवी माहिरे क़ल्ब सर मुरस कैन्डी ने अपने तर्जुबात व मुशाहेदात में ब्यान किया है कि जफ़ा कशों की बनिस्बत अमीरों और ख़ुशहाल व पुर सुकून घरानों में यह मर्ज़ ज़्यादा पाया जाता है।

आज के तरक़्क़ी याफ़्ता दौर में जहां ये मर्ज़ दिन ब दिन बढ़ता जा



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

ा है और आम होता जा रहा है वहां इसके इलाज भी नए-नए दरयाफ़्त । रहे हैं और नित नई अदवीया सामने आ रही हैं। एक इलाज बाईपास भी रयाफ़्त हुआ है, लेकिन इस मर्ज़ पर मोकम्मल क़ाबू नहीं पाया जा सका, मराज़े क़ल्ब का इलाज जिस को हज़रत नबी अकरम अलैहिस्सलाम ने आज । चौदह सौ साल पहले फ़रमाया वह भी मुलाहेज़ा किजिए।

हज़रत सईद रज़ी० ब्यान करते हैं।

**(47) "मैं एक दफ़ा बीमार हो गया तो हुज़ूर अ० स० मेरी बीमार ुर्सी को तशरीफ़ लाए। आप ने मेरी छातीयों के दरम्यान (सीने पर) दस्ते ोबरक रकखा, मुझे उस की ठन्ढ़क दिल को महसूस हुई। आप ने फ़रमाया ुम्हें दिल की तकलीफ़ है, तुम हारिस बिन कल्दा शक़फ़ी[1] के पास जाओ न्योंकि वह तबीब है उसे चाहिए कि मदीने की उजूह खजूर के सात दाने ो कर उन्हें गुठलीयों समेत कूट ले और तुम्हारे मुंह में डाल दे[2]।"**

खजूर सहराई इलाक़े का मौसमे गरमा में पैदा होने वाला फ़ल है जिसे ाकने के बाद एहतियात से संभाल लें तो साल भर इस्तेमाल किया जा सकता ै। इसके बेशुमार अक़साम हैं जो रंग और ज़ाएक़े और तासीर में भी एक ूसरे से मुख़तलिफ़ होती हैं। उजूह खजूर खजूरों की आला क़िस्म में से है। ो खजूर ज़ाएक़े में लज़ीज़ और मूफ़ररह है। हजम में दरमियाना साइज़ होता ै। और इस का रंग सियाही मायल होता है। खजूर से मुताल्लिक़ तज़केरे हम आइन्दा सफ़हात में तहरीर करेंगे। यहां तो सिर्फ़ उजूह खजूर के बारे में तहरीर करना मक़सूद था कि आँ हज़रत ने अमराज़े क़ल्ब के लिए उजूह ख़जूर को इलाज तजवीज़ फ़रमाया, और तबीब से रूजू करने का हुक्म फ़रमाया क़ल्ब के बारे में एक और हदीस मुलाहेज़ा हो,

**(48) "हज़रत नौमान बिन बशीर रज़ी० से रवायत है कि हज़रत नबी करीम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया। याद रकखो जिस्म में एक लोथड़ा**

(1) आँ हज़रत के ज़माने में अरब के तबीब थे।
(2) अबू दाउद तिब्बे नबवी



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

है जब तक वह ठीक है सारा जिस्म ठीक है और जब इस में ख़राबी पैद हो जाए सारे जिस्म में ख़राबी पैदा हो जाती है। ख़ूब याद रकखो! यह क़ल्ब है" (मुत्ताफ़िक़ एलैह-मुस्लिम-इब्ने माजा)

आँ हज़रत अलैहिस्सलाम ने चौदह सौ साल पहले बग़ैर किसी आलात व एकसेरे मशीन के क़ल्ब की तशरीह मुन्दरजा बाला हदीस में ब्यान फ़रम दी, एक और हदीस क़ल्ब के इलाज से मुताल्लिक़ मोलाहेज़ा हो, जिस के रावी हज़रत तलहा बिन अबीद रज़ी० हैं

**(49) "मैं रसूले ख़ुदा अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ आपके दस्ते मोबारक में एक बेही दाना था। आपने फ़रमाया ऐ तलहा! यह लेलो बेशक यह दिल के लिए मुफ़र्रह है"** (ज़ादुल मआद)

2- यही हदीसे मोबारका दूसरी असनाद के साथ उन लफ़्ज़ों में नक़्ल हुई है।

**(50) "बेशक यह (बेही) दिल के लिए मुक़व्वी है। रूह के लिए मुफ़र्रह है और सीने की घुटन को दूर करती है"**। (निसाई शरीफ़) एक दूसरी रवायत में यह भी है **"वीजलो अल फ़वाद"** यानी दिल को रौशन करती है (मोअज्जम अलकबीर तुबरानी)(1)

सफ़र जल जिसको तिब में बही कहा जाता है। यह पहाड़ी ख़ित्तों में पैदा होने वाला फ़ल है। सेब से मुशाबेहत रखता है। इसकी दो क़िस्में होती हैं, तुरश व शीरीं इस के बीज को बेहीदाना कहा जाता है। इसकी दोनों क़िस्मों का रंग अलग होता है। तुरश का मेज़ाज सर्द और शीरीं का मेज़ाज मोतदिल होता है।

किताब अलमफ़रदात में है कि बही से शरबत रब और मुरब्बा बनाया जाता है। हद दर्जा मुफ़र्रह और मुक़व्वी है। मेदा जिगर और दिल व दिमाग़ के लिए क़ुव्वत बख़्श है। ख़फ़क़ान, हरारत जिगर और ज़ोफ़े क़ल्ब के लिए

---

(1) तिब्बे नववी' हाफ़िज़ नज़ीर अहमद



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com
नफ़ा व सूदमन्द है। प्यास और क़ै के दरमयान तसकीन बख़्श साबित होता है(1)।

डाक्टर बलीग़उददीन जावेद तहरीर फ़रमाते हैं कि "बेही खाने से जिगर और आंतों को ताक़त मिलती है और आंतों के सुद्दे ख़त्म हो जाते हैं। दिल व दिमाग़ और फेफ़ड़ों में बेही का इस्तेमाल बेहतरीन और शफ़ा बख़्श है। रेगे मसाना और सथरी बेही खाने से ख़त्म हो जाती है। खांसी के लिए बेही का मुरब्बा अकसीरे आज़म का हुक्म रखता है। बेही मुंह से ख़ून आने वाले मरीज़ों के लिए बेहद मुफ़ीद है। हामेला औरतों के लिए बेही बेहद मुफ़ीद है। बेही का मुरब्बा इस्तेमाल करने से हामेला औरतों का हम्ल गिरने का ख़दशा नहीं रहता"।

यह थी मौजूदा दौर के एक तबीब की तहक़ीक़ कि सफ़र जल क़ल्ब के लिए मुक़व्वी और ज़ोफ़े क़ल्ब के लिए नफ़ा बख़्श है। हज़रत नबी अकरम अ० स० ने चौदह सौ साल क़ब्ल आमराज़े क़ल्ब में मुब्तिला मरीज़ों के लिए सफ़र जल और उजू खजूर का इस्तेमाल तजवीज़ फ़रमाया। अब आइये देखें कि हज़रत आइम्माए ताहेरीन अलैहिस्सलाम इस सिलसिले में क्या इरशाद फ़रमाते हैं।

♦ हज़रत अमीरूल मोमनीन अलैहिस्सलाम से मनक़ूल है कि बही खाने से ज़ईफ़ दिल क़ुव्वत व तवानाई हासिल करता है, मेदा साफ़ हो जाता है, दानाई बढ़ती है, और डरपोंक आदमी दीलेर बन जाता है।

♦ इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से मनक़ूल है कि बही खाने से रंग साफ़ होता है और औलाद ख़ूबसुरत पैदा होती है। दूसरी हदीस में फ़रमाया कि जो शख़्स एक दाना बेही नहार मुंह खाए हक़ तआला चालीस दिन तक के लिए उसकी ज़बान पर हिकमत जारी कर देता है। यह भी फ़रमाया कि ख़ुदा तआला ने कोई ऐसा पैग़म्बर नहीं भेजा' जिसके बदन से ख़ूशबुए बेही न आती हो। यह भी फ़रमाया कि दाना बेही खाना ग़म वाले के ग़म को उस

(1) तिब्बे नबवी'


Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

तरह दूर कर देता है जिस तरह हाथ से पेशानी का पसीना साफ़ कर देते यह भी फ़रमाया कि जो शख़्स एक दाना बेही नहार मुंह खाया करे उस मनी साफ़ हो जाएगी। और औलाद ख़ूबसुरत पैदा होती है।

♦ हज़ूर अलैहिस्सलाम से मरवी है कि तुरन्ज शहद में मिला कर नह मुंह खाना बायसे कुवते क़ल्ब है।

♦ हज़रत इमाम ज़फ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से मनकूल है अमरूद खाने से दिल की जिला बढ़ती है। और अन्दरूनी अमराज़ को सव होता है।

जदीद तहक़ीक़ात से मालूम हुआ है कि अमराज़े क़ल्ब, कमज़ोर क़ल्ब, ऐख़तेलाजे क़ल्ब, ख़फ़क़ान, जिस्में इन्सानी में मुन्दर्जा ज़ैल विटामिन्स कमी की बिना पर ज़हूर पज़ीर होते हैं। विटामिन ए और विटामिन ई। खजू बेही और अमरूद में ये विटामिन्स मौजूद हैं।

♦ तक़वीयते क़ल्ब के लिए सेब भी नाफ़े है और मुफ़र्रहे क़ल्ब है (देखिए ब्याने सेब)

♦ मुरब्बाए सेब भी मुफ़र्रहे क़ल्ब है।

♦ शहद का इस्तेमाल भी अमराज़े क़ल्ब में फ़ायदा बख़्श है। (देखि ब्याने शहद)

♦ अमराज़े क़ल्ब में अंगूर का खाना भी मर्ज़ को कम करता है। औ क़ल्ब को फ़रहत बख़्शाता है। पैग़म्बरे अकरम अ० स० का इरशादे गिरामी है

**(51) "पाकिज़ा ख़ुशबू दिल को क़वी करती है और कुवते जिम में ज़्यादती करती है"**

अहादीसे मोतबर में है कि इतर लगाना और ख़ुशबू सूंघना पैग़म्ब के एख़लाख़े पाकीज़ा में दाख़िल है।

तहज़ीबुल इस्लाम में हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से म मनकूल है कि ख़ुशबू दिल को कुवत बख़्शती है। और जिमा की ताक़त बढ़ देती है।



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

# बवासरी व नख़रस का इलाज

मर्ज़ बवासीर की दो क़िस्में हैं एक अन्दुरूनी और दूसरी बैरूनी। उर्फ़े ाम में अन्दुरूनी बवासीर को ख़ूनी बवासीर और बैरूनी बवासीर को बादी वासीर कहा जाता है।

अन्दूरूनी बवासीर में मसों से ख़ून आता है। इजाबत के वक़्त मसे ाहर निकल आते हैं जिन से क़तरा-क़तरा ख़ून टपकता है। बैरूनी बवासीर ख़ून नहीं आता मगर इजाबत के वक़्त शदीद दर्द होता है। यह मर्ज़ तेज़ गर्म मसाले जात के इस्तेमाल, ग़ैर मुनहज़्म व सक़ील अग़ज़ीया के खाने और शराब नोशी या ज़्यादा बैठे रहने से लाहक़ होता है। क़ब्ज़ की वजह से ी बवासीर हो जाती है।

**नख़रस-** इस मर्ज़ में बुनयादी तौर पर छोटे-छोटे जोड़ माऊफ़ हो जाते ं। जैसे पांव के अंगूठे, ऐड़ीयां, हाथ की ऊँगलीयां, कलाई, टख़ने वग़ैरह ख़ून में यूरिक ऐसिड की वजह से यह मर्ज़ लाहक़ होता है। और ज़्यादा मुर्ग़न ाज़ाएं, गोशत, नशा आवर अशया व शराब से और ज़्यादा क़ब्ज़ रहने से ज़्यादा शकर के इस्तेमाल से हो जाता है। हज़रत नबी अकरम अलैहिस्सलाम ने उन दोनों अमराज़ के लिए अंजीर को शफ़ा फ़रमाया है। ईरशाद होता है कि,

**(52) "अंजीर खाओ कि यह बवासीर व नख़रस के लिए नाफ़ेह होता है और सकून पहुँचाता है।**

अंजीर खाने से दायमी से दायमी क़ब्ज़ ख़त्म हो जाता है। रेयाह ख़ारिज होती है। फ़ुज़लात जिस्म से दूर होते हैं। पसीना ख़ारिज होता है।

अंजीर वरम, तिल्ली और दर्दे तिल्ली को दूर करता है। सीना और फेफ़ड़े को ताक़त देता है। बलग़म को क़ता करता है। दिमाग़ी अमराज़ में मुफ़ीद है, मदर बोल है(1)

हज़रत अमीरूल मोमनीन अलैहिस्सलाम से मनकूल है कि अंजीर

(1) फलों से ईलाज, क़ुदरत के डाक्टर फ़ल।



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

बवासीर और दर्दे नख़रस को दूर करता है और मुजामेअत की कुवत व बढ़ाता है। हज़रत अमीरूल मोमनीन अलैहिस्सलाम से मनकूल है कि अंजी से सुददे नरम हो जाते हैं। और रियाह व क़ौलन्ज को नफ़ा पहोंचाता है। या भी फ़रमाया कि **"दिन में खाओ और रात में खाओ तो कम"**(1)

हज़रत इमामे रज़ा अलैहिस्सलाम से मनकूल है कि अंजीर मुंह क बदबू दूर करता है और हडडीयों को मज़बूत करता है। बाल बढ़ाता है मुख़्तलिफ़ क़िस्म के दर्दों को दूर करता है अंजीर खाने के बाद किसी औ दवा की ज़रूरत नहीं रहती।

क़ारेईन के इफ़ादे के लिए अंजीर के मुख़तसर ख़्वास और इस के बा में इरशादात हज़रत अमीरूल मोमनीन अलैहिस्सलाम अली इब्ने अबी तालिब और हज़रत इमाम अली इब्ने मूसी रज़ा ब्यान करते हैं। बवासीर का एक नुस्ख़ा जिसको हज़रत अली इब्ने मूसी रज़ा ने तजवीज़ फ़रमाया है वह पहले ही मेरी मुरत्तब करदा किताब तिब्बे इमामे रज़ा अलैहिस्सलाम में मौजूद है। अंजीर के इस्तेमाल के सिलसिले में एक बात अर्ज़ करता चलूँ कि वह लोग जो जिगर या मेदे के अमराज़ में मुब्तेला हों वह अंजीर इस्तेमाल न करें। अंजीर के मुसलेह आख़रोट, बादाम, और शर्बत सिकंजबीन है।

हज़ूर नबी अकरम अलैहिस्सलाम ने बवासीर व नख़रस में हर दो बीमारीयों के लिए अंजीर से इलाज करने का ब्यान फ़रमाया है। जिस का ज़िक्र ऊपर किया जा चुका है। इसी सिलसिले में एक और हदीस मुलाहेज़ा हो,

**(53) "हज़रत रसुल्लाह के पास अंजीर का एक थाल बतौरे तोहफ़ा आया। आप ने असहाब अलैहुमूस्सलाम से फ़रमाया खाओ अगर मैं कहता कि जन्नत से एक खाना आया है, तो मैं कहता यह अंजीर है। ये बवासीर को दूर करते हैं और नख़रस के लिए नाफ़े है"**

यूँ तो अंजीर के बहोत से फ़वायद हैं लेकिन यहां सिर्फ़ मुख़तसरन तज़किरा क़ारेईन की सहुलत के लिए तहरीर किया जा रहा है।

(1) तहज़ीबुल इस्लाम



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

# ख़वास अंजीर

अंजीर जिसे हज़रत नबी अकरम अलैहिस्सलाम ने जन्नत का फल ब्यान फ़रमाया है और जिस का ज़िक्र कुराने हकीम के सूरह 95 में भी आया है। अंजीर फल भी, ग़िज़ा भी और दवा भी है' बहरे रोम, शाम, फ़िलिस्तीन में इस के दरख़्त कसरत से मौजूद पाए जाते हैं।

तिब्बी एतेबार से इसका मेज़ाज़ गरम व तर है। इसमें मुन्दरजा ज़ैल अजज़िया पाए जाते हैं गुलूकोज़, प्रोटीन, विटामिन ए, विटामिन ई,

मरज़े बवासीर के लिए अंजीर बेहद नफ़ा है इसके इस्तेमाल से बवासीर के मसे ख़त्म हो जाते हैं।

अंजीर के खाने से दाअ मफ़ासिल यानी नख़रस छोटे जोड़ों के दर्दों को इफ़ाक़ा होता है।

इमाम मो० बाक़िर अलैहिस्सलाम का ईरशाद है कि बैतुलख़ला में देर तक बैठे रहने से बवासीर पैदा होती है।

इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम का इरशादे गिरामी है कि ठन्ढे पानी से इसतिन्जा करना बवासीर को दफ़ा करता है।

# बुख़ार का इलाज

बुख़ार कई अक़साम का होता है, जिसमें आम सादा बुख़ार, ईन्फ़लूएन्ज़ा, नौबती बोख़ार, मलेरीया बोख़ार, जिस्में इन्सानी में जब आक्सीजन कम हो जाती है। तो मौजूदा ख़ून ज़्यादा तेज़ी के साथ दौरा करने लगता है। ताकि जितनी आक्सीजन पहले से मौजूद है और सरे दस्त मोहय्या हो सकती है इसे ही हर गोशाए बदन में पहुँचाया जा सके। ख़ून की इस तेज़ गर्दिश से इस में हिददत पैदा हो जाती है जिसे हम बोख़ार कहते हैं। यह तारीफ़ तो सादे बोख़ार की है लेकिन आम तौर पर बोख़ार किसी और सोज़िश का नतीजा हुआ करता है। मसअलन सोज़िशे मसाना, सोज़िशे अमआ, व जिगर व तिल्ली, दिल



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

वग़ैरह।

**ईन्फ़लूएन्ज़ाः**-यह बोख़ार उमूमन मौसमे सरमा में हुआ करता है जिस की इब्तेदा मामूली ज़ोकाम से होती है। छींकें आती हैं। नाक बहती है। खांसी बोख़ार और जिस्म में अकड़ाव और दर्द होता है। जिस्म टूटता है। प्यास भी लगती है।

नौबती बोख़ारः- मौसमे गरमा में हवा में नमी की ज़्यादती की वजह से यह आरज़ा पैदा होता है। यह नमी बदन में दाख़िल हो जाती है। और इसके सबब ख़ून में पानी की मेक़दार ज़्यादा हो जाती है। और बदन में आक्सीजन की मेक़दार नहीं रहती। इस की वजह से हमी नौबती का दौरा हो जाता है, जो बदन में से पानी की ज़्यादती कम हो जाने पर रफ़ा हो जाता है। और फ़िर दोबारह जिस वक़्त मौसम में नमी के बायस बदन में पानी की मेक़दार में ज़्यादती हो जाए तो बोख़ार हो जाता है।

**मलेरिया बोख़ार-** इसे मौसमी बोख़ार भी कहते हैं। अक्सर वबाई तौर पर फ़ैलता है। इसके अलावा बोख़ार की दर्जनों क़िस्में हैं। बोख़ार एक उमवी बीमारी है और हर मुल्क और ख़ित्ते में लोगों को लाहक़ होती है। गरम मोमालिक में बोख़ार का दौर दौरा बहोत रहता है। गरमी की शिददत और सूरज की तपिश से अक्सर लू लग जाती है। जिस के नतीजे में बोख़ार का दरजए हरारत इन्तेहाई बलन्दी को पहुँच जाता है।

हज़रत नबी अकरम अ० स० ने बोख़ार के लिए ठन्ढ़ा पानी एक बेहतरीन ईलाज तजवीज़ फ़रमाया है। मोलाहेज़ा हो हदीस

**(54) "बिला शुब्हा बोख़ार जहन्नम का जोश है। इसको ठन्ढ़े पानी के ज़रीयह सर करो"**

इस हदीसे मोबारका में बोख़ार को जोशे जहन्नम से ताबीर किया गया है, जिस तरह जहन्नम में आग की तपिश होगी। उसी तरह बोख़ार की गर्मी जिस्मे इन्सानी को जहन्नम का मज़ा चखाती है।

हुकमा का फ़ैसला है कि तेज़ बोख़ार में सर पर बर्फ़ की पटटी रखना



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

और सर को ठन्ढे पानी से धोना बोख़ार की शिददत को घटाने का वाहिद ज़रीया है। इस हदीस में भी इसी अम्र की तरफ़ इशारा है।

हज़रत अमीरूल मोमनीन अली अलैहिस्सलाम से मनकूल है कि हरारते बोख़ार को ठन्ढे पानी और बन्फ़शा से मौसमे गरमा में ठन्ढा पानी बदन पर डालने से फ़रो करो। यह भी फ़रमाया कि अहलेबैत का ज़िक्र बोख़ार और हर क़िस्म के मर्ज़ से शफ़ा का और शैतानी वसवसों से ख़लासी का मोजिब होता है।

हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से मनकूल है कि बोख़ार का इलाज तीन चीज़ों से करना चाहिए, क़ै, पसीना, मुस-हल।

हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि तीन तोला क़न्द ठन्ढे पानी में घोल कर नहार मुंह पीना बोख़ार के लिए बहुत नाफ़े है।

हज़रत इमाम मूसा काज़िम ने तीसरे दिन के पुराने बोख़ार के लिए यह इलाज इरशाद फ़रमाया कि काले दाने यानी कलौन्जी को शहद में मिला कर तीन उंगलीयां चाट लिया करो। क्योंकि यह दोनों चीज़ें मुफ़ीद हैं। शहद की निस्बत तो ख़ुदा फ़रमाता है कि वह लोगों के लिए शफ़ा और काले दाने यानी कलौंजी के लिए पैग़म्बर अकरम फ़रमाते हैं कि इसमें सवाए मौत के हर बीमारी के लिए शफ़ा है।

डाक्टर गुसटेलीबोन तहरीर करता है कि मुसलमानों ने जो नये-नये तरीक़े इस्तेमाल किये उन में एक टाईफ़ाइड में ठन्ढे पानी का इस्तेमाल है। यह तरीक़ा चन्द सदीयों तक मतरूक रहने के बाद योरप में फ़िर दोबारा इस्तेमाल होने लगा है, केमीकल व फ़िज़ीकल फ़ारमुलों के भी मुसलमान ही मूजिद व मुख़तेरा हैं। उन के बाद बहोत से तरीक़े आज भी हमारे यहां इस्तेमाल होते हैं।

मुसलमानों ने दवाओं के इस्तेमाल में मख़सूस तरीक़े ईजाद किए हैं जो मुददते दराज़ के बाद आज हमारे जदीद तहक़ीक़ के उनवान से मौसूम है(1)

(1) मग़रिबी तमददुन कि एक झलक-मोअल्लिफ़ हज़रत सय्यद मुजतबा लारी-तर्जुमा



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

हज़रत इमाम रज़ा अलैहिस्सलाम का इरशादे गिरामी है कि बोख़ार वाले को चकोर का गोशत खिलाओ, क्योंकि यह पिन्डलीयों को कुवत बख़्शता है और बोख़ार को (दफ़ा) दूर करता है।

# दर्दे क़ौलन्ज का इलाज

पेट के शदीद दर्द को क़ौलन्ज कहते हैं। इस दर्द की कई वजूहात हैं, पेट में रियाह (हवा) का रूक जाना। किरमे मेदा। और किरमे आमा, ग़ैर मुनहज़म और सक़ील ग़िज़ाओं का इस्तेमाल, बद हज़मी वग़ैरह-वग़ैरह। हुज़ूरे अकरम ने दर्दे क़ौलन्ज के लिए फ़रमाया है कि।

**(55) "अंजीर का खाना क़ौलन्ज से अमान है"**

अंजीर के फ़वाएद इससे पेशतर ब्यान किए जा चुके हैं। देखें बवासीर व नख़रस का इलाज। बवासीर और दर्दे क़ौलन्ज के लिए हज़रत आइम्माए कराम ने मुनदरजा ज़ैल अदवीया को तजवीज़ फ़रमाया है।

हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से मनकूल है कि जो शख़्स ज़बीब[1] (मुनक़्क़ा) और आख़रोट खाए और अगर इसे बवासीर का आरज़ा होगा तो जाता रहेगा। क्योंकि मुनक़्क़ा और आख़रोट बाहम मिल कर बवासीर को जला देते हैं। रियाह को रफ़ा करते हैं। मेदे को नरम करते हैं और गुर्दों को गरम।

हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि कासनी के सात पत्ते और कदू का इस्तेमाल दर्दे क़ौलन्ज से महफ़ूज़ रखता है।

मोतबर हदीस में हज़रत इमाम मूसा काज़िम से मनकूल है कि दर्दे क़ौलन्ज दर्दे रियाह, वजेह मुफ़ासिल, सुस्तीए बदन और अन्दुरूनी सर्दी के लिए मुट्ठी भर मेथी और मुट्ठी भर अंजीर ख़ुश्क और उन दोनों को एक साफ़ पतीले में डाल कर इतना पानी डालें कि उन दोनों के ऊपर आजाए, फ़िर उन्हें

---

(1) ज़बीब का तहज़ीबुल ईस्लाम में अजवाइन तर्जुमा किया है और तिब्बुल नबी में किशमिश तर्जुमा किया है। अलमुनजद तिब कुवैत में ज़बीब के माअनी सुखाए हुए।



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

पका कर छान लें और एक दिन छोड़ कर थोड़ा-थोड़ा पानी इस में से पीते रहें। (इन्शाल्लाह तआला) सब शिकायतें रफ़ा हो जायेंगीं।

# नेमोनिया और पलोरीसी का इलाज

फेफड़ों की सोज़िश, फ़ेफड़ों के बोख़ार को नेमोनिया कहा जाता है। इस मर्ज़ में फ़ेफड़े की साख़्त में वरम आ जाता है। और साथ ही शदीद बोख़ार हो जाता है। कभी एक फ़ेफड़े में वरम आता है। कभी दोनों फ़ेफड़े मुतवर्रिम हो जाते हैं। मर्ज़ का ज़्यादा ग़ल्बा पांच से दस रोज़ तक रहता है। नेमोनिया में अगर ऐहतियात न बरती जाए तो फ़ेफड़ों में पानी भर जाता है। फ़ेफड़े में पानी भर जाए तो अंग्रेज़ी में पलोरीसी कहते हैं और यही ज़ातुल जनब है। अहादीस में जिन को ब्यान किया जा रहा है। ज़ातुल जनब के इलाज के लिए ब्यान किया गया है। क्योंकि ओलमाए कराम ने अहादीस का तर्जुमा करके ज़ातुल जनब को नेमोनिया तहरीर किया है और बाज़ ने जातुल जनब ही तहरीर किया है। इसलिए इस की वज़ाहत की जा रही है कि ज़ातुल जनब नेमोनिया की बिगड़ी हुई शक्ल है। ज़ातुल जबन के इलाज के लिए जो हज़रत नबी अकरम ने इलाज तजवीज़ फ़रमाया है। हदीए क़ारेईन है इस हदीस के रावी हज़ूर के मशहूर सहाबी हज़रत ज़ैद इब्ने अरक़म हैं। वह फ़रमाते हैं कि,

**(56) "हमें रसूल अल्लाह ने हुक्म दिया कि नेमोनिया का इलाज क़स्त बहरी और ज़ैतून से करें"**(1)

**क़स्त-** इस की दो क़िस्में हैं एक क़स्त बहरी (क़स्त अबीज़) दूसरे क़स्त हिन्दी (क़स्त आसूद) ज़ाएक़े के एतेबार से भी क़स्त की दो अक़साम हैं। एक शीरीं दूसरे तल्ख़, हिन्दी में इसको गोंठ कहते हैं। इसको ऊदे हिन्दी कहते हैं। (सुन्ने इब्ने माजा) क़स्त तल्ख़ इसका इस्तेमाल बैरूनी तौर पर किया जाता

(1) तिरमिज़ी शरीफ़, मुसतदरक हाकिम-तिब्बे नबवी, हाफ़िज़ नज़र अहमद।



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

है। ये रियाह को और वरम को तहलील करती है। तशंनुज को दूर करती है। दमा, नेमोनिया, और बलग़मी अमराज़ के लिए नाफ़े है। क़स्त शीरीं की जड़ ख़ुशबूदार होती है। यह दिमाग़, जिगर और आज़ा के लिए मुक़व्वी है। आसाब के लिए क़ुवत बख़्श है। दिमाग़ी अमराज़ के लिए नाफ़े है। फ़ालिज, लक़वा और राशे के लिए सूदमन्द है(1)। ज़ैतून का ब्यान आइन्दा सफ़हात में अदविया व अग़ज़िया के उनवान में किया जाएगा। नेमोंनिया के लिए हज़रत ज़ैद इब्ने अरक़म रज़ी० हज़रत नबी अकरम की एक और हदीस ब्यान फ़रमाते हैं।

**(57) "कि हज़रत रसूले ख़ुदा अलैहिस्सलाम ज़ात अलजनब (पसली के दर्द की बीमारी) के सिलसिले में ज़ैतून और दर्स की तारीफ़ फ़रमाया करते थे"**(2)

"दरस" एक घास है। यमन में पैदा होती है। इसका रंग ज़र्द होता है। थोड़ी सी ख़ुशबू और तलख़ी होती है। कपड़े रंगने के काम आती है(3)।

**दरसे क़स्त-** ज़ैतून का तेल, उन्हें पीस कर और मिला कर वरम पर लेप किया जाए। सुनने इब्ने माजह में है कि नबी अकरम अलैहिस्सलाम ने ईरशाद फ़रमाया, तुम अपने ऊपर ऊदे हिन्दी को लाज़िम कर लो। क्योंकि इसमें सात बीमारीयों कि दवा मौजूद है। जिस में से एक ज़ात अलजनब (नेमोनिया दर्दे पसली) है। तिब्बुल नबी अलैहिस्सलाम में एक हदीस में क़स्त के बारे में इस तरह तहरीर है कि,

**(58) "वो बेहेतरीन चीज़ जिससे बदन का इलाज करो। हजामत (पछहने लगवाना) कलौन्जी और क़स्त हैं"।**

हज़रत नबी अकरम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि जो शख़्स रात को सदाब खा कर सोय वह बैरूनी और अन्दूरूनी दर्दों से और ज़ात अलजनब

---

(1) तिरमिज़ी शरीफ़, मुसतदरक हाकिम-तिब्बे नबवी, हाफ़िज़ नज़र अहमद।
(2) तिब्बे नबवी' हाफ़िज़ नज़ीर अहमद बहवाला क़िताब अलमुफ़रेदात व ख़वास
(3) सुन्न इब्ने माअजह। मिशकूआत शरीफ़ व तिरमीज़ी शरीफ़।



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com
से महफ़ूज़ रहेगा। मोलाहेज़ा हो हदीसे मोबारका,

**(59) "जो शख़्स सदाब खाए इसी हालत में सो जाए वह दिमाग़ी अमराज़ और ज़ात अलजनब से महफ़ूज़ रहेगा"।**

खांसी के लिए हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने नुसख़ा तजवीज़ फ़रमाया है, मिस्तगी रूमी, गन्दर फ़ारसी, अजवाइन देसी, सियाह दाना, मसावी उलज़न लें और उन को कूट छान कर ख़ालिस शहद में ख़मीर करलें और सोते वक़्त छोटे बेर के बराबर खा लिया करें। (खांसी के लिए बेहतर है)

हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने ख़ांसी के लिए ही नुसख़ा इरशाद फ़रमाया कि अन्जदान रूमी और मिसरी दोनों हम वज़न लेकर उन का सफ़ूफ़ बना कर एक दो रोज़ खाने से खांसी जाती रहती है(1)।

हज़रत इमाम रज़ा ने फ़रमाया कि ज़ातुल जनब वाले के पेट में बहैसियत दवा बरग चोक़न्दर से बेहतर कोई चीज़ नहीं है। (2)खांसी के लिए इमाम रज़ा अलैहिस्सलाम ने जो नुसख़ा तजवीज़ फ़रमाया है वह तिब्बे इमामे रज़ा अलैहिस्सलाम में मौजूद है।

तहज़ीबुल इस्लाम में तहरीर है कि किसी शख़्स ने हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर हो कर दर्दे सीना (नेमोनिया) की शिकायत की। हज़रत ने फ़रमाया कि तू कुराने मजीद से तल्बे शिफ़ा कर क्योंकि ख़ुदा तआला फ़रमाता है *"फ़ीहा शफ़ा लमा फ़ी अलसदरो"* यानी जो कुछ तुम्हारे सीनों में है कुरान मजीद में इसके लिए शफ़ा मौजूद है।

किसी शख़्स ने हज़रत इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम से मरज़ सिल की शिकायत की। हज़रत ने फ़रमाया कि सुम्बुल, क़ाक़ला, ज़ाफ़रान, आक़रक़रहा, बज़रलख़ज, हरीक़ सफ़ेद, फ़िलफ़िल सफ़ेद मसावी अलवज़न लेकर और फ़रख़ियुन इन तमाम अदविया से दोचन्द। फ़िर यह सब अजज़ा

(1) तिब्बुल सादिक़
(2) तिब्बे इमामे रज़ा अलैहिस्सलाम


Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com


## अरकुन्निसां

अरकुन्निसां को रेंगनी का दर्द, लंगड़ी का दर्द भी कहा जाता है, यह बहुत ना मुराद मर्ज़ है। इस मर्ज़ में कूल्हे के मक़ाम पर काफ़ी गहराई में हड्डी की सतह के क़रीब वाक़े आसाब में दर्द होता है। यह आसाब वहां से निकल कर पुरी रान और टांग से होता हुआ ऐड़ी और टख़ने तक जाता है। यह दर्द बहुत शदीद होता है। अरकुन्निसां की वजह से बाज़ औक़ात आदमी चलने फ़िरने से भी महरूम हो जाता है। यह मर्ज़ कमज़ोरी, बुढ़ापा और आसाब की ख़ुशकी से होता है। हज़रत नबी अकरम अलैहिस्सलाम ने इसका इलाज दुम्बे की चकती से (जो चिकनाई होती है) करने का इरशाद फ़रमाया है। हज़रत अनस इब्ने मालिक से रवायत है कि।

**(60) "हज़रत रसूल अल्लाह अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया "अरकुन्निसां बीमारी की दवा अरबी दुम्बे की चकती में है। इसे पिघलाया जाए फ़िर इसके तीन जुज़ किए जाएं और तीन दिन में पिया जाए"।**

ये पहले ब्यान किया जा चुका है कि यह मर्ज़ आसाब की ख़ुशकी से होता है। और दुम्बे की चकती में यह ख़ासियत होती है कि इस की चिकनाई ख़ुशकी को दूर कर सकती है। आँ हज़रत ने दुम्बे की चकती को अरकुन्निसां का इलाज क़रार दिया है।

## क़ब्ज़ का इलाज

क़ब्ज़ तमाम बीमारीयों कि जड़ है। यह एक मशहुर मक़ूला है जिसे अक्सर होक्मा आतिब्बा ने ब्यान किया है। क़ब्ज़ होने के कई असबाब हैं।

(1) जिस्म में सफ़रा के गाढ़ा हो जाने के बायस जिगर के आबी



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com
नासुब में बाज़ नमकियात की कमी का वाक़े होना।

(2) बदन में रतुबात की कमी बेशी और क़ोलमों के पुट्ठों में तहरीक की कमी और ख़ुशकी के बायस क़ब्ज़ होता है।

(3) बारीक आटे की रोटी मैदे वाली अशिया का बकसरत इस्तेमाल और छीलके दार अग़ज़िय और भूसी वाले आटे का इस्तेमाल न करने के सबब भी आंतों का फ़ेल सुस्त हो जाता है।

(4) कम ग़ेज़ा, कम चलना फ़िरना, कम पानी और अदवीया की ख़ुशकी से क़ब्ज़ हो जाता है। कसरत से चाय या काफ़ी पीना, तम्बाकु नोशी, मशरूबात का मुसल्सल इस्तेमाल भी क़ब्ज़ का सबब बनता है।

(5) सक़ील अग़ज़ीया, तेज़ मसालेदार अशिया और चटपटे खानों से और सब्ज़ी जात के कम इस्तेमाल से भी क़ब्ज़ हो जाता है। इसके अलावा भी क़ब्ज़ के बहुत से असबाब हैं। अतिब्बा और होकमा ने क़ब्ज़ दूर करने के लिए बहुत से मुसहल तजवीज़ किए हैं। लेकिन आज से चौदह सौ साल पहले हुज़ूर नबी अकरम अलैहिस्सलाम ने जिस दवा को क़ब्ज़ दूर करने के लिए इलाज क़रार दिया आज की तिब भी उसी से बहरमंद हो रही है। और इसकी रद से क़ासिर रही है। और वह दवा है "सना"

सन्ने इब्ने माजा में है कि हज़रत असमा बिन्ते उमैस रजी० अल्लाह फ़रमाती हैं कि उन से हज़रत नबी अकरम ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि तुम मुसहल[1] के लिए क्या इस्तेमाल करती हो? मैंने अर्ज़ किया कि शबरम। हुज़ूर अ०स० ने फ़रमाया हार-हार ये तो बहोत गरम है बहुत गरम है। इस पर हज़रत असमा ने अर्ज़ किया कि

**(60) "मैं सना से जुलाब लेती हुँ तो हज़ूर ने फ़रमाया, अगर किसी चीज़ में मौत से शफ़ा हो सकती तो सना में होती"**

इन्सान जो ख़ुराक भी खाता है इस का असल जुज़ वे बदन बनता है। और बाक़ी फ़ुज़ला बन जाता है और यह फ़ुज़ला तमाम आंतों में से गुज़रता

(1) जुलाब


Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com
में रफ़ाए हाजत के वक़्त ख़ारिज होता है।

इरशादे नबी अकरम अलैहिस्सलाम है कि रफ़ाए हाजत के वक़्त जब बैठने लगो तो अपनें जिस्म का बोझ बाएं पांव पर डालो। मोलाहेज़ा हो हदीसे आँ हज़रत'

**(62) "हज़रत सराक़ह बिन मालिक रजी० से रवायत है कि हमको हज़रत रसूले मक़बूल अलैहिस्सलाम ने हुक्म दिया कि हम रफ़ाए हाजत के वक़्त बांए पांव पर बोझ डालें और दायां पांव खड़ा रकखें"**

अतिब्बा का कहना है कि अगर बांए पांव के ज़रीए इस फुज़ले वाली आंत पर दबाव डाला जाए तो फुज़ले के ऐख़राज में बड़ी मदद मिलती है। सारा गन्दा बराज़ बआसानी ख़ारिज हो जाता है। मेदा साफ़ हो जाता है क़ब्ज़ वग़ैरह कुछ बाक़ी नहीं रहता। तबियत में बशाशत आजाती है। गरानी और दिल गिरफ़्तगी दूर हो जाती है। और आदमी अपने आप को अज़सरे नव चाक़ व चौबन्द महसूस करता है।

# अदवीया व अग़ज़ीया

**अनार-** ख़ुदा वन्दे आलम की अता करदा नेअमतों में से एक नेअमत अनार है। जो ग़ेज़ा भी है और दवा भी है। कुराने मजीद फ़ुरक़ाने हमीद सुरह रहमान में अनार का तज़केरा मौजूद है। ख़ुदा वन्दे करीम ने अनार में बेशुमार फ़वाएद वदीयत फ़रमाए हैं। अनार एक मशहूरो मारूफ़ फल है। अनार के अक़साम तो बहोत हैं मगर तीन अक़साम मारूफ़ हैं। शीरीं, तुरश, मीख़ोश (खटटा मीठा) रंगत के ऐतेबार से अनार सुर्ख़ या सफ़ेद होता है। और इसके दाने भी अन्दर से सफ़ेद या सुर्ख़ रंग के होते हैं। शेख़ बू अली सीना की राय के मुताबिक़ शीरीं अनार मिज़ाज में सर्द तर दर्जा अव्वल है। तुरश अनार मिज़ाज में सर्द ख़ुश्क दर्जा दोम है। और खटटे मीठे अनार का मिज़ाज सर्द तर व मोतदिल होता है। अनार में मुनदरजा ज़ेल अजज़ा शामिल हैं, फ़ौलाद,



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

विटामिन बी, विटामिन सी, कैलशियम, शकर, पानी।

अनार ख़ून सालेह पैदा करता है। जिस्म की हरारत को कम कर देता है। दिल को तक़वीयत देता है। जिगर के लिए कुवत बख़्श है उन लोगों के लिए जिन के मिज़ाज में गरमी है अनार बेहद फायदे मन्द है। अनार के बेशुमार फ़वाएद हैं जिन का तज़केरा आइन्दा भी आएगा। अनार के रूहानी व जिस्मानी फ़वाएद दोनों हैं। हादीए कौनैन रसुलूस सक़लैन का इरशादे गिरामी है।

**(63) "जो शख़्स एक अनार खाता है उससे चालीस दिन शैतान गमज़दा रहता है"**

इस हदीसे मोबारका की तशरीह हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने जो ब्यान फ़रमाई है। वह आईन्दा सफ़हात में तहरीर की जाएगी। सरेदस्त यह अर्ज़ करना है कि आज से चौदह सौ साल पेशतर हज़रत ख़तमुल मरतबत ने अनार को रूहानी व जिस्मानी बीमारीयों का इलाज क़रार दिया। इसके इस्तेमाल से जिस्मानी बीमारीयां दूर होती हैं। और क़ल्ब में भी रौशनी पैदा होती है। आज के मौजूदा तरक़्क़ी याफ़्ता और तहक़ीक़ाती दौर में जब कि दुनिया माददियत की तरफ़ दौड़ रही है। और रूहानीयत को पसे पुश्त डाल रही है। इस माददी दौर में जदीद तहक़ीक़ात से अनार के बहुत से फ़वाएद सामने आए हैं। इससे क़ौले रेसालत मआब की आज भी तसदीक़ हो रही है। जदीद तहक़ीक़ात में जहां अनार में पाए जाने वाले विटामिन्स दरयाफ़्त हुए हैं वहां यह भी मालूम हुआ कि अनार तक़वीयते क़ल्ब के लिए बेहतरीन दवा है। और जिगर के लिए कुवत बख़्श है। मौजूदा दौर में योरप और अमरीका में बतौरे दवा करोनिक डाएरिया (इस्हाल मुज़मना) और करोनिक डिसेनटरी (पुरानी पेचिश) के लिए इस्तेमाल कराते हैं(1)।

हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से मनक़ूल है कि मेवा कुल एक सौ बीस क़िस्म का होता है। और उन सब में बेहतर अनार है। फ़रमाया

(1) ख़्वास अनार- हक़ीम मोहम्मद अब्दुल्लाह



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

कि तुम को अनार खाना चाहिए। कि वह भूके को सेर करता है। और पेट भरे के वास्ते हज़मे तआम है। हज़रत रसुल अल्लाह अलैहिस्सलाम को अनार से ज़्यादा कोई मेवा मरगूब न था।

हुज़ूरे अकरम कर इरशादे गिरामी है कि,

**(64) "तुम पर अनार का खाना लाज़िम है कि इस की चरबी(1) मेदे को पाक व साफ़ करती है, वह हर दाना जो मोमिन के पेट में जाता है इसके दिल को ऐसा रौशन और नूरानी कर देता है कि चालीस दिन तक शैतान और उसके वसवसे से मामून रहता है"**

हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से मनक़ूल है कि जो मोमिन एक अनार पूरा खा ले, ख़ुदा वन्दे तआला शैतान को इसकी दिल की रौशनी से चालीस दिन के लिए दूर कर देता है और जो मोमिन तीन अनार खा ले तो ख़ुदा वन्दे तआला शैतान को इस के दिल की रौशनी से एक बरस के लिए दूर कर देता है और जिस शख़्स से शैतान एक बरस दूर रहेगा। वह मुब्तिलाए गुनाह न होगा। और जो मुब्तिलाए गुनाह न होगा वह दाख़िले बहिशत होगा(2)।

अक्सर हदीस में वारिद है कि हर अनार में एक दाना बहिशत का होता है अगर इसे कोई काफ़िर खाता है तो एक फ़रिशता आकर उस दाने को ले जाता है।

ताकि वह न खा सके, इसी सबब से मुस्तहब है कि जब अनार खांए तो तन्हा खांए(3)।

यूँ तो अनार के फ़वाएद को अगर लिखा जाए तो इसके लिए एक पूरी किताब तैयार हो सकती है। यहां पर जो ख़ास-ख़ास फ़वाएद थे मुख़्तस्रन तहरीर कर दिए। और कुछ आइन्दा सफ़हात में अतिब्बा की आराएं ब्यान किए

---

(1) अनार के दानों पर जो हल्की झिल्ली होती है।
(2) तहज़ीबुल इस्लाम-तर्जुमा मौलाना मख़बूल हुसैन साहब।
(3) तहज़ीबुल इस्लाम-तर्जुमा मौलाना मख़बूल हुसैन साहब।



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

जाएंगें। अनार तक़वियते क़ल्ब के लिए अकसीर है। तक़वियते क़ल्ब रौशनीए क़ल्ब के बारे में इरशाद हज़रत नबी अकरम अलैहिस्सलाम है कि,

**(65) "जिसने एक अनार खाया ख़ुदा वन्दे तआला उस के दिल को चालीस रोज़ तक रौशन कर देता है"**

हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से मनकूल है कि तुम्हें शीरीं अनार खाना चाहिए कि इसका जो हिस्सा मोमिन के मेदे में जाता है वही किसी न किसी दर्द को खो देता है और शैतान के वसवसे को अलग कर देता है(1)।

यहीं हज़रत से दूसरी हदीस मनकूल है कि अनार के दानों को बीजों समेत खाओ कि इस तरकीब से खाना मेदे को साफ़ करता है और बाल बढ़ाता है। यह भी फ़रमाया कि अनार दोनों क़िस्म का खटटा और मीठा मेदे के लिए नाफ़े है।

हज़रत इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम से मनकूल है कि जो शख़्स जुमे के दिन एक अनार नहार मुंह खाए इस का दिल चालीस दिन तक रौशन रहेगा। और अगर दो अनार खाए तो अस्सी दिन और अगर तीन अनार खाए तो एक सौ बीस दिन, और वसवसए शैतानी भी इससे दूर रहेगा। और वह मासियत में मुब्तिला न होगा और जो मासियत में मुब्तिला न होगा वह दाख़िले बहिशत होगा(2)।

हज़रत आइम्माए ताहेरीन अलैहमूस्सलाम के इरशादात के मुताबिक़ एक वक़्त में तीन अनार तक खाए जा सकते हैं। बाज़ अतिब्बा का कहना है कि एक अनार से ज़्यादा खाने से नफ़क पैदा होता है। आइम्माए ताहेरीन के अक़वाल सदाक़त पर मुब्नी हैं। अनार को मै इसके चरबी के (हल्की झिल्ली जो दानों के ऊपर होती है) साथ खाना चाहिए। आँ हज़रत ने इसे मेदे के लिए नाफ़े करार दिया है।

---

(1) तहज़ीबुल इस्लाम-तर्जुमा मौलाना मख़बूल हुसैन साहब।
(2) तहज़ीबुल इस्लाम-तर्जुमा मौलाना मख़बूल हुसैन साहब।



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

पहले अर्ज़ किया जा चुका है कि अनार के बेशुमार फ़वाएद हैं जिन में से कुछ का तज़केरा किया जा चुका है।

मज़ीद जो अतिब्बा मोहक़्क़ेक़ीन ने ब्यान किए हैं वह ये हैं। अनार ख़ून को साफ़ करता है और ख़ून सालेह पैदा करता है। जिगर के लिए मुफ़ीद है ख़फ़क़ान क़ल्ब के लिए फ़ायदे मन्द है।

अनार चेहरे को शगुफ़्ता, जिस्म को साफ़ करता है। बदन की रगों को तक़वीयत देता है।

अनार मुलय्यन व हज़िम है, पेशाब आवर है, मर्ज़ पर यरक़ान व कमाल में नाफ़े हैं। पेट के कीड़ों का दुश्मन है।

अतिब्बा की राए- मुल्क के मुम्ताज़ हकीम उस्ताद अलहोक्माए हकीम मोहम्मद अबदुल्लाह आफ़ जहांनीयां जिन्हों ने फ़लों और अदवीया के ख़्वास पर तक़रीबन पचास से ज़्यादा किताबें तहरीर की हैं। जिस में से एक किताब "ख़्वास अनार" भी तहरीर की है, जो बाज़ार में दस्तयाब है। जिस में सर से लेकर पैर तक अमराज़ का इलाज अनार से फ़रमाते हुऐ तहरीर फ़रमाते हैं कि ज़ोफ़े क़ल्ब और ज़ोफ़े बाह के लिए यह नुस्ख़े मुफ़ीद है और मोलिद मनी है। होवाशाफ़ी। अनार का पानी एक सेर लेकर किसी बर्तन में डालें और रखदें। कुछ देर बाद तलछट नीचे बैठ जाऐगी, इसको निथार लें। और इसमें शकर एक पाव और सौंफ़ का सूफ़्फ़ू आठ माशे डाल दें और बोतल में डाल कर धूप में रकखें और वक़्तन फ़वक़्तन हिलाते रहें। एक हफ़्ते बाद इसे इस्तेमाल में लाएं। ख़ुराक तीन तोले से आध पाव तक।

डाक्टर इक़बाल कारदार तहरीर फ़रमाते हैं कि शरबते अनार क़ै, उबकाई, खटटी डकार और हिचकी के लिए मुफ़ीद है। प्यास को रोकता है। सिंघरनी को दूर करता है। जिगर को तक़वीयत पहुँचाता है। दिल की बेचैनी में फ़ायदे मन्द है(1)।

डाक्टर बलीग़उददीन जावेद तहरीर करते हैं कि अनार तुरश क़ाबिज़

(1) फ़लों से इलाज- डाक्टर ईक़बाल कारदार।



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

भी है और सर्द भी मगर इसके औसाफ़ की कोई मिसाल नहीं मिलती है। बल्ड प्रेशर, सोज़िश, और जिगर की गर्मी का कामयाब इलाज है। सफ़रा को दूर करता है। जिस्म को फ़रबा करता है। जिस शख़्स को यरक़ान हो वह अगर मुतवातिर इसे इस्तेमाल करे तो यरक़ान ख़त्म हो जाता है। अनार का रस मुसल्सल पीने से शुगर का मर्ज़ (डाएबेटीज़) ख़त्म हो जाता है। अनार शीरीं तन्दूरसती का सारटिफीकेट है(1)।

अनार के छिलके- दरख़्त की छाल और इस की जड़ों का अरक़ निकाल कर दवाओं में इस्तेमाल किया जाता है। ख़ुश्क अनार दाना चटनीयों में काम आता है अतिब्बाये क़दीम बुक़रात व सेफ़उदूस पोसत अनार, वसीग़ अनार को, ऐख़राजे कदू दाने के लिऐ इस्तेमाल करते थे।

## अंगूर

कुरान करीम में सुरए अलनहल, सुराए बनी इसराइल, सुरए अबस और कई दीगर सूरा हाए कुरान में अंगुर का तज़केरा मौजूद है। ख़ुदा वन्दे तआला ने अंगूर को रिज़्क़ हुस्ना और ग़ल्ले के साथ सामाने ज़िन्दगी क़रार दिया है। हज़रत नबी करीम अलैहिस्सलाम का इरशादे गिरामी है कि।

**(66) "तुम्हारे लिये बेहतरीन खाना रोटी है और फ़लों में बेहतरीन फ़ल अंगूर है"**

तिब्बे सादिक़ अलैहिस्सलाम में है कि पुटठों को मज़बूत करता है, दर्द को दूर करता है और रूह को फ़रहत बख़्शता है। अंगूर मुलय्यन, मुसफ़फ़िऐ ख़ून, मोक़ाव्वी ग़िज़ा है।

बाज़ होक्माए क़दीम अपने मरीज़ों का इलाज सिर्फ़ अंगूर से किया करते थे। अक्सर लोग फ़ल को सही औक़ात में इस्तेमाल नहीं करते। फ़ल खाने का सही वक़्त खाना खाने के बाद का है। अंगूर को भी खाना खाने के बाद खाना चाहिऐ। यह खाना हज़्म करने में मदद करता है और ख़ुद भी जल्दी

(1) क़ुदरत के डाक्टर फ़्रल- डाक्टर बलीग़उददीन जावेद।



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

हज़्म हो जाता है और जल्दी जुज़वे बदन बन जाता है। तिब्बे इमामे रज़ा अलैहिस्सलाम में तहरीर किया जा चुका है कि "खाने के दरमयान में पानी नहीं पीना चाहिये"।

खाने के बाद अगर आप फ़ल इस्तेमाल करते हैं तो खाना खाने के बाद पानी कम पियें। और फ़िर फल इस्तेमाल करें। अगर ज़्यादा पानी पीकर फ़िर फल को इस्तेमाल किया तो दर्दे मेदा होने का एहतेमाल है। कोई सा भी फ़ल खाने के फ़ौरन बाद पानी नहीं पीना चाहिये। इससे भी नुक़सान व ज़रर मेदा का ख़दशा होता है अलबत्ता आम खाने के बाद पानी पीना मुफ़ीद होता है।

अंगूर बहोत से अमराज़ को दूर करता है और चेहरे की पज़मुरदगी को दूर करके चेहरे पर रौनक़ पैदा करता है। और चेहरे के रंग को निखारता है। तबियत में जौलानी पैदा करता है। आंखों के गिर्द हल्कों को भी दूर करता है। ग़मोअंदोह को दूर करता है। इरशादे हज़रत ख़तमुल मरत्तबत है कि,

**(67) "हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने ख़ुदा से ग़मोअंदोह की शिकायत की, हुक्मे ख़ुदा वन्दी हुआ कि अंगूर खाओ कि वह ग़मोअंदोह को ज़ाएल करता है"**

हदीसे मोतबर में हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से मनकूल है कि हज़रत नूह अलैहिस्लाम कशती से उतरे तो आदमीयों की हडडीयां देख कर उनको बड़ा सदमा हुआ। हक़ तआला ने उन्हें वही फ़रमाई कि तुम स्याह अंगूर खाओ, ताकि तुम्हारा ग़म दूर हो जाऐ(1)।

दूसरी हदीस में फ़रमाया कि किसी पैग़मबर ने अंदोहो ग़म की शिकायत की थी उन्हें वही की गई कि तुम अंगूर खाओ(2)।

तिब्बे सादिक़ अलैहिस्सलाम में तहरीर है कि आबे अंगूर क़वा को ताज़गी, दौराने ख़ून को तहरीक, और मेदे की तकलीफ़ को दूर करता है।

---

(1) तहज़ीबुल इस्लाम।
(2) तहज़ीबुल इस्लाम।



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

जिगर, मुख़्तलिफ़ बोख़ार, बदहज़मी, अमराज़ क़ल्ब, सफ़रा, बवासीर, सिल और सरतान के लिये मुफ़ीद है। अंगूर बेहतरीन चीज़ है। जिस्म की मुख़तलिफ़ बीमारीयों का मुख़तलिफ़ तरीक़ों से इलाज किया जा सकता है।

मौजूदा दौर के माहेरीने तिब ने तहक़ीक़ की है इस के मुताबिक़ अंगूर जिस्म को मज़बूत और मोटा करता है। और दिल व दिमाग़ को तक़वीयत देता है। ताज़ा ख़ून पैदा करता है। और ख़ून को साफ़ करता है इसको खाने से ख़ून के अक्सर अमराज़ ख़त्म हो जाते हैं। अंगूर खाने से दिल की बीमारीयां दूर हो जाती है। अमराज़े सीना के लिये बेहद मुफ़ीद है। अंगूर खाने की मेक़दार 15 तोले से ज़्यादा नहीं होनी चाहिये। अंगूर के और बेशुमार फ़वायद हैं। मरीज़ाने मिरगी के लिये अंगूर बेहद मुफ़ीद है। चुनान्चे क़दीम ज़माने में योरप के हकीम लोग मरीज़ाने सरअ को अंगूर इस्तेमाल कराया करते थे। उस्ताद अलहुक्मा हकीम मोहम्मद अबदुल्लाह ने एक नुस्ख़ा तजवीज़ फ़रमाया है।

**होवाशाफ़ी-** अंगूर शीरीं उम्दा लेकर उनका रस निकाल लें। और रोज़आना दिन में तीन मरत्तबा बक़द्र पांच-पांच तोला पिलाया करें। इसका लगातार इस्तेमाल मिरगी के लिये बेहद मूफ़ीद है।

डाक्टर इक़बाल कारदार की तहक़ीक़ के मुताबिक़ अगर किसी औरत को ख़ूने हैज़ ठीक वक़्त पर जारी नहीं होता हो तो इसको चाहिये कि अंगूर का रस पूरे मौसम में इस्तेमाल करती रहे। इन्शाल्लाह हैज़ बाक़ायदा जारी हो जाएगा।

जो ख़वातीन लिकोरिया में मुब्तिला हों और हर इलाज से मायूस हो गयी हों उन्हें चाहिऐ कि अंगूर का रस एक चमचा और शहद एक चमचा इस्तेमाल करें। गरम आश्या से परहेज़ लाज़िम है।

हाम्ला ख़्वातीन अगर हर रोज़ अंगूर का रस एक चमचा सुब्ह एक चमचा शाम इस्तेमाल करें तो उन्हें गैस, क़ब्ज़, सरदर्द, चक्कर, ग़शी, मरोड़, अफ़ारा और कमज़ोरी की शिकायत न होगी। और बच्चा भी सेहत मन्द और ख़ूबसूरत होगा।



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

**(68) "अंगूर दाना-दाना करके खाओ कि यही तरीक़ा बेहतर है"**

तशरीह- अंगूर के गुच्छे में मुख़तलिफ़ किस्म के कीड़े रहते हैं और वह अंगूर के दानों के नीचे बच्चे देते हैं और ज़हरीला असर छोड़ते हैं। चुनान्चे अगर अंगूर को एक-एक दाना करके न खाया गया तो हो सकता है कोई फ़ासिद दाना या कीड़ा मुंह में जाकर मेदे में चला जाये और किसी बीमारी को जन्म दे।

## अंजीर

क़ोराने मजीद फ़ुरक़ाने हमीद में जिन फ़लों और मेवों का तज़केरा आया है उन में से एक अंजीर भी है। अंजीर से मुताल्लिक़ मुख़तसरन फ़वाएद गुज़शता सफ़्हात में तहरीर किये जा चुके हैं। अफ़ायदए क़ारेईन के लिये कुछ मज़ीद फ़वायद ब्यान किये जा रहे हैं।

अंजीर ज़ूद हज़्म है। दायमी क़ब्ज़ इसके इस्तेमाल से दूर हो जाता है। अंजीर के इस्तेमाल से वरमे तिल्ली और दर्दे तिल्ली जाता रहता है। गुर्दा मसाने की पथरी के लिऐ नफ़ा है और पेशाब आवर है ख़ुश्क खांसी में फ़ायदे मन्द है। बलग़म के ऐख़राज में भी अफ़ाक़ा होता है दिमाग़ी काम करने वालों के लिये मुफ़ीद है। इसके खाने से बदन पर गोशत बढ़ता है।

ख़ून के सुर्ख़ जर्रात में इज़ाफ़ा होता है। इरशादे हज़रत पैग़म्बर अकरम अलैहिस्सलाम है कि,

**(69) "ख़ुश्क और ताज़ा अंजीर खाया करो क्योंकि ये क़ुवते जिमाअ में ज़्यादती करती है और बवासीर को रोकती है और नख़रस के लिऐ मुफ़ीद है और पेट में ठन्डक पैदा करती है"**

हज़रत अली अलैहिस्सलाम का इरशादे गिरामी है कि,

अंजीर सुद्दों को नरम करती है क़ौलन्ज की रियाह के लिये मुफ़ीद है दिन को ज़्यादा खाया करो और रात को कम खाया करो।

हज़रत इमामे रज़ा अलैहिस्सलाम का इरशाद है कि,



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

अंजीर मुंह की बदबू दूर करती है। हड्डीयों को मज़बूत करता है। ाल बढ़ाता है और मुख़तलिफ़ क़िस्म के दर्दो को दूर करता है और अंजीर ाने के बाद किसी दूसरी दवा की ज़रूरत नहीं रहती।

तिब्बे सादिक़ अलैहिस्सलाम में है कि अंजीर बूऐ दहन को बरतरफ़ रता है, हडडीयों को मज़बूत करता है, बालों को ऊगाने में मददगार साबित आ है, दर्दे सीना और खांसी में सूदमन्द है। सिल और सरतान में नफ़ा बख़्श है।

## बेही

बेही जिसका तज़केरा गुज़शता सफ़हात में भी किया जा चुका है कि ाड़ी इलाकों में पैदा होता है। और इसका मुरब्बा भी काम करता है और सके बीज को बेहीदाना कहा जाता है।

हाम्ला औरतों के लिऐ ज़मानाए हम्ल में बही का इस्तेमाल बहुत ायदेमन्द है। बेही का मुरब्बा ज़मानाए हम्ल में इस्तेमाल करने से हम्ल गिरने ा ख़तरा दूर हो जाता है।

बेही का इस्तेमाल क़ल्ब को तक़वीयत पहुँचाता है। दिमाग़ी काम करने लों को फ़ायदा पहुँचाता है।

मुंह से ख़ून आने वालों के लिये भी मुजर्रिब है इस के इस्तेमाल से न रूक जाता है।

बेही खाने से पथरी मसाने में ख़त्म हो जाती है।

बेही का ज़िक्र अमराज़े क़ल्ब में किया जा चुका है कि यह अमराज़े ल्ब में मुफ़ीद व नाफ़े है।

इरशादे हज़रत पैग़म्बर अकरम अलैहिस्सलाम है कि,

**(70) "बेही खाओ और दूसरे को तोहफ़े में पेश करो क्योंकि वह ांखों को रोशनी बख़्शता है और दिल में मोहब्बत पैदा करता है और पनी हाम्ला औरतों को खिलाओ क्योंकि इसके खाने से बच्चे ख़ूबसुरत दा होते हैं और सीने की गरानी को ख़त्म करता है"**



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

हज़रत अली अलैहिस्सलाम का इरशाद गिरामी है कि,

बेही खाने से कमज़ोरों को कुवत हासिल होती है और मेदा मज़बूत और साफ़ हो जाता है और क़ल्ब को पाकीज़गी हासिल होती है और बुज़दिली में बहादुरी पैदा होती है।

हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र अलैहिस्सलाम का इरशाद है कि बेर खाने से मग़मूम आदमी का ग़म जाता रहता है।

हज़रत इमामे रज़ा अलैहिस्सलाम का इरशाद है कि बही खाया कर क्योंकि वह अक़्ल को तेज़ करती है।

## ख़रबूज़ा

**(71) "मेरी उम्मत की बहार अंगूर और ख़रबूज़े की मरहूनमिन्नत है'**

आज से चौदह सौ साल पेशतर हादीये बरहक़ ने ये इरशाद फ़रमाया की मेरी उम्मत की बहार अंगूर और ख़रबूज़े की मरहूनेमिन्नत है, अंगूर के सिलसिले में गुज़शता सफ़्हात में ब्यान किया जा चुका है, ख़रबूज़ा एक कसीर ताएदाद फ़ल है जिस में गलूकोज़, विटामिन ए, विटामिन बी, विटामिन सी, विटामिन डी वग़ैरह मौजूद हैं। ख़रबूज़े के फ़वायद बहुत ज़्यादा हैं। इरशादे हज़रत नबी अकरम अलैहिस्सलाम हो रहा है कि,

**(72) "तुम पर ज़रूरी है कि ख़रबूज़ा खाओ इसमें दस ख़ुबीयां हैं"**

1-गेज़ाइयत है 2-प्यास को बुझाता है 3-मोजिब नमु इन्सान है 4-दहन में ख़ुशबू पैदा करता है 5-मसाने को धोता है 6-शिकम को साफ़ करता है 7-माददाए मुनूविया बढ़ाता है 8-कुवते जामेआ बढ़ाता है 9-ठन्ढ़क को दूर करता है 10-जिस्म को चमकदार बनाता है।

आज की जदीद साइंस ने अपनी जदीद तहक़ीक़ात व रेसर्च के बाद आँ हज़रत के इस क़ौल को तस्लीम किया है कि ख़रबूज़े में बहुत से विटामिन्स पाये जाते हैं, और ख़रबूज़े के मुनदरजाज़ैल फ़वायद सामने आये हैं।

1- ख़रबूज़े में बेपनाह ग़ेज़ाइयत है और जिस्म को फ़रबा बनाता है,



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

रबूज़े के इस्तेमाल से जिस्म की ख़ुश्की दूर होती है, रगों और पुट्ठों की दरती लचक होती है। जिस्म में नुमू पैदा करता है और आम जिस्मानी मज़ोरी को दूर करता है।

2- ख़रबूज़े में एक ऐसा जुज़ पाया जाता है जो दातों को साफ़ सुथरा ौर दांतों की जिल्द को बरक़रार रखता है और दांतों की बेशतर तकालीफ़ नजात दिलाता है।

3- दर्दे गुरदा में ख़रबूज़ा नाफ़े है। और गुरदे व मसाने की पथरी को ज़ा-रेज़ा कर देता है, मेदे की तेज़ाबियत, बदहजमी और सीने की जलन को र करता है, क़ब्ज़ को भी दूर कर देता है।

4- आइय्यामे हम्ल में अगर इस्तेमाल कराया जाये तो बच्चा तन्दूरसत ौर ख़ुबसूरत पैदा होगा। औरतों के आइय्याम की बेक़ायदगी और कमी में ी मुफ़ीद है। अइय्यामे रज़ाअत में अगर इस्तेमाल कराया जाऐ तो दूध ज़्यादा दा होता है।

यह मुनदरजा बाला फ़वायद मौजूदा अतिब्बा व होक्मा व माहेरीन ने ान किये हैं। आइये अब देखें कि आँ हज़रत अलैहिस्सलाम के हक़ीक़ी जां शीन हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने आज से तक़रीबन तेरह ी साल पहले ख़रबूज़े के बारे में क्या इरशाद फ़रमाया है।

हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से मनक़ूल है कि ख़रबूज़ा ाओ की इस में बहुत फ़ायदे हैं एक तो इसमें किसी क़िस्म की ख़राबी व ीमारी नहीं।

अलावा इसके वह खाने की चीज़ भी है और पीने की भी, मेवे का मेवा ौर फूल का फूल, ख़ूशबु की चीज़ भी है मुंह को भी साफ़ करता है। रोटी ; साथ खाने की भी चीज़ है, क़ुवते जामेआ को ज़्यादा करता है। मसाने को ाफ़ करता है, पेशाब ज़्यादा लाता है और रेग मसाना को रफ़ा करता है।

ख़रबूज़ा एक ऐसा फल है कि जिसका छिलका, गूदा, बीज सब ही ारआमद हैं। ख़रबूज़े के सूखे हुऐ छिलके गोशत को जल्दी गला देते हैं। गूदा



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

खाने से प्यास बुझती है और ग़िज़ाइत मिलती है। बीज इसके मुख़्वीऐ दिम हैं। और क़ुवते हाफ़्ज़ा को तेज़ करते हैं। हज़रत नबी अकरम अलैहिस्सल ने ख़रबूज़े को छुरी से काट कर खाने से मना फ़रमाया है।

**(73) "ख़रबूज़े को दांतों से खाओ छुरी से फाकें मत बनाओ। ब ये बरकत वाला और पाकीज़ा फ़ल है। दहन व क़ल्ब को पाक व सा करने वाला है, दांतों को चमकदार बनाता है। ख़ुदा को इस की ख़ुश अंबर से भी ज़्यादा पसन्द है। इस का पानी आबे कौसर है। और इस क गूदा फ़िरदौस से है। इसकी लज़्ज़त जन्नत से है और इस का खाना इबाद है"।**

एक और हदीस में इरशादे हज़रत ख़तमुल मरतबत हो रहा है।

**(74) "ख़रबूज़े को अपना मेवा क़रार दो, कि वो जन्नत का मेव है और इसमें हज़ार बरकतें हैं। और हज़ार रहमतें हैं।**

आँ हज़रत अलैहिस्सलाम के दहने मुबारक से निकले हुऐ अलफ़ाज़ पर शको शुब्हा करने वाला ख़ारिज अज़ इस्लाम है, और अब ख़रबूज़े के बा में लिखना बेसूद है, जिस मेवे में हज़ार-हज़ार बरकतें और रहमतें हों तो इसमें शफ़ा ही शफ़ा है।

ख़रबूज़ह खाने का बेहतरीन वक़्त खाना खाने से क़ब्ल का है। नहार मुंह ख़रबूज़ा नहीं खाना चाहिये।

हज़रत इमामे रज़ा अलैहिस्सलाम से मनक़ूल है कि नहार मुंह ख़रबूज़ा खाने से फ़ालिज पैदा होता है(1)। नहर मुंह यानी सुब्ह सोकर उठते ही नहीं खाना चाहिऐ।

ख़रबूज़े के बहोत से फ़वायद होक्मा ने ब्यान किऐ हैं उनमें से सिर्फ़ डाक्टर बलीग़उददीन जावेद के तहरीर करदह चन्द फ़वाएद दर्ज किये जाते हैं।

ख़रबूज़े के छिलके उबाल कर पीने से हैज़ खुल कर आता है।

ख़रबूज़े के बीज पीस कर चेहरे पर मलने से झाइयां दूर हो जाती हैं

(2) तिब्बे इमामे रज़ा।



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

और रंग निखरता है।

ख़रबूज़ा सुज़ाक के ज़ख़्म को दूर कर देता है। और सुज़ाक का कामयाब इलाज है। ख़रबूज़े के बीज खाने से कुवते बाह में इज़ाफ़ह होता है।

ख़रबूज़े में रतूबत ज़्यादा होती है इसलिये नहार मुंह ख़रबूज़ह खाना दुरूस्त नहीं होता।

ख़रबूज़ा खाने के बाद पानी पीने से हैज़ा हो जाता है(1)।

**(75) "जो हाम्ला औरतें ख़रबूज़ा खायेंगीं तो इसका बच्चा ख़ूबसूरत पैदा होगा"।**

**(76) "खाना खाने से क़ब्ल ख़रबूज़ा खाना दर्दे मेदा को दफ़ा करता है (मेदे को धो देता है) बीमारीयों से।**

## खजूर

खजूर की यों तो बहोत सी अक़साम हैं और उनकी तासीर भी अलग-अलग है, बेहतरीन खजूर अरब की होती है। अरब की खजूर में अंबरीन, अजूह, और बरनी मशहूर हैं और बहुत उम्दा हैं। खजूरें बसरह (इराक़) की भी बहुत अच्छी और लज़ीज़ होती हैं। ज़ेरे नज़र मज़मून में अजूह और बरनी खजूर का तज़केरा किया जाना मख़सूद है। अजूह खजूर का ज़िक्र इससे पेशतर अमराज़े क़ल्ब में भी आचुका है। इरशादे हज़रत नबी अकरम अलैहिस्सलाम है कि,

**(77) "और अजूह जन्नत का फ़ल है। इसमें ज़हर से शफ़ा याबी की तासीर है"।**

अजूह खजूर अतराफ़े मदीना में पैदा होती है(2)। आँ हज़रत अलैहिस्सलाम ने इसको ज़हर से शफ़ा याबी की तासीर क़रार दिया है।

हज़रत इमाम ज़ाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है कि अजूह

(1) क़ुदरत के फ़ल-डाक्टर बलीग़उददीन जावेद।
(2) तहज़ीबुल अलइस्लाम।



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

खजूर दफ़ाए सम्मीईत है और बहोत सी बीमारीयों को दूर करने के लिये मुफ़ीद है(1)।

हज़रत इमाम ज़ाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से मनकूल है कि अगर कोई शख़्स सात दाने ख़ुरमह अजूह के नहार मुंह खा लिया करे तो इसे कोई ज़हर या मर्ज़ या सहर या भूत या पलीद ज़रर नहीं पहोंचा सकता(2)।

एक और हदीस में हज़रत इमाम अलैहिस्सलाम ही से मनकूल है कि जो शख़्स अजूह की सात दाने सोते वक़्त खा लिया करे अगर इसके पेट में कीड़े होंगे तो वो मर जायेंगें(3)।

जिस क़द्र इन्सानी जिस्म को विटामिन और दीगर अजज़ा की ज़रूरत होती है वो सभी खजूर में क़ुदरत ने पैदा किये हैं। इस की बायस अरब सहराओं में सफ़र करने वाले क़ाफ़्ले महीनों सिर्फ़ खजूर से गुज़ारह करते रहे हैं और करते हैं। और उनकी सेहत भी ग़ेज़ाई कमी के बायस मुतासिर नहीं होती।

ख़जूर ख़ूने सालेह पैदा करती है। मेदे को ताक़तवर बनाती है और खाना हज़्म करती है। सीना और फ़ेफ़ड़ों को बेपनाह ताक़त देती है और बलग़म को दूर करती है। खजूर मसाने की पथरी तोड़कर मिस्ले रेत ख़ारिज कर देने में अपना जवाब नहीं रखती(4)।

बरनी खजूर के बारे में हज़रत नबी अकरम अलैहिस्सलाम का इरशादे गिरामी मोलाहेज़ह हो।

**(78) "हज़रत अबू सईद क़ुउदरी रज़ी० ब्यान करते हैं कि हज़रत रसूल अल्लाह ने फ़रमाया तुम्हारी खजूरों में बेहतरीन खजूर बरनी है वो रोग दूर करती है और इसमें कोई रोग नहीं"**

---

(1) तिब्बे सादिक़।
(2) तहज़ीबुल अलइस्लाम।
(3) तहज़ीबुल अलइस्लाम।
(4) क़ुदरत के फ़ल-डाक्टर बलीग़उददीन जावेद।



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

बरनी खजूर स्याह के बजाए भूरे रंग की होती है इसका साईज़ बड़ा ौर मिठास ज़्यादा होती है, गूदा ज़्यादा और गुठली छोटी होती है। इसलिये से ज़्यादा पसन्द किया जाता है। हज़ूर ख़तमी मरतबत ने इसे बीमारीयों का ाज बताया है।

हज़रत इमामे रज़ा अलैहिस्सलाम का इरशादे गिरामी है कि जो शख़्स वासीर से महफ़ूज़ रहना चाहता हो इसे चाहिये कि हर शब सात दाने बरनी ुरमे गाय के घी में खा लिया करे, और अपने ख़ूसयों पर रोग़न चमबेली ो मालिश किया करे।

खुरमा (खजूर) अगर इसको दूध में पका लें तो कुवते बाह के लिये होत मुफ़ीद है। आंतों खुश्क खांसी में और अददरारूल बोल को भी फ़ायदा ख़्श है।

खुरमा, तुरश व ख़ाम बराए जिरयान ख़ून, असहाल और मसूढ़ों को भी नफ़ा पहोंचाता है। सरतान को आराम देता है।

वो औरतें जो ज़चगी के मरहले से गुज़र रही हों उन के लिये बच्चा ैदा होने से क़ब्ल चन्द ख़जूरें या छोहारे खा कर ऊपर से ठन्ढ़ा पानी पी लेने से बच्चा बा आसानी पैदा होता है।

हदीसे मोतबर में मनकूल है कि अगर चन्द क़िस्म के खाने जनाब रसूल अल्लाह के सामने लाये जाते जिन में खुरमा भी होता था। तो हज़रत इब्तेदा खुरमे से फ़रमाते थे।

हज़रत अली इब्नुल हुसैन अलैहिस्सलाम उस शख़्स को दोस्त रखते थे जो खुरमा उस सबब से पसन्द रखता था कि जनाब रसूल अल्लाह अलैहिस्सलाम का मरगूब था।

हज़रत इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि दरख़्ते खुरमे की लकड़ी का धुआं हशरातुल अर्ज़ और ज़हरीले जानदारों को बेकार कर देता है।

हदीस में मनकूल है कि किसी शख़्स ने हज़रत इमाम अली नक़ी



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

अलैहिस्सलाम से गन्दा दहनी की शिकायत की, फ़रमाया ख़ूरमाए बरनी खाया कर ऊपर से पानी पिया करो, इस अमल से वो मोटा ताज़ा हो गया। और रतूबत इस के मिज़ाज पर ग़ालिब आ गई। तब रतूबत की शिकायत की। हज़रत ने फ़रमाया ख़ूरमाए बरनी खा कर ऊपर से पानी न पिया कर, इस अम्ल से वो बिल्कुल सही अलमिज़ाज हो गया।

हज़रत पैग़मबर अकरम अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में ख़जूर का तबक़ बतौरे हदिया पेश किया गया तो आप ने फ़रमाया इस वक़्त ख़जूर की सिफ़ात ब्यान करते हुऐ फ़रमाया,

**(79) "खजूर पुश्त को मज़बूत करती है, कुवते मुजामेअत में इज़ाफ़ा करती है, कान और आंख की कुवतों को बढ़ाती है, और खाने को हज़्म करती है और दहन को ख़ूशबूदार बनाती है"।**

पैग़मबर अकरम अलैहिस्सलाम का इरशादे गिरामी है कि ज़चा को चाहिये कि विलादत के रोज़ खजूर के सात दाने खाये, ख़ुदा वन्दे आलम ने मरियम अलैहिस्सलाम के लिये विलादत के वक़्त ख़जूर ही का इन्तेज़ाम किया था।

हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम का इरशाद है कि "जिस शख़्स ने सोते वक़्त अजूह खजूर के सात दाने खा लिये तो अजूह खजूर इसके पेट के कीड़ों को ख़त्म कर देगी। नीज़ फ़रमाया, खजूर बलग़म को दफ़ा करती है।

**(80) "जिस के पास खजूर है तो उससे आफ़्तार करे और जिस के पास न हो तो पानी से आफ़्तार करे क्योंकि वो पाक करने वाला है"।**

## फ़लों को खाना चाहिये

हर मौसम के फ़ल ख़ुदा वन्दे करीम की एक ख़ास नेअमत में से हैं। कुदरत ने हर फ़ल में कोई न कोई ख़ासियत ज़रूर रखी है। हर फल में कोई न कोई विटामिन पाया जाता है, ये विटामिन्स जिस्मे इन्सानी को तक़वीयत



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

हुँचाते हैं और गिरती हुई सेहत को बहाल करते हैं इसलिये हर इन्सान को र मौसम का फ़ल खाना चाहिये। क्योंकि इस में ग़िज़ा भी है और दवा भी, र मौसम के फ़ल इस्तेमाल करने के बारे में इरशाद हज़रत पैग़म्बर अकरम लैहिस्सलाम है।

**(81) "तुम पर लाज़िम है हर फ़सल के ताज़ह फ़लों का खाना कि ो जिस्मे इन्सानी को सेहतमन्द करते हैं और ग़मों को दूर करते हैं। और ाख़िर फ़सल में उन का खाना तर्क कर दो कि वो जिस्म के लिऐ मोजिब र्ज़ हैं"।**

इस हदीसे मोबारका से मालूम हुआ की हर मौसम के फ़ल को ज़रूर ाना चाहिये और फ़सल ख़त्म होने से पहले इस को तर्क कर देना चाहिये। रख़्तों पर जो फ़ल होते हैं वो कई-कई माह बाद पकते हैं उन फ़लों पर उस ौरान कीड़े मकोड़े बोल व बराज़ करते हैं जिन से बहोत सी बीमारीयां पैदा ोने का ख़तरा लाहक़ होता है, इस लिऐ फ़लों को धो कर खाना चाहिऐ।

हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम का इरशादे गेरामी है कि "हर फ़ल पर एक क़िस्म का ज़हर होता है"।

आज से तेरह सौ साल पहले हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने बग़ैर किसी ख़ुरदबीनी आलात के ये बतला दिया कि फ़लों को धो कर ाओ। इस पर एक क़िस्म का ज़हर होता है ये ज़हर ग़ालेबन कीड़े मकोड़ों का बोल व बराज़ है।

## शहद

ख़ुदा वन्दे आलम ने शहद की शक्ल में एक ऐसी नेअमत अता फ़रमाई है जो एक इन्तहाई मुफ़ीद दवा भी है और उम्दा ग़ेज़ा भी है। शहद एक ऐसी लज़ीज़ और मज़ेदार ख़ूराक है जिस को हर मुल्क और हर तब्क़े के लोग इस्तेमाल करते हैं।

बाज़ तिब्बी तहक़ीक़ात से मालूम होता है कि शहद का इस्तेमाल



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com
तक़रीबन ७० हज़ार साल क़ब्ल से होता चला आ रहा है। और आज तक जारी व सारी है, तौरेत में शहद का तज़केरा किया गया है। शहद अपनी बेश बह कुदरती मिठास और विटामिन्स की वजह से इन्सान की आम जिस्मानी हालत को बेहतर बनाने में बड़ा मददगार साबित होता है।

शहद बेशतर फ़वायद का हामिल एक कुदरती और लाजवाब टानिक है। अतिब्बा क़दीम व जदीद के नज़दीक इस कुदरती टानिक के मुक़ाबले में कोई विटामिन नहीं हैं और इसी वजह से दोनों शहद की बेबहा अफ़ादियत और नाफ़ेह होने पर मुत्ताफ़िक़ हैं। कोई तरीक़ाए इलाज ऐसा नहीं कि जिसमें में शहद की ख़ूबीयां मुसल्लम न हों।

खुदा वन्दे तआला ने कुराने मजीद फ़ुरक़ाने हमीद में शहद को लोगों के लिये शफ़ा क़रार दिया है और *"फ़ी हा शफ़ा उन्नास"* कहा है। हज़रत नबी अकरम अलैहिस्सलाम ने शहद की तारीफ़ की और बहोत से अमराज़ का इलाज क़रार फ़रमाया है। इन सफ़हात में आँ हज़रत की वो अहादीस पेशे ख़िदमत हैं जिस में आँ हज़रत ने शहद के मुताल्लिक़ दवा व ग़िज़ा के तौर पर इस्तेमाल की हिदायत फ़रमाई है।

**(82) "शहद का इस्तेमाल लाज़िम क़रार दो मुझे इस ज़ात की क़सम है कि जिस के हाथ में मेरी जान है कि जिस घर में शहद हो, फ़रिशते इस घर वालों के लिऐ ख़ुदा से बख़शिश तलब करते हैं"।**

इस हदीसे मोबारका से मालूम हुआ कि शहद एक पाक व साफ़ व तय्यब दवा है जिसके रूहानी व जिस्मानी दोनों फ़वायद हैं। और जिस्म व रूह की ग़ेज़ा है और इसके फ़वायद बेशुमार हैं। होक्मा व अतिब्बा के नज़दीक जो इस के तिब्बी फ़वायद ब्यान किये गये हैं उन का तज़केरा आइन्दह सफ़हात में किया जायेगा।

कई सन्दों से आइम्माए ताहेरीन अलैहिस्सलाम से मनक़ूल है कि शहद से बेहतर कोई चीज़ नहीं जिसे मरीज़ शफ़ा पाने के लिऐ इस्तेमाल करें। क्योंकि वो हर दर्द के लिऐ शफ़ा है। और कुरान मजीद की तिलावत करना



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

और कन्दर[1] चबाना भी दफ़ाए बलग़म और नाफ़ेह हाफ़िज़ा है[2]।

हमारे मुल्क में मौसमे सरमां में हर एक को नज़ला, ज़ुकाम, खांसी, बुख़ार और सीने के अमराज़ सर्दी लग जाने की वजह से लाहक़ हो जाते हैं। और आम तौर से छोटे बच्चों को फ़ौरन ठन्ढ़ लग जाती है जिस की वजह से खांसी बलग़मी तकालीफ़ बढ़ जाती है और बाज़ को नेमोनेया भी हो जाता है, ऐसे मौक़े पर शहद अगर एक चाय का चम्चा पिला दिया जाऐ बड़ों को और आधा चम्चा बच्चों को तो मर्ज़ में फ़ौरन ऐफ़ाक़ा होता है। हज़रत नबी अकरम अलैहिस्सलाम का इरशादे गिरामी मोलाहेज़ह हो।

**(83) "शहद बेहतरीन मशरूब है वो दिल को साफ़ पाक करता है और सर्दी के असरात और सीने की रतूबत को ख़त्म कर देता है"।**

हदीसे मोबारका से वाज़ेह हुआ कि शहद अमराज़ सद्र के लिऐ नाफ़ेह है और बलग़म को रफ़ा करता है, मुफ़र्रह क़ल्ब है, और मुसफ़ी ख़ून है।

जरमनी के मशहूर माहिर अमराज़े क़ल्ब डाक्टर कोच दिल की तक़वीयत के लिऐ शहद तजवीज़ करते हैं उन का कहना है कि जो असर दाने और जई घोड़े के लिऐ रखती है वही असर शहद दिल के लिऐ रखता है।

मशहूर व मुम्ताज़ माहिरे अग़ज़िया आरनाल्ड लुरयन्ड का कहना है कि शहद दिल के आसाब को तक़वीयत बख़्शने का मोअससिर ज़रीया है, यों समझिये कि दिल के लिऐ नई जिन्दगी रखता है। उनसे जब भी कोई दिल के लिऐ बेहतरीन ग़ेज़ा तजवीज़ करने के लिऐ कहा तो उन का एक ही जवाब हमेशा होता कि शहद खाओ।

जदीद तिब्बी तहक़ीक़ात ने इन्केशाफ़ किया है कि शहद ऐन्जाएना (दर्दे क़ल्ब) के लिऐ मुफ़ीद है और इस का इस्तेमाल कोलेस्ट्रोल के असरात को कम करता है और ख़ून को पतला रखता है और चरबी ज़्यादा पैदा नहीं होने देता। अमराज़े क़ल्ब के ज़ैल में तहरीर किया जा चुका है कि ख़ून में जब ज़्यादा

---

(1) "कन्दर" एक क़िस्म का गोंद है।

(2) तहज़ीबुल इस्लाम।



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

गाढ़ा पन आ जाता है तो क़ल्ब के अमराज़ पैदा हो जाते हैं। मौजूदा दौर के माहेरीने अमराज़े क़ल्ब और जदीद तहक़ीक़ात से वाज़ेह हुआ कि शहद में अमराज़े क़ल्ब के दफ़इये के लिऐ दवाइया असरात मौजूद है और यही बात आज से चौदह सौ साल पहले हादीये बरहक़ हज़रत नबी अकरत अलैहिस्सलाम ने फ़रमाई कि शहद में शफ़ा ही शफ़ा है। इस का इस्तेमाल लाज़िम कर लो। एक और मक़ाम पर इरशादे गेरामी होता है। सनन इब्ने माजह में से जिसे नक़्ल किया जा रहा है।

**(84) " हज़रत रसूले करीम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया जो शख़्स हर महीने सुब्ह के वक़्त तीन दिन शहद चाटे उसे कोई बड़ी तकलीफ़ नहीं पहोंचती है"।**

हज़ूरे अकरम अलैहिस्सलाम के इरशाद के मुताबिक़ अगर महीने में तीन दिन शहद चाटा जाऐ तो कोई बड़ी तकलीफ़ नहीं पहोंचेगी। मौजूदा दौर में तीन अमराज़ को बहोत बड़ी तकलीफ़ समझा जाता है। आमराज़े क़ल्ब, ज़ायबतीस और गैस टराबुल शहद में ये ख़ासियत है कि इन तीनों बड़ी तकलीफ़ के लिऐ न सिर्फ़ नाफ़ेह है बल्कि अगर हर माह इस का तीन मरतबा कम अज़ कम इस्तेमाल किया जाता रहे तो उन तीनों तकालीफ़ से महफ़ूज़ रहने का बेहतरीन ज़रीया है। शहद के बारे में होक्मा इस अम्र पर मुत्ताफ़िक़ हैं कि ये अमराज़े क़ल्ब के लिऐ सूदमन्द है। मुक़व्वीऐ दिमाग़ व हरारते ग़ज़ीज़ी है। साइसं के इस तरक़्क़ी याफ़्ता दौर में भी डाइवेटीज़ जैसे मूज़ी मर्ज़ पर क़ाबू नहीं पाया जा सका। सिर्फ़ वक़्ती फ़वायद के लिऐ इन्सूलीन के इन्जेकशन से मरीज़ की शकर को कम किया जाता है। और मिठास वाली आशिया का परहेज़ कराया जाता है, लेकिन ये ऐज़ाज़ सिर्फ़ शहद को हासिल है। बावजूद मिठास के ये डाइवेटीज़ के लिऐ बेहतरीन दवा और ग़ेज़ा है और इससे शफ़ा होती है। शदह इस के अलावा ज़ोफ़े जिगर, यरक़ान में मुफ़ीद है, रूके हुऐ पेशाब को जारी करता है पथरी को निकालता है और मसाने में ताक़त पैदा करता है।



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

गैस टराबुल के लिऐ भी शहद फ़ायदेमन्द है। इस का इस्तेमाल रेयाहों ा ख़ारिज करता है, मेदे को धोता है और इसको जिला बख़्शता है। इसके ज़लात को रफ़ा करता है। क़ब्ज़ को दूर करता है और सुद्दों को निकालता और मेदे का ऐतेदाल क़ायम रखता है, शहद के मुसल्सल इस्तेमाल से मेदे ो जलन और तेज़ाबियत की ज़्यादती भी ठीक हो जाती है। ख़ुदा वन्दे तआला शहद में ये ख़ासियत रखी है कि ये ज़ख़्मों को मुन्दमिल करता है। इसलिऐ लसर (ज़ख़्मे मेदह) के मरीज़ों के लिऐ शफ़ा है।

एक रवायत में है कि किसी शख़्स ने हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ लैहिस्सलाम से क़राकुर मेदा (पेट में गड़गड़ाहट, इज्तेमाई रियाही) की शिकायत की। आप ने फ़रमाया कि काला दाना शहद में मिला कर खालो।

फ़िक़ह अररज़ा में हज़रत इमामे रज़ा अलैहिस्सलाम से मनक़ूल है कि ज़रत ने फ़रमाया कि शहद में हर मर्ज़ के लिऐ शफ़ा है और जो शख़्स नहार ुंह हर रोज़ शहद एक उंगली भर खा लिया करे इस का बलग़म भी रफ़ा ो जाऐगा और सौदा भी जाता रहेगा। ज़ेहन भी साफ़ हो जाऐगा और हाफ़्ज़ा भी क़वी होगा। और अगर "कन्दर" के साथ खा कर ठन्ढ़ा पानी पिये तो रारत को सकून होगा। सफ़रा की इस्लाह हो जाऐगी। खाना हज़्म होने लगेगा। और फ़मे मेदा में जो फ़ासिद ख़लतिस जमा हो गयी हों उन का फ़ाइया हो जाऐगा।

शहद में एक ख़ास ख़ूबी ये है कि जरासीम कुश है न सिर्फ़ जरासीम को मारता है बल्कि जरासीम की पैदाइश को भी रोकता है। माहेरीन ने बरसहा बरस की मेहनत व काविश के बाद ये तहक़ीक़ की है कि शहद से ज़्यादा मोसर दवा जरासीमों के मारने के लिऐ कोई भी नहीं है। माहेरीन ने ये साबित किया है कि शहद में ये सिफ़त है कि ये नमी को अपने अन्दर जज़्ब कर लेता है। और जरासीम (बेकटेरिया) के जिस्म से तमाम पानी चूस लेता है जिस से वो मुर्दा हो जाते हैं। और इस तरह जरासीम जिस्मे इन्सानी से फ़ना हो जाते हैं। ये पहले ब्यान किया जा चुका है कि (ज़ख़्मे मेदा) अलसर को शहद



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

मुनदमिल करता है। और इसकी यही जरासीम कश कुवत है जिस से ज़ख़्म मुनदमिल हो जाता है। शहद बोख़ार और नेमोनिया के जरासीम को भी नेस्तो नाबूद करता है। हज़ूरे अकरम अलैहिस्सलाम ने आज से चौदह सौ साल पहले इरशाद फ़रमाया की।

**(85) "शहद शफ़ा है कि वो बादी और बोख़ार के असरात को दूर रखती है"।**

मौजूदा दौर के माहेरीन जरसूमयात ने जब तजज़िया किया तो मालूम हुआ कि मेआदी बोख़ार (टाईफ़ाइड) के जरासीम शहद में 48 घंटों के अन्दर मर जाते हैं और पेचिश के जरासीम दस घंटे में, नेमोनिया और फेफ़ड़े के दीगर अमराज़ खांसी वग़ैरह के जरासीम 48 घंटे से 96 घंटों के अन्दर-अन्दर हलाक हो जाते हैं। ये तो था साइंसी तजज़िया जिस से मालूम हुआ कि शहद बोख़ार के लिऐ मुफ़ीद दवा है। और साथ-साथ ही बादी के असरात को ख़त्म करके जिस्म को मोटापे से महफ़ूज़ रखता है। शहद कुवते हाफ़्ज़ा के लिऐ भी मुफ़ीद है, आँ हज़रत अलैहिस्सलाम का इरशादे गेरामी है कि।

**(86) "जो कोई कुवते हाफ़्ज़ा बढ़ाना चाहे तो उसको चाहिऐ कि वो शहद खाऐ"।**

किताब अलमफ़रदात व ख़वास अलअदविया के हवाले से तिब्बे नबवी अलैहिस्सलाम में शहद के बारे में तहरीर है कि "जदीद तिब्बी तहक़ीक़त की रू से ये अम्र साबित हो चुका है कि शहद बेशुमार अमराज़ की दवा है। इसमें विटामिन (हयातीन) अलिफ़, बे, जीम मुख़्तलिफ़ मेक़दारों में मौजूद हैं। शहद मुलय्यन है। रेयाह को तहलील करने वाला और ताअफ़्फ़ुन दूर करने वाला है। शहद बदन को ताक़त और फेफ़ड़ों को कुवत बख़्शाता है। लख़वा और फ़ालिज का इलाज है। सफ़ाई ख़ून और अमराज़े क़ल्ब के लिऐ नाफ़ेह है। आंखों की बीमारीयों और जिलाए बसर के लिऐ बेहतरीन दवा है। शहद के इस्तेमाल से हाफ़्ज़ा तेज़ हो जाता है। दिमाग़ी तकान दूर हो जाती है। दिमाग़ी काम करने वालों के लिऐ शहद एक मुफ़ीद टानिक है।



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

तहज़ीबुल इस्लाम में लिखा है कि "आँ हज़रत अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि हक़ तआला ने शहद में एक ख़ास बरकत अता की है यानी इसमें तमाम अमराज़ के लिऐ शफ़ा है और सत्तर पैग़म्बरों ने इसे दोआऐ बरकत की है"।

हज़रत इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि जिस शख़्स का नुत्फ़ा मुताग़इय्यर हो जाऐ यानी इसकी औलाद न पैदा होती हो तो इसको चाहिऐ कि दूध में शहद मिला कर पिया करे।

मशहूर ज़माना तबीब बोक़रात जिस को तिब की दुनिया में बाबाए तिब के नाम से याद किया जाता है। सांस की तंगी (तंगीए नफ़्स) के मरीज़ों को शहद इस्तेमाल कराता था। और तवील उम्र के ख़्वाहिश मन्द लोगों को शदह खाने की हिदायत करता था।

हकीम जालीनूस शहद की मुर्दा मक्खियों से गन्जेपन का इलाज करता था। शहद के ख़्वास सर से लेकर पांव तक तहरीर करने के लिऐ पूरी एक केताब तहरीर की जा सकती है। यहाँ सिर्फ़ ख़ास-ख़ास ख़्वास ब्यान कर दिऐ गऐ हैं। जो हज़रात मज़ीद ख़्वास पढ़ना चाहें वो शहद से जिन किताबों का हवाला दिया गया है वो पढ़ सकते हैं, और अपनी मालूमात में इज़ाफ़ा कर सकते हैं। आख़िर में ये बात और मज़ीद तहरीर कर दी जाऐ कि शहद को इस्तेमाल करने से पहले परख लिया जाऐ कि शहद ख़ालिस है कि नहीं। शहद ख़ालिस की पहचान और शनाख़्त के बारे में तिब्बे इमामे रज़ा अलैहिस्सलाम में तहरीर किया जा चुका है। यहां पर भी कुछ बातें तहरीर की जा रही हैं।

शहद में मक्खी डुबो कर निकाल दी जाऐ। अगर वो पर साफ़ करके उड़ जाऐ तो शहद असली है।

शहद को रूई के टुकड़े पर लगा कर आग लगाऐं अगर चरचराहट हो तो शहद नक़ली है और अगर चरचराहट न हो तो शहद असली है।

शहद को अगर कपड़े या काग़ज़ पर ज़रा सा डाला जाऐ अगर शहद कपड़े या काग़ज़ पर लगे बग़ैर गोल या मोती की तरह इस पर फैल जाऐ



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

तो शहद असली है।

चन्द क़तरे शहद के पानी के गिलास में डालें अगर वो उसी तरह पड़े रहें तो असली है और अगर पानी में घुल जाऐं फ़ौरी तौर पर तो नक़ली है।

अगर नमक की एक डली को लेकर शहद में रगड़ा जाऐ और शहद नमकीन हो जाऐ तो नक़ली है और नमकीन न हो तो असली है।

शहद अंतड़ियों को साफ़ करता, रतुबात को हल करता है क्योंकि मुलय्यन है।

ज़ाइफ़ुल उम्र और बलग़मी मेज़ाज लोगों के लिऐ हद दरजा मूफ़ीद है।

बारिद मेज़ाज अफ़राद के लिऐ भी नफ़ा है।

मसानह, तिल्ली, जिगर, सीना और मेदे को सेहत बख़्शता है।

मुदर बोल है। इससे पेशाब खुल कर आता है।

आंखों में लगाने से निगाह तेज़ होती है और आशोबे चश्म को शफ़ा मिलती है।

दांत साफ़ होते हैं। चमकते हैं और मज़बूती हासिल करते हैं।

दवा के साथ बेहतरीन ग़िज़ा भी है। और मशरूब भी।

लक़वा और फ़ालिज का इलाज है।

खांसी, दमा और सर्द बीमारीयों के लिऐ अकसीर है।

ख़ून की सफ़ाई और अमराज़े क़ल्ब के लिऐ नाफ़ेह है।

हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से मनक़ूल है कि किसी शख़्स ने हज़रत रसूल अल्लाह अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ किया "मेरे भाई के पेट में दर्द है" आँ हज़रत ने इरशाद फ़रमाया उससे कह दे कि थोड़ा शहद गरम पानी में मिला कर पी ले, दूसरे दिन वही शख़्स फ़िर आया और अर्ज़ किया कि उसने शहद पिया था मगर कुछ फ़ायदा नहीं हुआ। फ़रमाया जा और फ़िर शहद पिला और इसके साथ बैठ कर सात मरतबह सुरए अलहम्द भी पढ़, जब वो चला गया तो आँ हज़रत ने फ़रमाया कि इस का भाई मुनाफ़िक़ है यही वजह है कि इसको शहद ने नफ़ा नहीं



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

फ़रमाया। इस हदीस से मालूम हुआ की शहद मुनाफ़िक़ को नफ़ा नहीं पहोंचाता।

रवायत है कि किसी शख़्स ने हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से क़राकुर मेदे की शिकायत की, फ़रमाया काला दाना शहद में मिला कर खालो।

तीन चीज़ें ऐसी हैं जिससे बदने इन्सानी को राहत मिलती है, इरशादे हज़रत नबी अकरत अलैहिस्सलाम है कि,

**(87) "तीन चीज़ों के ज़रीऐ जिस्म मसरूर व मज़बूत होता है, ख़ुश्बू, नरम लेबास और शहद का पीना।**

## ज़ैतून

ख़ुदा वन्दा बुर्ज़ूग व बरतर ने अपने कलामे पाक में ज़ैतून के दरख़्त को शजरे मोबारक (1) क़रार दिया है और एक दूसरे मक़ाम पर ज़ैतून की क़सम खायी है इस का तज़केरा फ़रमाया है। और मुख़तलिफ़ सुरह हाए क़ुरआनी में ज़ैतून और इसके तेल का मोताददिद बार ज़िक्र किया है, ज़ैतून के तेल और फ़ल के बेशुमार फ़वायद हैं। क़दीम व जदीद अतिब्बा व होक्मा ने भी इसके फ़वायद व ख़्वास पर मोताददिद कुतुब में रौशनी डाली है। ख़ौफ़े तवालत से हम सिर्फ़ मुख़्तसरन इस के फ़वायद व ख़्वास दिऐ देते हैं।

ज़ैतून का तेल जोड़ों के दर्द को दूर करता है और पुटठों को मज़बूत करता है।

क़ब्ज़ कुशा है- मेदे के अलसर के लिऐ नाफ़ेह है दर्दे क़ौलन्ज में फ़ायदेमन्द है।

अंतड़ीयों के वरम और वरमे मेदा को दफ़ा करता है।

कमज़ोर बच्चों के मालिश करने से कमज़ोरी दूर करता है।

आसाब और पुटठों को तवानाई बहाल करता है। दिमाग़ी कुवत में इज़ाफ़ह करता है।

अन्दुरूनी आज़ा की सोज़िश व ख़राश में तस्कीन बख़्श है।

(1) सुरए नूर, सुरह वलतीन, सुरए इनआम, सुरए अबस, सुरए नहल।



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

बच्चों को मौसमे सरमां के ज़र्र से महफ़ूज़ रखता है बलग़म का ऐख़राज करता है। खांसी में नफ़ा बख़्श है।

नेमोनिया में और बच्चों की पसली चलने में ऐफ़ाक़ा करता है (देखिये नेमोनिया सफ़्हा) मौसमे सरमा में दर्दों में फ़ायदा पहोंचाता है और पुरानी चोटों के दर्द को भी दूर करता है।

ज़ैतून के बहोत से फ़ायदे हैं और क्यों न हों ख़ुदा वन्दे करीम ख़ुद इसकी क़सम खा रहा है, और शजरे मोबारक क़रार दे रहा है और इसके हबीब हज़रत ख़तमी मरतबत अलैहिस्सलाम तारीफ़ फ़रमा रहे हैं। तो इसकी ऐफ़ादियत से शक व शुब्हे की कोई गुन्जाइश बाक़ी नहीं रहती।

इरशाद हज़रत पैग़मबर अकरम अलैहिस्सलाम है कि।

**(88) "तुम्हारे लिऐ ज़ैतून का तेल इस्तेमाल करना ज़रूरी है, क्योंकि वो सफ़रा व सौदा को दफ़ा करता है और बलग़म को दूर करता है और पुटठों को मज़बूत करता है जिस्म को ख़ुबसूरत बनाता है, और सांस को पाकीज़ा करता है और ग़म को ज़ाऐल करता है"।**

**(89) " इलाज करो नेमोनिया का क़स्त बहरी और ज़ैतून के तेल के साथ"।**

**(90) "ज़ैतून का तेल खाया करो और इसका तेल इस्तेमाल करो, कि ये एक बरकतों वाला दरख़्त है"।**

**(91) "ज़ैतून खाया करो और इसका तेल लगाया करो क्योंकि ये मोबारक है"।**

हलीत अलमतुक़ीन में मनक़ूल है कि हज़रत रसूल अल्लाह अलैहिस्सलाम ने हज़रत अली अमीरल मोमनीन अलैहिस्सलाम से फ़रमाया कि या अली रोग़न ज़ीत खाओ और बदन पर मलो, क्योंकि जो शख़्स खाऐगा और बदन पर मलेगा, चालीस रोज़ तक शैतान उसके पास न फ़टकेगा।

हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से मनक़ूल है कि "ज़ैतून का तेल मादाए मनविया में ज्यादती पैदा करता है"।



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

तिब्बे इमामे सादिक़ अलैहिस्सलाम में है कि दरख़्ते ज़ैतून के पत्ते फ़िशारे ख़ून वाले अफ़राद के लिऐ मुफ़ीद है दर्दे जिगर में तस्कीन का बायस है। आमराज़े सिल और अमराज़े सीना में जो अफ़राद मुब्तिला हों उन के लिऐ रौग़ने ज़ैतून को सलाद में इस्तेमाल करना मुफ़ीद है।

हज़रत इमाम रज़ा अलैहिस्सलाम का इरशाद है कि माकूलात में ज़ैतून का तेल बेहतरीन है। यह तनफ़्फ़ुस को पाकिज़ा करता है, बलग़म को दफ़ा करता है। रंग को निखारता है, पुटठों को मज़बूत करता है, जोड़ों के दर्द को दूर करता है और गुस्से को ठन्डा करता है।

ज़ैतून का फ़ल और तेल इन्तेहाई मुफ़ीद हैं और इस के पत्ते भी फ़िशार ख़ून के लिऐ बेहद मुफ़ीद हैं।

जिन छोटे बच्चों की टांगें कमज़ोर हों, उन के तेल मालिश करने से टांगें मज़बूत हो जाती हैं। इस की तासीर गरम मोतदिल है और इस के दरख़्त शाम व दीगर मोमालिक में पाऐ जाते हैं।

## कद्दू

कद्दू सब्ज़ीयों में एक बेहतरीन सब्ज़ी है। ज़ूद हज्म ज़ाएके में लज़ीज़ और ख़्वास व तासीर के ऐतेबार से फ़ायदेमन्द है। कद्दू की तीन क़िस्में हैं, 1-घिया कद्दू, (जिसको लौकी कहते हैं) 2-गोल कद्दू (ये गोल होते हैं) 3-फूल कद्दू और इसको पेठा कद्दू भी कहते हैं। और मुवकखरहम ज़िक्र ज़्यादा तर मिठाई बनाने में काम आता है, और इसकी मिठाई बनती है जिसको पेठे का हल्वा भी कहते हैं। लौकी और गोल कद्दू का सालन पकता है, लौकी कद्दू और गोल कद्दू ज़ायके और फ़ायदे के ऐतेबार से एक ही जैसी ख़ासियत रखते हैं, कद्दू से कई क़िस्म का सालन पकाया जाता है, कद्दू गोशत, लौकी, क़ीमा, चने की दाल में कद्दू, लौकी का रायता वग़ैरह-वग़ैरह। इसके बीज भी बड़े फ़ायदे मन्द हैं, लेकिन यहां सिर्फ़ (लौकी) कद्दू का ज़िक्र मक़सूद है। लौकी कद्दू और गोल कद्दू का मेज़ाज मोतदिल है। कद्दू (लौकी) गोल कद्दू के इस्तेमाल के बारे



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

में इरशाद हज़रत पैग़मबरे अकरम अलैहिस्सलाम मोलाहेज़ा फ़रमाइये।

(92) "जब तुम कोई सालन खाओ तो उसमें कददू डालो क्योंकि वह अक़्ल व दिमाग़ को बढ़ाता है"।

(93) "कदू खाया करो पस अगर खुदा के नज़दीक इससे नरम कोई चीज़ होती तो वह मेरे भाई यूनूस अलैहिस्सलाम के लिऐ पैदा करता"।

(94) "तुम पर लाज़िम है कि कददू खाया करो, पस वह देमाग़ को बढ़ाता है"।

(95) "जिसने कदू मसूर की दाल के साथ खाया तो उसका दिल नरम हो जाऐगा, (ख़सूसन) ज़िक्रे खुदा के वक़्त, जब तुम कुछ पकाओ तो कदू ज़्यादा पकाया करो क्योंकि यह ग़मगीन दिल को सुरूर अता करता है।

हलीत अलमुतक़ीन में है कि आँ हज़रत ने अमीरल मोमेनीन अलैहिस्सलाम को वसीयत फ़रमाई कि या अली कददू खाना लाज़िम समझो कि इससे देमाग़ बढ़ता है और अक़्ल ज़्यादा होती है"।

तिब्बे सादिक़ अलैहिस्सलाम में है कि कदू अक़्ल व देमाग़ को बढ़ाता है, और दर्दे क़ौलन्ज के वास्ते मुफ़ीद है, यरक़ान को भी फ़ायदा देता है। क़वाऐ जिस्में इन्सानी के लिऐ बायस इसतेहकाम है, सफ़रा को तस्कीन देता है। मेज़ाज इसका सर्द व तर है।

हज़रत इमाम ज़ाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम का इरशादे गिरामी है कि अपने सालन में कदू ज़्यादा इस्तेमाल किया करो, क्योंकि यह अक़्ल व देमाग़ की कुवत में ज़्यादती पैदा करता है।

यह पहले ही ब्यान किया जा चुका है कि लौकी का सालन लज़ीज़ व खुश ज़ायक़ा होता है। दूसरी ख़ूबी इसमें यह है कि यह दूसरी सब्ज़ीयों की बनिस्बत इसका सालन जल्दी पक जाता है।

जिगर व मेदे की गरमी वाले अफ़राद कच्ची लौकी लेकर पांव के तलवे पर मलते हैं इससे जिगर की गरमी दूर हो जाती है।



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

# प्याज़

प्याज़ रोज़मर्रा के इस्तेमाल में आने वाली एक आम चीज़ है और सालन का एक अहम जुज़ है। प्याज़ गेज़ाई फ़वायद के अलावा दवाई असरात भी रखती है। वबाई बीमारीयों से महफ़ूज़ रखती है और ज़हरीले असरात से बचाती है। नज़ले ज़ुकाम में सूंघने से ज़ुकाम निकल जाता है। लू के मौसम में इस का इस्तेमाल और सूघंना लू लगने से बचाता है। प्याज़ के बारे मे आज से चौदह सौ बरस पहले आँ हज़रत अलैहिस्सलाम ने और साढ़े बारह सौ साल पहले हज़रत इमाम ज़ाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने जो फ़वायद ब्यान किऐ हैं वह मोलाहेज़ा हों,

**(96) "अपने दस्तरख़्वानों को सब्ज़ीयों से ज़ीनत दो"।**

**(97) "जब तुम किसी नये शहर में जाओ तो वहां की सब्ज़ी व प्याज़ खा लिया करो वह तुम्हें तबदीलिऐ मकान की वजह से होने वाले दर्दो अमराज़ से बचाएगा, आसाब को मज़बूत आबे कमर को बढ़ाएगा और बोख़ार से बचाएगा।**

**(98) "जब तुम किसी शहर में पहुँचो तो वहां की प्याज़ खा लो ताकि वहां की वबा को तुम से दूर करदे।**

प्याज़ के बारे में इमाम ज़ाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया कि "प्याज़ मुंह की बू को पाक़ीज़ा करता है, जिमा की क़ुवत को ज़्यादा करता है, पुटठों को और पीठ को मज़बूत करता है और बोख़ार को तोड़ता है।

मौजूदा दौर की तहक़ीक़ात से मालूम हुआ है की प्याज़ में कैल्शियम, पोटैशियम, सोडियम सलफ़र, कारबोहाइडरेटस और फ़ौलाद काफ़ी मेक़दार में पाए जाते हैं और इस का रस कीड़ों को हलाक करता है और इस का टीका दिक़ और सिल के जरासीम के लिऐ मोहलिक साबित हुआ है।

तिब्बे इमामे सादिक़ अलैहिस्सलाम मे प्याज़ के ख़्वास के बारे में



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

इरशादे इमाम अलैहिस्सलाम है कि "प्याज़ खाओ यह मुंह को पाक रखती है, मसूढ़ों को मज़बूत, आबे कमर (मनी) को ज़्यादा, ताक़त मुजामेअत को बढ़ाती है, प्याज़ मुंह को ख़ुशबूदार, कमर को मोहकम, चेहरे को हुस्न बख़्शती है। यह दर्द और मर्ज़ को दफ़ा करती है, पुट्ठों को मज़बूत, ताक़त रफ़्तार को ज़्यादा और बोख़ार को दूर करती है। प्याज़ ज़नबूर यानी भिड़ब अलफ़ाज़े दीगर बुराइयां, मच्छर, मक्खी के काट लेने पर लगाने पर बहोत मुफ़ीद है। प्याज़ को अगर सिरके में तर करके नाक में डालें तो नकसीर रूक जाती है।

प्याज़ की ज़मानए हाज़िरा के अतिब्बा ने भी बेइन्तेहा तारीफ़ की है और अब तो प्याज़ तक़रीबन जुज़वे ग़ेज़ा बन गई है। इमाम अलैहिस्सलाम ने इस के फ़वायद बारह सौ साल क़ब्ल ब्यान फ़रमा दिऐ थे। भुलबुलाई हुई प्याज़ को फ़ोड़े फुन्सी पर बान्धने से फ़ोड़े फुन्सी जल्द पक जाते हैं और मरीज़ को सकून मिलता है।

प्याज़ के रस को अगर शहद में मिला कर पिया जाऐ बैठी हुई आवाज़ खुल जाती है।

लू के ज़माने में प्याज़ लू से महफ़ूज़ रखती है।

कान में फुन्सी हो तो भुलभुलाई हुई प्याज़ का रस कान में डालने से सकून हासिल होता है।

बरसात में प्याज़ के इस्तेमाल से वबाई अमराज़ से इन्सान महफ़ूज़ रहता है।

प्याज़ का मरहम भी तैयार होता है जो बहुत से ज़ख़्मों में इस्तेमाल होता है।

## बाज़ अमराज़ और उनकी ऐफ़ादियत

हज़रत पैग़मबर अकरम अलैहिस्सलाम का इरशादे गेरामी हो रहा है।



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

**(99) "ज़ोकाम ख़ुदा के लशकरों में से एक लशकर है ख़ुदा इसे मर्ज़ पर नाज़िल करता है ताकि वह मर्ज़ को भगा दे।**

और फ़रमाया-चार चीज़ों से कराहत न करो इस लिऐ कि वह मुन्फ़अत बख़्श हैं,

ज़ोकाम से कराहत न करो इस लिऐ कि वह जुज़ाम से महफ़ुज़ रखता है,

और फ़ोड़ों से कराहत न करो इस लिऐ कि वह बरस से महफ़ुज़ रखते हैं,

और आशोबे चश्म से कराहत न करो इसलिऐ कि वह अन्धा होने से बचाता है,

और खांसी से कराहत न करो इसलिऐ कि वह फ़ालिज से बचाती है।

और फ़रमाया-हर आदमी में दो रगें होती हैं, एक इसके सर में जो जुज़ाम को पैदा करती है। और दूसरी इसके जिस्म में जो बरस पैदा करती है तो जब सर की रग हैजान में आती है तो ख़ुदा वन्दे आलम इस पर ज़ोकाम मुसल्लत कर देता है ताकि इसके ज़रीऐ से मर्ज़ (माददा) बह जाऐ और जब जिस्म की रग हैजान में आती है तो ख़ुदा वन्दे आलम इस पर फ़ोड़ों को मुसल्लम करे देता है ताकि उन के ज़रीऐ मर्ज़ बह जाऐ। तो अगर तुम में से किसी को ज़ोकाम या फ़ोड़े निकल आऐं तो उसे चाहिऐ कि अपनी आफ़ीयत पर ख़ुदा का शुक्र अदा करे।

मुन्दरजा बाला हक़ीक़त तक साइंसी दुनिया की अभी तक रसाई नहीं हुई है, लेकिन चूंकि इल्मी हक़ाएक़ का सिलसिला पैग़मबरे इस्लाम अलैहिस्सलाम और ख़ुदा वन्द की ज़ात तक मुन्तही होता है। लेहाज़ा बाईमान क़ुलूब में किसी क़िस्म के शक व शुब्हे की गुन्जाइश पैदा नहीं हो सकती, मुमकिन है कि आइन्दा साइंसी तहक़ीक़ात इस हक़ीक़त का भी इन्केशाफ़ कर दें।

**(100) "ज़ोकाम अल्लाह के सिपाहीयों में से एक सिपाही है। ख़ुदा इसको मर्ज़ पर उभरता है और वह मर्ज़ को ज़ाएल करता है।**

कई रवायतों में आया है कि ज़ोकाम का इलाज नहीं करना चाहिऐ।



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

एक रवायत में आया है कि छः रत्ती काला दाना यानी कलौंजी और तीन रत्ती कन्दर लेकर दोनों का सफूफ़ बना कर नास या हलासल के तौर पर इस्तेमाल करें, ज़ोकाम जाता रहेगा।

**(101)** छींक जो है वह दलील है बदन की आफ़ीयत व राहत के लिऐ।

**"ज़्यादा छींक इन्सान को पांच चीज़ों से महफ़ूज़ रखती है, पहली ज़ोकाम, दूसरी वह बदबू जो इन्सान के मुंह और सांस में पैदा होती है, तीसरी आंख में पानी के उतरने से महफ़ूज़ करती है, चौथी नाक की रगों को नरम करती है और पांचवें आंख में बाल के निकलने से रोकती है"।**

बाज़ रवायत में है कि बीमारी के अलावा छींक आने से सात दिन ज़िन्दगी बढ़ जाती है। इसी बिना पर हुक्म है कि जिसे छींक आऐ वह अलहम्दोलिल्लाह या शुक्र अल्लाह पढ़े और जो पास सुन्ने वाला मौजूद हो वह यरहोकुमल अल्लाह कहे तो फ़िर साहबे छींक उसे जज़ाकुम अल्लाह कहे।

हज़ारों लाखों राज़ ऐसे मौजूद हैं जिनका साइंसी दुनिया में तसव्वुर भी नहीं पाया जाता है, लेकिन कुरानो अहदीस सहीफ़ों में जिन हक़ाएक़ का ज़िक्र है वह अपने मक़ाम पर अटल हैं। अगर कुरानो हदीस बताई हुई हक़ीक़त पर आज साइंसी तहक़ीक़ न हुई हो तो इस हक़ीक़ते कुरआनी और हक़ीक़त हदीस में किसी क़िस्म का शक व शुबहा नहीं आना चाहिऐ क्योंकि यह इल्म खुदा की ज़ात से मुताल्लिक़ है हम अख़ज़े नताएज में ग़लती कर सकते हैं लेकिन कोरानो हदीस सहीफ़े की हक़ीक़त में किसी क़िस्म की ग़लती का इमकान नहीं हो सकता। लेहाज़ा अगर किसी चीज़ पर आज साइंसी तहक़ीक़ नहीं है तो हो सकता है कि आइन्दा हो जाऐ क्योंकि अभी साइंस हक़ाएक़े कायनात के इन्केशाफ़ की इब्तेदाई मन्ज़िल में है(1)।

हदीसे सही में हज़रत इमाम ज़ाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से मनकूल है कि औलादे आदम कोई भी शख़्स ऐसा नहीं है कि जिस में दो रगें न हों मिनजुमला उन दो रगों के एक रग सर में है जिसकी हरकत से जुज़ाम पैदा

(3) अकाबेरीने इस्लाम का साइंसी शअुर।



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

होता है और दूसरी धड़ में है जिसकी हरकत से सफ़ेद दाग़ पैदा होते हैं।

जब सर की रग को हरकत होती है तो ख़ुदाऐ ताअला ज़ोकाम को इस पर मुसल्लत कर देता है कि वह मवादे सर को दफ़ा करदे। और जब बदन की रग को हरकत होती है तो ख़ोदाऐ तआला इस पर फ़ोड़े फुन्सीयों को मुसल्लत फ़रमाता है कि वह मवादे जिस्म को निकाल दें लेहाज़ा जिस शख़्स को ज़ोकाम हो जाऐ या फ़ोड़े फुन्सीयां निकल आऐं तो इस शख़्स को ख़ोदाए ताआला का शुक्र अदा करना चाहिऐ।

# मुज़राते सेहत

**(102) "आँ हज़रत अलैहिस्सलाम सात इन्सानी चीज़ों को ज़मीन में छुपाने का हुक्म देते हैं। 1-बाल, 2-नाख़ुन, 3-ख़ूने हैज़, 4-ख़ूने बदन, 5-नाल, 6-दांत, 7-ख़ून लोथड़ा।**

जिस्मे इन्सानी से ताअल्लुक़ रखने वाली ये सात चीज़ें ऐसी हैं जिनसे मुख़तलिफ़ बीमारीयों के फ़ैलने का अन्देशह होता है। बिलख़सूस ख़ूने बदन, नाल और जमे हुऐ बदन का लोथड़ा, अगर दफ़न न किऐ जाऐं तो एक तो इनसे ताफ़्फ़ुन पैदा होता है, दूसरे इनसे ज़हरीले माददे जरासीम फ़ैलते हैं और ये जरासीम तपेदिक़, सिल, दमा जैसे अमराज़ का पेश ख़ेमा बनते हैं। आँ हज़रत अलैहिस्सलाम ने इन बीमारीयों के फ़ैलने से रोकने के लिऐ हुक्म फ़रमाया है कि इन मुन्दरजा बाला सात चीज़ों को ज़मीन में छुपा दिया जाऐ।

**(103) "आँ हज़रत अलैहिस्सलाम ने दूध में पानी मिलाने से मना फ़रमाया है"।**

हज़ूर नबीऐ करीम अलैहिस्सलाम ने चौदह सौ साल पहले इस अम्र से मना फ़रमाया था कि दूध में पानी न मिलाया जाऐ। साइंसदाँ और मोहक़्क़ेक़ीन तहक़ीक़ के बाद इस नतीजे पर पहोंचे हैं कि दूध में पानी मिलाने से तपेदिक़ के जरासीम जिस्मे इन्सानी में आसानी से मुन्तक़िल हो जाते हैं। और इन्सान इस मूज़ी मर्ज़ में गिरफ़्तार हो जाता है। मुख़्तलिफ़ मोमालिक के



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com
आदादा शुमार से पता चलता है कि तपेदिक़ की पचास फ़ीसद से ज़्यादा बीमारी का सबब पानी मिला हुआ दूध पीने से होता है।

**(104) "दूध पीने के बाद फ़ौरन कुल्ली कर लो क्योंकि इस में चिकनाई होती है"।**

वैसे तो खाना खाने के बाद कुल्ली करना और दांत साफ़ करना सेहत के लिऐ बेहद मुफ़ीद व ज़रूरी है लेकिन दूध पीने के बाद कुल्ली करने की ताकीद आँ हज़रत अलैहिस्सलाम ने इस लिऐ फ़रमाई है कि दूध में जो चिकनाई होती है वह दहन में फ़ौरन सड़ जाती है और इस के जरासीम दहन में फ़ैल जाते हैं जिस की वजह से दहन में बदबू (गन्दा दहनी) पैदा हो जाती है। दांतों और मसूढ़ों में भी तकलीफ़ पैदा हो जाती है।

## अयादते मरीज़

हर मोमिन का ये दीनी फ़रीज़ा है कि जब कोई मुसलमान भाई बीमार हो तो उस की अयादत को जाऐ और इसके साथ हमदर्दी और ख़लूस का मज़ाहरा करे। इस सिलसिले में हज़रत पैग़मबरे अकरम अलैहिस्सलाम और आइम्माए ताहेरीन से बहुत सी अहादीस मरवी हैं।

इरशादे हज़रत पैग़मबरे अकरम अलैहिस्सलाम है कि जो शख़्स किसी बरादर की अयादत के लिऐ घर से निकलता है तो ख़ुदा वन्दे आलम इसको हर क़दम पर हज़ारों हसनात इनायात फ़रमाता है हज़रत अमीरल मोमेनीन अली इब्ने अबी तालिब अलैहिस्सलाम से रवायत है कि हज़रत पैग़मबरे अकरम अलैहिस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया की,

**(105)** "ऐसा कोई शख़्स जो शाम के वक़्त किसी मरीज़ की अयादत करे और इसके साथ सत्तर हज़ार फ़रीश्ते न निकलें, और सुबह तक इसके लिऐ दोआऐ मग़फ़ेरत न करें, और इसके लिऐ जन्नत में एक टुकड़ा महफ़ूज़ न हो जाऐ। और जो शख़्स किसी मरीज़ की अयादत के लिऐ सुबह के वक़्त आता है इसके साथ सत्तर हज़ार फ़रिश्ते निकलते हैं और शाम के आने तक



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com
इसके लिए दोआऐं मग़फ़िरत करता रहता है। और इसके लिए जन्नत में हरीफ़ (फ़ल और मेवों का बाग़ मख़सूस हो जाता है"।)

आँ हज़रत अलैहिस्सलाम की एक और हदीस मुलाहेज़ा हो जिसके रावी हज़रत अबी मूसा अलअशरी रज़ी० हैं।

हज़रत अबी मुसा अलअशरी रज़ी० ब्यान करते है कि फ़रमाया रसूल अल्लाह अलैहिस्सलाम ने।

**(106) "भूके को खाना खिलाओ और मरीज़ की अयादत करो"।**

हज़रत सादिक़े आले मोहम्मद का इरशाद है कि "तीन आदमीयों कि दोआ ज़रूर कुबूल होती है एक हाजी, दूसरे मुजाहिद, तीसरे मरीज़ की। इसलिऐ जब मरीज़ की अयादत को जाया जाऐ तो इससे दुआ करवाई जाऐ"।

हज़रत इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम इरशाद फ़रमाते हैं कि "क़यामत के दिन ख़ुदावन्दे आलम अपने बन्दों से जो अपने बरादरे मोमिन की अयादत को नहीं जाते, फ़रमाऐगा की मैं मरीज़ था तुम ने मेरी अयादत नहीं की। वह अर्ज़ करेगा मालिक तू रब्बुलआलमीन है तुझे बीमारी से क्या ताअल्लुक़? इरशादे रब्बुल इज़्ज़त होगा कि मेरा फ़लां बन्दा बीमार था तुम ने उसकी अयादत नहीं की, मैं अपनी इज़्ज़त व जलाल की क़सम खा कर कहता हुँ कि मैं अपने इस बन्दे के पास मौजूद था अगर तुम आते तो मुझे इसके पास मौजूद पाते"।

अयादते मरीज़ के सिलसिले में अहादीसे हज़रत पैग़मबरे अकरम अलैहिस्सलाम और आइम्माऐ ताहेरीन अलैहिस्सलाम को ख़ौफ़े तवालत की बिना पर मुख़्तसरन पेश किया गया है इस सिलसिले में काफ़ी अहादीस वारिद हुई है।

अल्लामा मोहम्मद काज़िम तहरीर फ़रमाते हैं कि मरीज़ की अयादत सुन्नते मोवक्केदा है। हदीस में है कि मरीज़ की अयादत ख़ुदा की अयादत के बराबर है। हर मरीज़ के पास ख़ुदावन्दे आलम मौजूद रहता है। आप तहरीर फ़रमाते हैं कि अयादत के लिऐ दिन रात में फ़र्क़ नहीं है, जिस वक़्त जी चाहे जा सकता है अलबत्ता सुन्नत है कि सुब्ह या शाम के वक़्त अयादत को जाया


Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

करे। आप फ़रमाते हैं कि जब कोई मरीज़ के पास जाऐ तो इसके पास बहोत देर न बैठे और इसकी पेशानी या हाथ पर हाथ रकखे। फ़िर इसके बाज़ू पर हाथ रख कर दोआ पढ़े। जब मरीज़ की अयादत को जाऐ तो ख़ुशबूदार कोई चीज़ या मेवा अपने हमराह ले जाऐ और इस पर सात मरतबा सुरए अलहम्द पढ़े। मरीज़ के सामने कोई ऐसी चीज़ न खाए जो इसके लिऐ मुज़िर हो और न मरीज़ से खाने की ख़्वाहिश करे। मरीज़ के साथ ख़ुशअख़्लाकी और हमदर्दी से पेश आऐ। और इसका दिल बहलाऐ। मरीज़ के सामने कोई ऐसी बात न करे जिस से इसको गुस्सा आऐ।

मरीज़ की अयादत और मिज़ाज पुर्सी के बारे में मज़ीद चन्द अहादीस मुलाहेज़ा हों, हज़रत अनस बिन मालिक रज़ी० से रवायत है।

**(107) "जिसने वुज़ू किया और ख़ूब वुज़ू किया और अपने मुसलमान भाई की अयादत की वह जहन्नम से सत्तर ख़रीफ़ की मसाफ़त के बराबर दूर होगा"। (अबू दाउद)**

हज़रत बरा इब्ने आज़ब रज़ी० ब्यान करते हैं कि,

**(108) "हमें रसूले अकरम अलैहिस्सलाम ने हुक्म दिया मरीज़ की अयादत के लिऐ (मुत्ताफ़ेक़ा अ्लैह)**

आँ हज़रत अलैहिस्सलाम का एक और इरशादे गिरामी मोलाहेज़ा कीजिये,

हज़रत शाबान रज़ी० अल्लाह ब्यान करते हैं कि फ़रमाया रसूले ख़ुदा अलैहिस्सलाम ने,

**(109) "जब कोई मुसलमान किसी मुसलमान भाई की अयादत करता है वह जब तक वापस नहीं आता जन्नत की खिड़की में रहता है। (मुस्लिम व मिशकात शरीफ़)**

# अन्गुशतरी

अन्गुशतरी को बइद अल अब्द से शरई हैसियत हासिल है। आमबियाए केराम, आइम्माए ताहेरीन और सुलहा व आरफ़ीन हमेशा अन्गुशतरी



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com
पहनते थे। चांदी की अन्गुशतरी शराए मोबीन की निगाह में मुस्तहेब और सोने की हराम और लोहे की मकरूह है। सोने की अंगूठी सिर्फ़ औरतें पहन सकती हैं चांदी की अन्गुशतरी का इसतेहबाब और लोहे की अन्गुशतरी की कराहत दोनों के लिऐ मसावी है। पैग़मबरे इस्लाम अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि जिस हाथ में लोहे की अंगूठी हो इसे मैं अच्छी निगाह से नहीं देखता और न पसन्द करता हुँ कि लोहे की अंगूठी पहन कर नमाज़ पढ़ी जाऐ।

अमीरल मोमनीन हज़रत अली अलैहिस्सलाम इरशाद फ़रमाते हैं कि सरवरे कायनात अलैहिस्सलाम का इरशाद है कि अन्गुशतरी दाहिने हाथ में पहननी चाहिऐ।

हज़रत अली अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि एक दिन जिबराइल अलैहिस्सलाम ने कहा कि जिस के दाहिने हाथ में अंगूठी होगी मैं क़यामत के हौलनाक मौक़े पर इस का हाथ पकड़ कर आप तक पहोंचा दूंगा।

इमाम हज़रत जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि कलमे और बीच की उंगली में अन्गुशतरी पहनने से रसूल अल्लाह अलैहिस्सलाम ने मना फ़रमाया है। आप यह भी फ़रमाते हैं कि उंगलीयों के सिरे में अंगूठी पहनना ममनूअ है क्योंकि ये तरीक़ा क़ौमे लूत का था, अंगूठी उंगलीयों की जड़ों में पहनना चाहिऐ।

इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम से पूछा गया कि हज़रत अली अलैहिस्सलाम दाहिने हाथ में अन्गूशतरी क्यों पहना करते थे, फ़रमाया इसलिऐ कि वह पेशवाए असहाबे यमीन होंगें और उन लोगों को आप ही आमाल नामा उन के हाथों में देंगें। और सबसे बड़ी बात यह है कि रसूले करीम अलैहिस्सलाम दाहिने हाथ में पहनते थे, इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम थे कि अव्वले वक़्त नमाज़ पढ़ना, ज़कात देना, बरादराने मोमिन की मआवनत करना, उन्हें अच्छे रास्ते बताना और अन्गुशतरी दाहिने हाथ में पहनना मोमिन की अलामत है।

सलमाने फ़ारसी रज़ी० से रवायत है कि रसूल अल्लाह अलैहिस्सलाम


Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

ने जनाबे अली इब्ने अबी तालिब अलैहिस्सलाम से फ़रमाया कि ऐ अली! अगर मुक़र्रेबे बारगाहे ख़ुदावन्दी बनना चाहते हो और यह ख़्वाहिश रखते हो कि जिबरईल अलैहिस्सलाम व मिकाईल अलैहिस्सलाम तुम्हारी हमनशीनी अख़्तियार करें तो दाहिने हाथ में अन्गुश्तरी पहना करो।

अल्लामा मजलिसी बहवाला सय्यद इब्ने ताऊस तहरीर फ़रमाते हैं कि मासूम अलैहिस्सलाम का इरशाद है कि अंगूठी पहनने के वक़्त ये दोआ पढ़नी चाहिऐ।

*अल्लाहुम सोमनी बसीमा अलायमानु तौजनी बताज अलकर अमतह वख़ालदनी जबल अलइस्लाम वलअतख़लाह रबीख़त अलइमान मिन अनख़ी।*

# जिस्मे इन्सानी पर पत्थर व जवाहेरात के असरात

ख़ालिक़े कायनात ने इस कायनात की किसी भी शय को बिला मक़सद ख़ल्क़ फ़रमाया। हर शय में हज़ारों राज़ पिनहां हैं। ख़्वाह इस शय का ताअल्लुक़ जमादात से हो ख़्वाह नबातात से या हैवानात से, हर शय में क़ादिरे मुतलक़ ने कुछ न कुछ सिफ़ात को मुजतमा फ़रमा दिया है। लेकिन मख़फ़ी रकखा है कि ज़रा इन्सान इस पर कुछ ग़ौरो फ़िक्र कर सके। अब ये इन्सान का काम है कि इन अश्या पर कुछ तहक़ीक़ करके इन्सानीयत की ख़िदमत कर सके। और क़ुदरत की अता करदा नेअमतों से ख़ुद भी और दूसरों को भी फ़ायदा पहोंचाए और इस कायनात को तसख़ीर कर लें। इसी कायनात को तसख़ीर करने की हिदायत क़ोरआने मजीद में मौजूद है अगर इन्सान सअी करे और अपनी तवज्जोह को मबज़ूल करे तो इस कायनात के बेशुमार राज़ सरबस्ता खुल जाऐं।

जमादात (पत्थरों) से इन्सान को क्या फ़ायदा है? हम ने इस पर कभी ग़ौरो फ़िक्र ही न किया कि क़ुदरत की इस तख़लीक़ का इन्सान से क्या राबेता है या क्या वास्ता है। इन बलन्द व बाला पहाड़ों को सिर्फ़ इस लिऐ ख़ल्क़ नहीं



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

फ़रमाया कि इन्सान इन की चोटीयों को सर करे बल्कि इन पहाड़ों को मादनयात के बेशुमार ज़ख़ायर का सर चश्मा क़रार दिया। कोयले से लेकर क़ीमती जवाहेरात तक इन पहाड़ों में मौजूद हैं।

ज़ेरे नज़र मज़मून में (जमादात) पत्थरो से मुताल्लिक़ तहरीर किया जा रहा है कि इन पत्थरों के जिस्मे इन्सानी पर क्या असरात मुरत्तब होते हैं। दीगर मादनयात और नबातात व हैवानात के बारे में किसी और मौक़े पर किया जाऐगा।

हमारे यहां के अदीबों और शायरों ने संगदिल, पत्थर दिल, संग तराश वग़ैरह-वग़ैरह को मोहावरों और अशआर की ज़ीनत तो ज़रूर बनाया है, मगर किसी मोहक़्क़िक़ ने इन पत्थरों पर तहक़ीक़ नहीं की इन पत्थरों में क़ुदरत ने कितने राज़ पोशीदा फ़रमा दिऐ हैं अलबत्ता इन पत्थरों पर कुछ न कुछ तहक़ीक़ अहल मग़रिब ने की है जो अब न काफ़ी है, ज़रूरत है कि इन पर कुछ और तहक़ीक़ की जाऐ। पत्थरों की दो क़िस्में हैं। एक तो आम पत्थर और एक वह पत्थर जिनका शुमार जवाहेरात में होता है। जवाहेरात उन ख़ूबसूरत पत्थरों को कहते हैं, जो अपनी ख़ुसूसियात और चमक दमक की बिना पर आम पत्थरों से अफ़ज़ल होते हैं।

जवाहेरात या पत्थर जिस्मे इन्सानी पर दो तरह से असरअन्दाज़ होते हैं।

1-पत्थर या जवाहेरात बैरूनी तौर पर जिस्मे इन्सानी से मुसल्सल मस हो कर अपने असरात ज़ाहिर करते हैं इन को आम इस्तेलाह में बैरूनी असरात या ख़ारजी असरात कहा जाता है।

2-दवा के तौर पर जवाहेरात को इस्तेमाल कराया जाऐ तो इस को दोआइया असरात, या तिब्बी ख़वास कहते हैं। ये पत्थर कीमयाई तरकीब से हल करके मेदे के ज़रीऐ हज़्म होकर जिस्मे इन्सानी पर अपने असर को ज़ाहिर करते हैं। होक्माए क़दीम ने कीमयाई अमल से जवाहेरात को हल करके बतौरे दवा मरीज़ों को इस्तेमाल कराने का तरीक़ा वाज़ेह किया। और मौजूदा दौर में भी ख़मीराजात व कुश्ता जात बनाए जाते हैं।



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

इस वक़्त हम भी सिर्फ़ पत्थरों के जिस्में इन्सानी पर बैरूनी असरात का तज़केरा कर रहे हैं। कि इन पत्थरों के जिस्मे इन्सानी से मुसल्सल मस होने पर बैरूनी असरात किस तरह असर पज़ीर होते हैं, मुलाहेज़ा फ़रमाइये।

जिस तरह आज की मेडीकल साइंस में ये अम्र अयां है कि कैलशियम को हडडीयों का हिस्सा बनाने के लिऐ विटामिन डी, सूरज की रौशनी से ही इस क़ाबिल होता है कि वह कैलशियम पर असर अन्दाज़ होकर इसे हडडीयों का हिस्सा बनाने के क़ाबिल बनाए। इसी तरह जब सूरज की शोआएं जिस्मे इन्सानी पर पड़ती हैं तो हर इन्सान की क़ुवत व शअुर, ख़साएल व महरकात ख़्यालो ज़हन पर भी अपना असर छोड़ती हैं। सूरज की यही "कासमिक शोआएं" (कासमिक रेज़) जब पत्थरों पर और जवाहेरात पर पड़ती है। तो मुख़तलिफ़ पत्थर उन मुख़तलिफ़ शोआओं से मुख़तलिफ़ रंग की शोआऐं अपने अंदर जज़्ब कर लेते हैं। और जब इन्सान इस पत्थर की अंगूठी को हाथ में पहनता है तो इस पत्थर में मौजूद शोआऐं जिस्मे इन्सानी पर अपना असर ज़ाहिर करते हैं बिल्कुल इसी तरह जिस तरह डाक्टर साहेबान फ़िज़योथेरेपी के ज़रीऐ अल्ट्रा वाएलेट और इन्फ़रा रेड शोआओं से मरीज़ों का इलाज करते हैं।

जिस्मे इन्सानी से मुसल्सल मस होने वाले जवाहेरात व पत्थर से क्या फ़वायद हासिल होते हैं। इनको मुख़्तसरन पेश किया जा रहा है। तफ़सील आइन्दा तहरीर करेंगें।

## अक़ीक़ के पहनने से

(1) सकूने क़ल्ब पैदा होता है, मुसतक़िल मेज़ाजी पैदा होती है।

(2) गुस्सा कम आता है, दिल नरम हो जाता है।

(3) सहर व जादू के असरात बातिल होते हैं, परेशानीयां दूर होती हैं।

अक़ीक़ के बारे में मुफ़स्सल मज़मून आइन्दा सफ़हात में पेश किया जा रहा है।

## दहानए फ़िरंग के पहनने से

(1) गुरदे में दर्द नहीं होता पथरी से नजात हासिल होती है।



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

(2) पित्त के दर्द में कमी वाक़ा होती है।

## लाजवर्द के पहनने से

(1) क़ल्ब को सकून हासिल होता है।

(2) जिस्म के मसे कम हो जाते हैं। जिस्म के दाग़ धब्बे दूर होते हैं।

## याक़ूत के पहनने से

(1) मर्ज़ गठिया ठीक हो जाता है। मर्ज़ क़ल्ब दफ़ा होता है।

(2) रोज़गार में तरक़्क़ी होती है और क़द्रो मन्ज़िलत बढ़ती है, मज़दवाजी ज़िन्दगी ख़ुशगवार होती है।

अंगूठी ऐसे बनवानी चाहिऐ कि पत्थर उंगली से मस हो और पत्थर ग भी असली होना शर्त है। पत्थर ख़रीदते वक़्त अच्छी तरह तसल्ली कर ली जाऐ।

मुनदर्जा बाला सतरों में चन्द पत्थरों का मुख़्तसरन तज़केरा किया जा ुका है। आइये देखें की आज से चौदह सौ साल पहले हादीऐ बरहक़ हज़रत ोहम्मद मुसतफ़ा अलैहिस्सलाम और उनके औसया ने पत्थरों के बारे में क्या रशाद फ़रमाया है मुलाहेज़ा हो आइन्दा सफ़्हा जिसमें अक़ीक़ का तज़केरा किया जा रहा है और बाक़ी जवाहेरात व पत्थरों का तज़केरा जिल्द दोम में पेश करेंगे।

# अक़ीक़

*अलअक़ीक़ यनफ़ी अलफ़क़र*

पैग़मबरे अकरम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया "अक़ीक़ पहनना फ़क़्र को ूर करता है"।

मौजूदह दौर की तहक़ीक़त ने इस इरशाद की ताईद कर दी है।

योरपीयन डाक्टर समिथ ने पत्थरों को तोड़ने और उन पर बीस बरस हक़ीक़ात करने के बाद एक किताब लिखी जिसका नाम दी परेशियस स्टोन The Precious Stone) है इसमें वह लिखते हैं कि जब किसी चटटान पर ेक हज़ार साल मुतवातिर सूरज और चांद चमकते रहते हैं तो इसके अन्दर



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

एक माद्दा पैदा होता है जो बमंज़ेलये नुतफ़े के होता है। ये माद्दा सूरज से रंग और चांद से चमक और सितारों से तासीर लेता है। अक़ीक़ जिस सितारे से तासीर हासिल करता है। वह (Jupitor) यानी मुशतरी सय्यारा है। इस सय्यारे की यह तासीर है कि इस की शोआऐं क़ल्बे इन्सानी के सेल्स यानी मसामात को खोलती है, जब इन्सान अक़ीक़ को ऐसी अंगूठी में पहनता है जिस के नीचे का हिस्सा खुला हुआ हो और ये पत्थर इसकी छोटी उंगली से मस हो तो मुशतरी की किरनें अक़ीक़ के जरीऐ जिस्मे इन्सानी में इन्जेकशन देती हैं, तो उसका असर क़ल्बे इन्सानी पर पड़ता है, जिससे इन्सान के दिल की सेल्स यानी मसामात खुल जाते हैं तो आक्सीजन गैस जो हयाते इन्सानी के लिऐ बहुत ज़रूरी है इन सेल्स यानी मसामात से भर जाती है, जिससे वह मसामात फ़रबा हो जाते हैं और इस आक्सीजन से क़ल्बे इन्सानी को फ़रहत होती है चेहरे पर सुरख़ी दौड़ने लगती है।

इस ख़ुशहाली की बिना पर इसका दिल ज़्यादा काम करना चाहेगा, जब काम ज़्यादा करेगा तो उजरत ज़्यादा मिलेगी। तो रिज़्क़ में वुसअत पैदा होगी और फ़क़्र दूर हो जाऐगा।

हज़रत नबी करीम अलैहिस्सलाम से किसी ने शिकायत की कि मेरा माल रास्ते में लुट गया, फ़रमाया कि तू अक़ीक़ की अंगूठी क्यों नहीं पहनता की वह हर बला से आदमी को बचाती है।

एक और हदीस में बसनदे मोत्तबर हज़रत से मनकूल है कि जो शख़्स अक़ीक़ की अंगूठी पहनेगा जब तक वह हाथ में रहेगी कोई ग़म इसको नहीं पहुँचेगा।

एक और हदीस में वारिद है कि एक हाकिम ने किसी मुजरिम की गिरफ़्तारी के लिऐ सिपाही भेजे आँ हज़रत अलैहिस्सलाम ने इसके अज़ीज़ो अक़ारिब को बुला कर फ़रमाया कि अक़ीक़ की अंगूठी उसके पास पहोंचा दो। चुनान्चे हुक्म की तामील की गई और वह साफ़ बरी हो गया।

एक और हदीस में फ़रमाया कि अक़ीक़ की अंगूठी पहनो कि ये



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

पत्थरों में पहला पत्थर है जिसने ख़ुदा की वहदानियत और अली तुम्हारी इमामत का इक़रार किया।

हज़रत रसूले ख़ुदा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि जो शख़्स अक़ीक़ की अंगूठी पहनेगा उस की हाजतें पूरी होंगीं।

एक और हदीस में मनकूल है कि हज़रत जिबराईल व हुक्मे रब्बुलआलामीन हज़रत रिसालत मआब अलैहिस्सलाम के पास आए और अर्ज़ किया कि परवरदिगारे आलम आपको दूरूदो सलाम फ़रमाता है और इरशाद फ़रमाता है कि अंगूठी अपने दाहिने हाथ में पहनो और इसका नगीना अक़ीक़ हो और अपने अमज़ाद भाई अली इब्ने अबी तालिब अलैहिस्सलाम से कह दो वह भी अंगूठी पहने दाहिने हाथ में और नगीना अक़ीक़ हो।

इरशादे हज़रत ख़तमुल मुरसलीन अलैहिस्सलाम है कि मेरे लिऐ बहिशत से हज़रत जिबराईल सुर्ख़ अक़ीक़ लाऐ थे। मुझे इसको पहनने के लिऐ कहा था और मेरी उम्मत को भी इस के पहनने के लिऐ इरशाद फ़रमाया था।

हज़रत अली इब्ने अबी तालिब अलैहिस्सलाम से मनकूल है कि उस शख़्स की मुजर्रद नमाज़ जिस शख़्स के हाथ में अक़ीक़ की अंगूठी हो उस शख़्स की जमाअत की नमाज़ से भी जिस के हाथ में अक़ीक़ के सिवा और रंग की अंगूठी हो चालीस दर्जे अफ़ज़ल है।

हज़रत अली इब्ने अबी तालिब अलैहिस्सलाम से ही मनकूल है कि अक़ीक़ की अंगूठी पहनना मुफ़ीद है।

हज़रत सइय्यदुस शोहादा इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम का इरशादे गिरामी है कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम कोहे तूर पर इबादत व मुनाजात कर रहे थे। दफ़अतन आप की नज़र ज़मीन पर पड़ी हक़ तआला ने उनके चेहरये मोबारक के नूर से अक़ीक़ को पैदा किया। फ़िर अल्लाह तआला ने फ़रमाया मुझे अपनी ज़ाते मुक़ददस की क़सम है कि मैं उस हाथ को आतिशे जहन्नम से महफ़ूज़ रखुंगा, जिसमें अक़ीक़ की अंगूठी होगी बशरते कि अली इब्ने अबी तालिब को दोस्त भी रखता हो।



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

इन्तेहाई सुर्ख़ अक़ीक़ सइय्यदुस शोहादा हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम से मनसूब है, यही सुर्ख़ रंग का अक़ीक़ कुबूलियते दोआ का सहारा है।

राबेह राज़ी से मनकूल है कि मैंने हज़रत इमाम ज़ैनुलआबेदीन अलैहिस्सलाम को अक़ीक़ की अंगूठी पहने देखा, मैंने सवाल किया की या मौला ये कौन सा नगीना है? आप ने फ़रमाया कि यह अक़ीक़े रूमी है।

एक और हदीस में मनकूल है कि एक शख़्स को हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र अलैहिस्सलाम के सामने ले गऐ जिसको बहोत से कोड़े लगे थे, हज़रत ने इरशाद फ़रमाया कि इस की अक़ीक़ की अंगूठी कहां है? अगर वह इसके पास होती तो कोड़े न खाता।

हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से मनकूल है कि जितने हाथ दोआ के लिऐ आसमान की तरफ़ बलन्द होते हैं ख़ुदा को उस हाथ से ज़्यादा कोई दोस्त नहीं है जिस में अक़ीक़ की अंगूठी हो।

हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से मनकूल है कि अक़ीक़ की अंगूठी पहनना मोबारक है। जो शख़्स अक़ीक़ की अंगूठी पहनेगा उम्मीद है कि उसका अंजाम बख़ैर हो।

सुलैमान अलहमश से रवायत है कि मैं एक रोज़ मनसूर अब्बासी के मकान में बग़रज़ ख़िदतम हाज़िर था। मैंने देखा कि एक शख़्स को कोड़े लगे थे, सिपाही उसको लाऐ। हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि ऐ सुलैमान देखना कि इसकी अंगूठी में कौन सा नगीना है? मैंने अर्ज़ किया ऐ इब्ने रसूल अल्लाह अक़ीक़ तो नहीं है। आपने फ़रमाया कि ऐ सुलैमान अगर अक़ीक़ की अंगूठी इस शख़्स के हाथ मे होती तो ये शख़्स हरगिज़ कोड़े न खाता सुलैमान कहता है कि मैंने हज़रत से अक़ीक़ के मज़ीद फ़वाएद दरयाफ़्त किऐ। आँ हज़रत अलैहिस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया कि अक़ीक़ की अंगूठी हाथ कटने से बचाती है और क़त्ल होने से अमान देती है और कुबूलियते दोआ के लिऐ बेहतरीन नगीना है। फ़रमाया मुझे ताज्जुब है उस हाथ से जिस हाथ में अक़ीक़ की अंगूठी हो और वह सीमव ज़र से



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

ख़ाली हो।

हज़रत इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम का इरशाद है कि मोमिन को पांच चीज़ें पास रखना चाहिऐ 1-अंगुशतरी, 2-मिसवाक, 3-तसबीह, 4-मिसवाक, 5-कंघी अक़ीक़ की तसबीह फ़िराने और ज़िक्रे ख़ुदा करने से बाऐवज़ हर दाने के चालीस हसना इसके नामाए आमाल में अज़जानिब परवरदिगारे आलम लिखे जाते हैं।

हज़रत इमामे रज़ा अलैहिस्सलाम से मनकूल है कि अक़ीक़ की अंगूठी पहनने वाले की ज़िन्दगी ख़ुशो ख़ुर्रम बसर होगी ख़ुदा तआला इसे हर आफ़त से महफ़ूज़ रकखेगा। और निगाहबानी करेगा, हज़रत इमामे रज़ा अलैहिस्सलाम ने अक़ीक़ के बारे में जो हिदायात और तरीक़ाए दोआ तजवीज़ किया है वह तिब्बे इमामे रज़ा अलैहिस्सलाम में दर्ज है। मुलाहेज़ा हो तिब्बे इमामे रज़ा अलैहिस्सलाम।

हज़रत इमाम तक़ी अलैहिस्सलाम से यह मनकूल है कि सफ़र में ज़र्द अक़ीक़ की अंगूठी मुशकेलात से नजात दिलाती है।

हज़रत अबू ताहिर का क़ौल है कि हज़रत इमामे हसन असकरी अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि अक़ीक़ को तमाम दूसरे पत्थरों पर फ़ज़ीलत हासिल है।

दूसरी रवायत में मनकूल है कि दो रकअत नमाज़ अक़ीक़ की अंगूठी पहन कर पढ़ना हज़ार रकतों से अफ़ज़ल है जो बेअक़ीक़ के पढ़ी जाऐं।

एक रवायत में है कि सब से पहले अक़ीक़ की अंगूठी हज़रत आदम के हाथ में थी, ये अक़ीक़ सुर्ख़ था।

अल्लामा बहाउददीन मोहम्मद अली रजी० से रवायत है कि नगीनाए अक़ीक़ सहरो जादू से बचाता है।

आग़ा जाफ़र मशहदी ने रेसाला अलनसूस में तहरीर किया है कि सुर्ख़ रंग का अक़ीक़ हर चीज़ से बेहतर है। इस के बाद ज़र्द रंग का अक़ीक़ का शुमार है। जो नक़ूश के कन्दा करने के लिऐ मौज़ूं है।



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

अक़ीक़ की फ़ज़ीलत तो बहोत है हमने मुख़्तसरन ब्यान करदी अब मोलाहेज़ा फ़रमाइये अक़ीक़ के तिब्बी ख़्वास जदीद तहक़ीक़ात की रौशनी में जिसको "क़ीमती पत्थर और आप" मुसन्नीफ़ा बेगम ज़ुबैदा फ़रीदुल हक़ से बैनहु पेश कर रहे हैं।

तिब्बी ख़्वास- मुफ़र्रहे क़ल्ब और मुक़व्वी बसर है। इसको बतौरे लाकेट गले में पहनने से ऐख़तेलाजे क़ल्ब दूर होता है और दफ़ाए ख़फ़क़ान है। इसका मंजन मर्ज़ पायरीया के लिऐ अकसीर का हुक्म रखता है और मसूठों से ख़ून बहना बन्द हो जाता है और दांत मज़बूत हो जाते हैं।

मकड़ी बिच्छु और दीगर ज़हरीले कीड़ों के काटे हुऐ ज़ख़्मों पर अक़ीक़ का सफ़ूफ़ मलने से ज़हर ज़ाएल हो जाता है और ज़ख़्म भर जाते हैं।

इसका कुश्ता अकसीरे आज़म है और मुन्दरजा ज़ैल बीमारीयों का हतमी इलाज है जिसका बदल किसी और इलाज में नहीं पाया जाता।

पेशाब के रास्ते ग़ेज़ा के ग़ैर हज़्म शुदा अजज़ा यानी फ़ासफ़ेट का निकलना मोहलिक बीमारी है इसका सात दिन में मोकम्मल इलाज हो जाता है। इसका इस्तेमाल किसी क़िस्म के मुज़िर असरात का हामिल नहीं है और कोई परहेज़ नहीं है।

ये इन्जेमाद ख़ून {BLOOD CLOTING} के लिऐ बे हद मुफ़ीद है, ये वही बीमारी है जिससे जान के लाले पड़ जाते हैं और ये एक मोहलिक बीमारी है।

कुश्तए अक़ीक़ को शरबते सेब के साथ इस्तेमाल किया जाऐ तो किसी वजह से भी ख़ून के बहने को फ़ौरी बन्द कर देता है जिन अमराज़ में यह इस्तेमाल किया जाता है उनकी तफ़सील मुख़्तसरन दर्ज है।

1- {HAEHATEMESIS} की मोहलिक बीमारी जिस में क़ै के साथ ख़ून आता है जो मेदे या गैस के अलसर की वजह से हो। मेदे या जिगर के टयुमर के लिऐ भी मुफ़ीद है।

2- {HAEMATURIA} की बीमारी जिस में मुंह से ख़ून आता है यानी सांस की नली, मुंह, गला या नाक की नली के ज़ख़्म के वजह से ख़ून आता



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

है इस का फ़ौरी इस्तेमाल फ़ौरी और मुवस्सर इलाज है।

3- {HAEMPHILIA} की बीमारी जिस में ख़ून की शरयानें फ़ट जाने या मजरूह हो जाने की वजह से ख़ून जारी होता है इसके इस्तेमाल से आराम मिलता है।

4- {HEAHORRHAGE} की बीमारी यानी फ़ेफ़ड़ों से ख़ून आता हो इसका का कुश्तह एक मुफ़ीद इलाज है।

5- {HAEMATURING} पेशाब में ख़ून आना जिसकी कोई भी वजह हो अक़ीक़ का कुश्ता इस का बेहतरीन इलाज है।

6- {HAEMATOTHDRAX} यानी हैज़ का ख़ून अगर कसरत से आऐ और बन्द न हो तो इसका इस्तेमाल एक हत्मी इलाज है। अलग़रज़ तमाम ख़ून बहने की बीमारीयों के लिऐ ये अकसीर का हुक्म रखता है। इसके खाने से {BLOOD CLOTING} नहीं होता जिसका बदल किसी दूसरे ज़रीऐ इलाज में नहीं है।

**सहरी ख़्वास-** ग़मो गुस्से को दूर करता है इसकी अंगूठी इस्मत और बुज़ूर्गी की तरफ़ राग़िब करती है और इसी वजह से सुफ़ियाऐ केराम असली माला पहनते थे। इसकी अंगूठी मिज़ाज का चिड़चिड़ा पन दूर करती है। दुनयावी उमूर के लिऐ इसका नगीना मुवाविन साबित होगा। इससे काम करने की सलाहियत ज़्यादा होती है। बेऐतेमादी, ग़ैर मुसतक़िल मेज़ाजी, और हौसले की पस्ती दूर होती है। दिल का कीना और नेफ़ाक़ दूर होता है। मक्रो फ़रेब और शयतानी तसव्वुरात दूर होते हैं। दुशमन पर रोब और दबदबा क़ायम होता है। कहते हैं कि जो शख़्स काफ़ूर को अक़ीक़ के साथ घिस कर माथे पर लगा कर हाकिम के सामने जाऐ तो हाकिम मेहरबान होगा। और मुरादें बर आयेंगीं। अलमुख़तसर यह पत्थर इस मोआमले में दूसरे पत्थरों पर फ़ौक़ीयत रखता है इसके सहरी ख़्वास और बरकात की बाबत मुख़तलिफ़ मज़हबी किताबों में ज़िक्र आता है।



Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

# किताबियात

इस किताब को मुरत्तब करने में मुंदर्जाज़ैल कुतुब से मदद ली

| | | |
|---|---|---|
| 1- | ~~इत्मामुल अलमुलकीन~~ | अल्लामा मजलिसी अलैहिररहमा |
| 2- | मकारिम अलऐखलाख़ | अल्लामा तबरी अलैहिररहमा |
| 3- | तिब्बे सादिक़ अ० | आक़ाइ नसीरूददीन अमीर सादक़ी तेहरानी |
| 4- | तिब्बे इमामे रज़ा अ० | उस्ताद काज़मी ख़लख़ाली (उस्ताद ज़बान अरबी) |
| 5- | तिब्बे नबी अ० | आक़ाइ मोहम्मद वासिफ़-ख़म |
| 6- | अलतिब्बे नबवी अ० | शमसुददीन बिन अबीबकर |
| 7- | सही बोख़ारी | मोहम्मद इस्माईल बोख़ारी रजी० |
| 8- | सेन्न इब्ने माजा | मोहम्मद इब्ने माजा रजी० |
| 9- | सन्न नेसाई | अहमद नेसाई रजी० |
| 10- | सन्न इब्ने दाऊद | अबी दाऊद रजी० |
| 11- | तिब्बे सादिक़ | तर्जुमा, मौलाना सय्यद हुसैन अख़तर अमरोहवी |
| 12- | तहज़ीबुल इस्लाम | हकीम मौलाना मक़बूल हुसैन आल अल्लाह तआला |
| 13- | मग़रीबी तमददुन की एक झलक | सय्यद मुजतबा लारी (ईरान) तर्जुमा मौलाना रौशन अली मेरठ |
| 14- | करीशमाए क़ुदरत | हुमायूं मिर्ज़ा लखनवी |
| 15- | अकावेरीने इस्लाम का साइंसी शऊर | मौलाना मुशताक़ हुसैन शाहिदी |
| 16- | ख़्वास अनार व अंगूर | उस्ताद अलहोक्मा हकीम मोहम्मद अब्दुल्लाह |
| 17- | ख़्वास अलअदवीया | मुख़तलिफ़ अतिब्बाये केराम |
| 18- | फलों से इलाज | डाक्टर इक़बाल कारदार |
| 19- | क़ुदरत के डाक्टर फल | डाक्टर बलीग़उददीन जावेद |
| 20- | शहद बेहतरीन दवा व ग़ेज़ा | सलीम अहमद सिददीक़ी |
| 21- | शहद ज़िन्दगी है | हकीम वली अल रहमान |
| 22- | तिब्बे नबवी | हाफ़िज़ नज़र मोहम्मद |
| 23- | क़ीमती पत्थर और आप | बेगम ज़ुबैदा फ़रीदुल हक़ |
| 24- | पत्थरों के सहरी ख़्वास | काश अलबरनी |
| 25- | ख़्वास बाज़ सबज़ी | तिब्बे ईरान |
| 26- | अलमुनजद | तिब्बे कुवैत |
| 27- | फ़रहंग अमीद फ़ारसी | तिब्बे ईरान |
| 28- | मफ़रूदाते अदवीया व ख़्वासे अदवीया वग़ैरह | |



Presented by: https://jafrilibrary.com